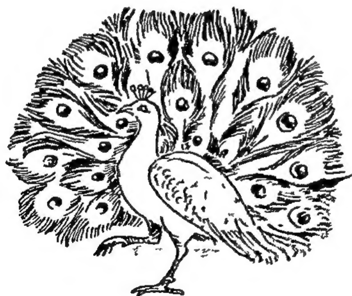
पक्षियो का ससार

इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन
कें-71 कृष्णनगर, दिल्ली-110051

पक्षियों का संसार

प्रो० सीताराम सिह 'पकज'



प्रकाशक
इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन
के-71, कृष्णनगर, दिल्ली 110051

संस्करण 1992

Rs 5000

आवरण जोशी

मुद्रक कम्पीटेन्ट प्रिन्टर्स
1/1081 पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली 110032

भूमिका

अनादि काल से असख्य प्रकार के पशु-पक्षी मानव जीवन से अभिन्न रूप से जुडे रहे हैं। सच पूछिए तो पशु-पक्षियो के बिना मानव जीवन बिल्कुल नीरस और आकर्षणहीन होता। दिन-रात आकाश मे उन्मुक्त उडने वाले रग-बिरगे पक्षियो से भला कौन अपरिचित होगा ? छोटे-छोटे ,चचल और रग-बिरंगे पक्षियो का फुदकना, दौडना और चहचहाना सहज ही हमारा मन मोह लेता है। इसमे कोई दो मत नही कि जीव-जन्तुओ की विशाल दुनिया मे पक्षियो का अपना विशिष्ट स्थान है। पक्षियो की निराली दुनिया मे जहाँ एक ओर सबसे छोटी चिडिया 'हमिंग बर्ड' (Humming Bird) है, तो दूसरी ओर सबसे बडा और तेज दौडने वाला पक्षी शुतुरमुर्ग (Ostrich) भी है। सुदर गाने वाली बुलबुल, पपीहा, कोयल आदि हैं, तो आकर्षक रगो वाले मयूर, हस, पीलक आदि। निस्सदेह मयूर की अनुपम सुदरता के कारण ही उसे भारत का राष्ट्रीय पक्षी घोषित किया गया है। पक्षियों में कुशल कारीगर पक्षी बया है, तो कौए जैसा चतुर पक्षी भी।

मानव जीवन तक ही पक्षियो का ससार सीमित नही है। अपितु साहित्य मे भी पक्षियो की खूब चर्चा हुई है। सच तो यह है कि अनत काल से विविध पक्षीगण साहित्यकारो को प्रेरित और अनुप्राणित करते रहे हैं। गोस्वामी तुलसीदास, सूरदास, महाकवि जायसी तथा

अन्य प्रसिद्ध कवियो की रचनाओ मे प्रकृति चित्रण के साथ-साथ पक्षियो का सुदर वर्णन मिलता है। जायसी की अमर कृति 'पदमावत' मे तो पक्षियो का अद्भुत वणन मौजूद है। तुलसीदास ने काकभुशुण्डि के मुख से 'रामचरितमानस' कहलाकर कौए को अमर बना दिया है। और तो और आदिकवि वाल्मीकि मैथुनरत क्रौंच जोडे के वध का दृश्य देखकर मर्माहत हो गये और अनायास ही उनके मुख से काव्य सरिता फूट पडी—

"मा निषाद प्रतिष्ठा त्व अगम शाश्वती समा
यत्क्रौंच मिथुनादेक अवधि काममोहितम्।"

अर्थात हे निषाद! आने वाले किसी भी युग मे तुम्हे प्रतिष्ठा प्राप्त न हो, क्योकि तुमने काम मोहित क्रौंच-युगल मे से एक का वध कर दिया है।

विविध पक्षीगण न केवल हमारा स्वस्थ मनोरजन करते हैं, वरन् उनका आर्थिक महत्व भी है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि अधिकाश पक्षी किसानो के सच्चे मित्र हैं। क्योकि वे कीटभक्षी हैं और दिन भर कीट-पतगो की तलाश मे विचरते रहते हैं। इस प्रकार वे फसलो को नुकसान पहुँचाने वाले कीडे मकोडो को खाकर हमारी फसलो की सुरक्षा करते है। जमीन पर कीटो की सख्या इतनी अधिक है कि अगर कीटभक्षी पक्षी न हो, तो खेतो मे रोपे गये पौधो का एक पत्ता भी सही-सलामत न बचे। प्राय नित्य ही भिन्न भिन्न किस्म के कीटभक्षी-पक्षी हजारो टन कीडो को उदरस्थ कर किसानो की सच्ची सेवा करते हैं। इस प्रकार पर्यावरण का सन्तुलन बनाये रखने मे भी पक्षीगण हमारी बहुत सहायता करते है।

प्राचीन काल मे पक्षियो का शिकार करना राजा-महाराजाओ का प्रिय शौक था। क्योकि पक्षियो का स्वादिष्ट मास उन्हे बहुत प्रिय था। आज की परिस्थितियाँ पहले से भिन्न हैं। पहले की तरह पक्षी पालने का शौक भी अब नही रहा। आज के व्यस्त जीवन मे किसे फुरसत है जो पक्षी पाले और उन्हे रोज रोज दाना-पानी दे, उनकी देख भाल करे। खैर यह कोई चिन्ता की बात नही है। गम्भीर चिन्ता का

विषय तो यह है कि पक्षियो की सख्या निरतर घटती जा रही है। अनेक दुलभ पक्षी-प्रजातियाँ तो लुप्तप्राय हैं। इसका प्रमुख कारण है जनसख्या की वृद्धि और वन क्षेत्रो का निरतर घटते जाना। सच पूछिए, तो आज मनुष्य की जनसख्या दिन दूनी, रात चौगुनी बढती जा रही है जबकि जगल निरतर कटते जा रहे हैं। इसका सीधा प्रभाव पर्यावरण और वन्य प्राणियो पर पडता है जिनमे वन्य-पक्षी भी शामिल हैं। क्या यह गम्भीर चिन्ता का विषय नही है कि सत्रहवी शताब्दी के बाद समुद्री द्वीपो के किनारे रहने वाले पक्षियों की 90% प्रजातियाँ लुप्त हो चुकी है। यही नही घरेलू और जगली पक्षियो की प्रजातियाँ भी निरतर कम होती जा रही है। गरज यह कि वतमान पक्षी प्रजातियो के लुप्त होने का भी खतरा बढता जा रहा है। विश्व व य जीवन कोष द्वारा प्रकाशित एक ताजा रिपोट के अनुसार दक्षिणी तथा मध्य प्रशात महासागर के अनेक द्वीपो मे रहने वाले बहुत से पक्षियो की प्रजातियाँ लुप्त हो रही है।

निरतर लुप्त हो रही पक्षी प्रजातियो की सुरक्षा न केवल मानव के मनोरजन और पर्यावरण सतुलन, वरन् मानव के अस्तित्व के लिए भी आवश्यक है। इसके लिए यह जरूरी है कि जगलो की अवैध कटाई पर रोक लगाई जाए, पक्षियो का शिकार प्रतिबधित हो और पक्षी अभयारण्यो (Bird Sanctuarie) की सख्या बढाई जाए। अन्य जीव-जन्तुओ की तरह पक्षी भी मानवीय प्रेम और करुणा के अधिकारी है। उन्हे भी हमारे साथ जीने और रहने का अधिकार है। आज समूचे विश्व मे पक्षियो के सरक्षण (Conservation) की आवश्यकता महसूस की जा रही है।

प्रस्तुत पुस्तक मे पक्षियो के जीवन से सबधित सभी महत्वपूर्ण पहलुओ का वज्ञानिक विश्लेषण किया गया है। मसलन पक्षी गायन, पक्षी प्रवास, पक्षियो के प्रणय व्यवहार आदि। इसके साथ ही कुछ प्रतिनिधि भारतीय पक्षियो का भी वणन किया गया है। मेरी व्यक्तिगत धारणा है कि पक्षी सरक्षण के लिए सरकारी प्रयास ही

पर्याप्त नही हैं। इसके लिए व्यक्तिगत और सामाजिक स्तरो पर भी पक्षियो मे दिलचस्पी लेने और उन्हे स्नेह देने की आवश्यकता है। तभी लुप्त हो रही पक्षी प्रजातियो को बचाया जा सकता है।

आशा है, पक्षियो पर लिखी मेरी यह पुस्तक पाठको को पसद आयेगी। गुरुजनो, अपने अग्रज श्री हरेराम सिह, धर्मपत्नी श्रीमती मुन्नी सिह, मित्रो एव सहयोगियो का आभारी हूँ, जिनके स्नेह और सहयोग से ही इस पुस्तक को लिखना सभव हो सका है।

अर्चनालय, सरायरजन
समस्तीपुर (बिहार)

—सीताराम सिह 'पकज'

विषय-सूची

पक्षियों के पूर्वज

अन्य जीव-जन्तुओ की तरह पक्षियो का भी अपना इतिहास है। इसमे अब कोई मतभेद नही रह गया है कि पक्षियो के पूर्वज सरिसृप (Reptiles) थे। पक्षी विशेषज्ञो (Ornithologists) के अनुसार पक्षियो का उदय जुरैसिक काल (Jurassic Period) मे आर्निथिस्कियन डायनोसरो से हुआ और इनमे सरिसृप से मिलते-जुलते बहुत से लक्षण पाये जाते हैं। प्रारभ मे इन दोनो वर्गों को एक साथ सौराप्सिडा (Sauropsida) मे रखा गया। पक्षियो को अपना आधुनिक रूप क्रीटेशियस युग मे ही प्राप्त हुआ। परिणामस्वरूप इनकी शारीरिक सरचना मे बहुत परिवर्तन आया। पक्षियो मे वायवीय जीवन (Aerial mode of Life) के लिए अनेक रूपातरण (Metamorphosis) हुए। और आज के पक्षीगण सरिसृप वर्ग के जीवो से बहुत भिन्न हैं। आज ससार मे जीवित पक्षियो की तकरीबन 8600 प्रजातियाँ (Species) हैं।

सुनने मे कुछ अजीब सा लगता है कि हवा मे उडने वाले पक्षियो के पूर्वज (Ancestors), पृथ्वी पर रेंगकर चलने वाले सरिसृप थे। किंतु वैज्ञानिक अनुसधानो (Scientific Researches) के आधार पर यह तथ्य प्रमाणित हो चुका है। सरिसृप से पक्षी बनने और हवा मे उडने मे लाखो वर्ष का समय लगा है। आज भी यदि गौर से देखें, तो सरिसृपो और पक्षियो मे कई समानताएँ देखने को मिलेंगी। सन् 1861 मे आर्कियोप्टेरिक्स लिथोग्राफिका (Archaeopteryx lithographica) नामक पक्षी के दो पूर्ण परिरक्षित नमूने (Fossil) बावेरिया में, ऊपरी जुरैसिक के सूक्ष्म-कणीय लिथोग्राफिक चूना-पत्थर में पाए गए थे। हम इन्हें पक्षियो का पूर्वज (Ancestor of Birds) कह सकते हैं। यदि इन नमूनो मे पिच्छो के छाप चिह्न न होते, तो इन्हें कोई द्विपादसचलनी

डायप्सिड सरिसृप समझा जाता। किंतु यह एक विलुप्त पक्षी है जो एक सक्रामी अवस्था है। सच तो यह है कि आर्कियोप्टरिक्स मे सरिसृपो और पक्षियो दोनो के गुण मौजूद हैं।

अत आर्कियोप्टरिक्स नामक जीव को पक्षियो का पूवज कहना अनुचित न होगा। इसे पक्षियो और पूर्वजो के बीच की अवस्था का प्राणी भी कह सकते हैं, जहाँ से ये दोनो एक दूसरे से अलग होते हैं आधुनिक शोध कार्यों से भी इस बात की पुष्टि होती है कि सरिसृपो से ही पक्षियो का विकास हुआ है। गरज यह कि जिस प्रकार बदर मनुष्य के पूवज है, उसी प्रकार रेंगकर चलने वाले जीव पक्षियो के।

विकास-क्रम

विकास का यह क्रम हजारो वर्षों से जारी है। इस विकास क्रम (Evolution) मे अनेक पक्षियो का विकास और विनाश भी हुआ है आधुनिक काल मे पक्षियो की उतनी प्रजातियाँ नही पायी जाती है, जितनी पहले पायी जाती थी। पक्षियो के विनाश के अनेक कारण थे —मसलन भोजन का अभाव, उडने की क्षमता का अभाव इत्यादि। उदाहरण के लिए डोडो पक्षी (Do Do Didus ineptus) को ही लें, जिनका पृथ्वी से अब नामोनिशान तक मिट चुका है। यह कबूतर जाति का खूबसूरत पक्षी जो हस से भी बडा होता था, उडने मे असमर्थ होने के कारण शिकारियो की गोली का निशाना बनता गया। अब यह प्रजाति बिल्कुल लुप्त हो चुकी है।

पक्षी-जगत मे भाँति-भाँति के पक्षी हैं। इनमे विकास भी इनकी आवश्यकताओ के अनुकूल ही हुआ है। मसलन जल मे रहने वाले पक्षियो के पाँव मे झिल्लियो (Webs) का विकास हुआ है जो उनको तैरने मे मदद करती है। इसी प्रकार कीटभक्षी, मासभक्षी और दाना चुगने वाले पक्षियो की चोच मे भी भिन्नता पायी जाती है। दूसरे शब्दो मे पक्षियो की चोच की बनावट उनके आहार तथा खाने की रीति को प्रदर्शित करती है। पक्षी वज्ञानिक, पक्षी की चोच देखकर ही उसके आहार के सबध में बता सकते हैं। इसी प्रकार उनके पैर की बनावट भी उनके निवासस्थल (Habitat) के अनुकूल होती है।

विकास क्रम में यह भी देखने को मिलता है कि पक्षियो मे जिन अगो का ज्यादा प्रयोग हुआ है, उनका ज्यादा विकास हुआ है। जो

पक्षियो मे वायवीय अनुकूलन

सरचना

पक्षियो की शारीरिक सरचना अय सभी रीढधारी प्राणियो (Vertebrate Animals) से भिन्न होती है। पक्षियो का शरीर वायवीय जीवन के लिए पूर्णत अनुकूलित होता है। प्राय सभी पक्षियो का शरीर तर्कुरूपी (Spindle shaped) होता है। परिणामस्वरूप उडने के समय वायु का प्रतिरोध कम होता है। दूसरे शब्दो मे पक्ष्यियो का धारा रेखित (Stream line) शरीर वायवीय जीवन (Aerial mode of Life) के लिए बहुत उपयोगी होता है।

अधिकाश पक्षियो का शरीर बहुत हल्का होता है। उनका शरीर त्वचा के विशिष्ट उत्पाद (Derivative)—परो (Feathers) द्वारा ढँका होता है। परो का आवरण शरीर को हल्का तो बनाता ही है वाता-वरण (Environment) मे ताप परिवर्तन की हानि से भी बचाता है। कहने का तात्पय यह है कि परो का कुचालक आवरण शरीर को पूर्णत तापरोधी बना देता है और शरीर की गर्मी को बाहर नही निकलने देता। यही कारण है कि पक्षी बहुत ऊँचाई पर उडने तथा तेज सर्दी को भी बर्दाश्त करने मे सक्षम होता है। पक्षियो मे उडडयन अग (Organs of Flight) सुविकसित होते है। इनके अग्रपाद (Fore limbs) पखो मे रूपातरित (Modified) होते हैं पखो के पर वायु को चीरकर आगे उडने मे मदद करते हैं। पखो का सचालन उडडयन पेशियो (Flight Muscles) द्वारा होता है और ये पेशिया पूण विकसित होती है।

ककाल-तत्र

पक्षियो के अत -ककाल (Endo skeleton) भी अय रीढधारी

जतुओ के अत -ककाल से बहुत भिन्न होते हैं। सच तो यह है कि पक्षियो का अत -ककाल (Endo skeleton) वातिल (Pneumatic) किंतु काफी मजबूत होता है। अनेक हड्डियाँ 'T' के आकार की होती हैं। पक्षियो मे हड्डियो की सख्या मे ह्रास (Reduction) की प्रवृत्ति नजर आती है। उदाहरणत कपाल की हड्डियाँ कागज जैसी पतली होती हैं। पक्षियो के दाँत नही होते, उसकी जगह हल्की चोच होती है। अनेक अस्थियाँ एक साथ सयुक्त भी हो जाती हैं। पुच्छ कशेरुको (Caudal Vertebrae) का छोटा होना और पाइगोस्टाइल (Pygostyle) का बनना वायु मे स्थिरता प्रदान करने मे सहायता करता है। पक्षियो की छोटी दुम (Short tail) मे लम्बे पुच्छ-परो (Tail-feathers) का एक गुच्छा होता है। जो उडने के दौरान पखे की तरह फैलकर पतवार का कार्य करता है। ये उडने के क्रम मे शारीरिक सतुलन भी बनाये रखते हैं। पक्षियो के अग्रपाद तो उडने के लिए अनुकूलित होते हैं, किंतु पश्चपाद (Hind-limbs) द्विपाद सचलन (Bipedal Locomotion) के लिए रूपातरित होते हैं। इस प्रकार कोई भी पक्षी हवा मे उडने के अतिरिक्त भूमि पर भी भली-भाति चल फिर सकता है। अधिकाश पक्षियो मे पक्षिसाद-क्रियाविधि (Perching mechanism) भी देखने को मिलती है। पक्षिसाद का अर्थ यह है कि जब कोई पक्षी पेड की डाली पर बैठता है, तो उसके पैरो की उगलियाँ स्वत ही डाल को जकडकर कस लेती है। इस प्रकार बैठा पक्षी सो भी जाए, तो पेड से गिरता नही है। वायवीय जीवन मे इसका बहुत महत्व है।

उपापचय की दर

पक्षियो की लम्बी और गतिशील गर्दन तथा लम्बी, नुकीली चोच (Pointed Beaks) भी उनके वायवीय जीवन के लिए उपयोगी होती है। जाहिर है कि हवा मे उडने की आदत के कारण पक्षियो के उपापचय की दर (Basic Metabolic Rate=BMR) अन्य जीव जतुओ से बहुत ज्यादा होती है। उन्हे अधिक शक्ति और तदनुरूप अधिक भोजन की आवश्यकता होती है। इनकी पाचन शक्ति भी तीव्र होती है। इनके शरीर मे अनपचा अवशिष्ट शीघ्र ही शरीर से बाहर निकाल दिया जाता है। अत पक्षियो का मलाशय छोटा होता है। इनके फेफडे भी ज्यादा विकसित होते हैं। फेफडो मे विशिष्ट रचनाएँ पायी जाती

हैं, जिसे वायकोष (Air Sacs) कहते हैं। इसके कारण पक्षियो को अधिक ऑक्सीजन मिलती है जो उनके लिए आवश्यक है। पक्षियो का परि-सचरण तत्र (Circulatory System) भी पूर्ण विकसित होता है। पक्षियो का हृदय बडा, शक्तिशाली तथा कारगर होता है। पक्षियो की लाल-रक्त कणिकाओ (RBC) मे हीमोग्लोबिन (Heamoglobin) की मात्रा अधिक होती है। अत रक्त तेजी से ऑक्सीजन ग्रहण कर सकता है। पक्षी उष्ण रक्तीय प्राणी (Warm blooded Animal) होते हैं। इनके शरीर का तापक्रम अन्य वर्ग के जतुओ से ऊँचा रहता है (40 —47 C) यही कारण है कि पक्षीगण अधिक ऊँचाई पर भी आसानी से उड सकते हैं। सर्दी के मौसम मे भी पक्षी बखूबी पख फैलाकर उडते हैं। पक्षियो का मस्तिष्क तथा सवेदी अग (Brain and Sensory Organs) सुविकसित होते हैं। मादा पक्षियो मे केवल एक ओर ही अडाशय (Single Ovary) होता है। इससे भार मे स्पष्ट कमी आ जाती है। मतलब यह है कि प्रकृति ने वह सारी व्यवस्था की है, जिससे पक्षियो का शारीरिक वजन कम हो जाता हो और वे कुशलतापूर्वक हवा मे उड सकें। यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि पक्षियो के हरेक अग मे वायवीय जीवन के लिए अनुकूलन (Adaptation) मौजूद है। इसी अनुकूलन के कारण पक्षी हवा के मालिक (Masters of the Air) कहलाते हैं।

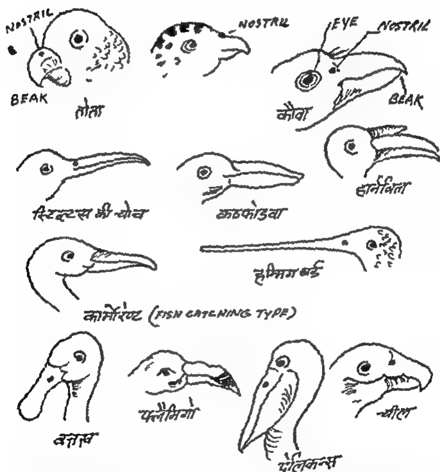
पक्षियो की चोच

पक्षियों के आहार और उनकी चोच मे गहरा सबध है। दूसरे शब्दो मे किसी खास पक्षी की चोच उसके भोजन के अनुरूप ही होती है। अर्थात् फल खाने वाले पक्षियो की चोच (Beak) दाना चुगने या मास खाने वाले पक्षियो की चोच से भिन्न होती है। यह कहना अनुपयुक्त न होगा कि आहार के अनुरूप किसी पक्षी की चोच होना उस पक्षी के जीवन अस्तित्व के लिए अत्यत आवश्यक है। शाकाहारी पक्षी मास मछली नही खा सकते। इसी प्रकार मासाहारी पक्षी फल फूलो पर जीवित नही रह सकते। हाँ, सयुक्तभोजी पक्षी दोनो प्रकार के आहार ग्रहण कर सकते हैं। अधिकाश पक्षियो की चोच नुकीली और तेज होती है। जैसे कौवे की चोच। किंतु बहुत से ऐसे पक्षी हैं जिनकी चोच चौडी, तिकोनी, पतली या टेढी होती है।

तोता (Parrot) मे फल कुतरने वाली चोच (Fruit eating type of Beak) देखने को मिलती है। गौर से देखें, तो यह चोच बहुत मुडी और तीक्ष्ण दिखती है। फल कुतरने मे यह मदद करती है। चोच का ऊपरी जवडा (Jaw) निचले की तुलना में बडा होता है। तोते मे ऐसी ही चोच पायी जाती है। इसके विपरीत कबूतर, गौरैया, फिन्च (Finches) मे अलग किस्म की चोच पायी जाती है। इनकी चोच छोटी, चौडी किंतु मजबूत होती है। चोच का सचालन शक्तिशाली मासपेशियो (Powerful Muscles) द्वारा होता है। ऐसी चोच अनाज के दानो को तोडने मे सक्षम होती है। चोच के ऊपरी और निचले जबडे (Upper and Lower Jaws) समान रूप से विकसित होते हैं।

कीट पक्षी (Insectivorous) पक्षियो की चोच छोटी, चौडी और पतली होती है। ऐसी चोच कीडे-मकोडो को पकडने के अनुरूप होती

है। ऐसे पक्षी उडते समय भी कीडो का शिकार करने मे सक्षम होते हैं। इस प्रकार की चोच स्वेलाज (Sw illows), स्विफ्टस तथा अन्य पक्षिया मे पायी जाती है। हुदहुद और कठफोडवा (Woodpecker) की चाच अन्य पक्षियों से बहुत भिन्न होती है। इनकी चाच लम्बी, नुकीली और मजबूत होती है। कठफोडवा वृक्षो की छाल काटकर कीटो एव उनके



लार्वा (Larva) को तलाशता रहता है। यह पक्षी अपनी लम्बी तेज चोच द्वारा ही वृक्ष के तने मे छिद्र बनाकर उसी मे निवास करता है। कठफोडवा और हुदहुद की चोच छेनी या रुखानी प्रकार की चोंच (Wood chiselling type of Beak) के उदाहरण हैं।

कौवा और हार्नबिल (Hornbill) मे काटने एव कुतरने वाली चोच (Cutting and Biting type of Beak) पायी जाती है। ऐसी चोच लम्बी, पतली एव सुदृढ होती है। यह आधार पर चौडी तथा सिरे पर पतली और नुकीली होती है। इसके किनारे तेज, मजबूत एव काटने के अनुरूप होते हैं। यदि देखा जाए तो ऐसी चोच वहुउद्देशीय (Multipurpose) होती है। क्योकि यह फलो को कुतरने के लिए ही नही, वरन कीटो को पकडने के अनुकूल भी होती है। मिट्टी और कीचड से कीडे या अन्य छोटे-छोटे जीवो को पकडने वाले पक्षियो की चोच लम्बी, पतली, नुकीली और मुडी हुई होती है। अक्सर ऐसी चोच चपटी एव चौडी होती है। इनकी चोच मे मौजूद सवेदी सरचना (Sensory Structure) मिट्टी मे से भोजन को पहचानने मे सहायता करती है। कीचड एषणी किस्म की चोच (Mud probing type of Beak) स्नाइप, सैंडपाइपर (Sandpiper), लेपविग (Lapwig) आदि पक्षियो मे पायी जाती है।

मछली पकडने वाली चिडिया जैसे सारस (Stroks), बगुला (Herons), किलकिला (Kingfisher), कॉर्मोरेण्ट आदि की चोच लम्बी, मजबूत और नुकीली होती है। ऐसी चोच मछली पकडने के अनुकूल होती है। अक्सर ऐसी चोच के किनारो पर नुकीले प्रवद्ध (Outgrowths) होते हैं, जो मछली को चोच से बाहर निकलने से रोकने का काम करते हैं। फूलो का रस चूसने वाले पक्षियो की चोच प्राय लम्बी, सकरी और अत्यत पतली होती है। पुष्प एषणी किस्म की चोच (Flower probing type of Beak) हमिंग बड (Humming Bird) मे पायी जाती है। ऐसी चोच फूलो के आधार पर स्थित मकरद ग्रथियो तक पहुचकर पराग चूसने का काय करती है। मासभक्षी पक्षियो (Carnivorous Birds) की चोच अन्य पक्षियो से भिन्न होती है। ऐसी चोच प्राय छोटी, मजबूत और तीक्ष्ण (Sharp) होती है जो मास को चीरने-फाडने मे सक्षम होती है। ऊपरी चोच कुछ मुडी हुई होती है और इसके किनारे पैने और काटने वाले होते हैं। इस प्रकार बेधने और फाडने वाली चोच (Piercing and Tearing type of Beak) गिद्ध, चील, उल्लू तथा अन्य मासाहारी पक्षियो मे पायी जाती है।

कीचड छानने वाली चोच (Mud straining type of Beak) अन्य किस्म की चोचो से भिन्न होती है। ऐसी चोच सुदृढ, लम्बी और चपटी

होती है। इसके किनारों पर पत्ती के समान चपटे और अनुप्रस्थ प्रवर्द्ध (Lamellae) मौजूद रहते हैं। ऐसी लैमेली चलनी का कार्य करती है, जो कीचड़ में मौजूद खाद्य पदार्थों को छानकर चोंच में रख लेती है तथा मिट्टी और पानी बाहर निकाल दिया जाता है। फ्लैमिंगो (Flamingo) तथा बत्तख (Duck) में ऐसी ही कीचड़ छानने वाली चोंच होती है। कुछ जलीय पक्षियों (Aquatic Birds) में स्पैचुलाकार चोंच (Spatulate Beak) तथा कुछ अन्य जलीय पक्षियों में कोष्ठीय चोंच (Pouched Beak) पायी जाती है। स्पैचुलाकार चोंच चपटी, चौड़ी और ऊपर की ओर मुड़ी होती है। इसका सिरा चम्मच या स्पैचुला-नुमा होता है। ऐसी चोंच मिट्टी से कीड़े तथा अन्य जीवों को पकड़ने में सहायता करती है। जैसे स्पूनबिल (Spoonbill) तथा कॉर्मोरेण्ट (Cormorant) में इसी प्रकार की चोंच होती है। पेलिकन्स (Pelicans) में शक्वाकार, बड़ी तथा अंकुशी (Hooked) चोंच पायी जाती है, जिसे कोष्ठीय चोंच (Pouched Beak) कहते हैं। इनकी निचली चोंच पर त्वचा की बनी गुलर धानी (Gular Pouch) भी पायी जाती है जो मछलियों को पकड़ने के लिए विशेष रूप से उपयोगी होती है।

उपरोक्त वर्णन से यह स्पष्ट है कि पक्षियों की चोंच और उसकी बनावट में उनकी आवश्यकता झलकती है। पक्षी जगत का अध्ययन कर्ता किसी पक्षी की चोंच को देखकर उस पक्षी के भोजन का अनुमान सहज ही लगा सकता है। कहने का तात्पर्य यह है कि पक्षियों की चोंच का विकास उनके भोजन और वातावरण के अनुकूल ही हुआ है, जो उनके अस्तित्व (Existence) के लिए आवश्यक भी है।

पक्षियो का आहार

भिन्न-भिन्न पक्षियो के आहार भिन्न-भिन्न प्रकार के होते हैं। जिस प्रकार मनुष्य शाकाहारी या मासाहारी होता है, उसी प्रकार पक्षी भी शाकाहारी या मासाहारी होता है। शाकाहारी पक्षी मास, मछली या कीडे-मकोडे नही खाते वरन् फल-फूल, पत्तियो अथवा फूलो के रस को चूसकर अपना जीवनयापन करते हैं। शकरखोरा, पपीहा, धनेश आदि फल-फूल खाना पसद करते हैं। वैसे शाकाहारी पक्षियो की सख्या बहुत कम है। अधिकाश पक्षी मासाहारी होते हैं। जैसे बाज परिवार के शिकारी पक्षी, जो छोटे पक्षियो का शिकार करके खाते हैं।

मासाहारी पक्षी चूहा जसे हानि पहुँचाने वाले जानवरो को खाकर हमारी बहुत सहायता करते हैं। क्योकि चूहे प्रति वर्ष सैकडो टन अनाज का सफाया कर जाते हैं। किंगफिशर (Kingfisher) तो मछली पकडने मे निपुण होता है। इसका मुख्य भोजन है तालाब की छोटी-छोटी मछलियाँ। यह तेजी से जल मे गिरता है और गोता लगाकर अपना प्रिय आहार (मछली) पकड लेता है। उल्लू, बाज तथा कई अन्य मासाहारी पक्षी फसल को नुकसान पहुँचाने वाले जानवरो को खाकर किसानो की सहायता करते हैं। शाकाहारी और मासाहारी पक्षियो के अतिरिक्त बहुत से पक्षी ऐसे भी हैं, जो शाकाहारी और मासाहारी दोनो होते हैं। अर्थात् वे फल-फूल, कीडे-मकोडे, तितलियाँ, टिड्डे सब कुछ खाते हैं। वस्तुस्थिति तो यह है कि ससार के सबसे अधिक पक्षी सयुक्तभोजी होते हैं। अर्थात् ये शाकाहारी और मासाहारी दोनो होते हैं। जब जैसा भोजन मिल जाय, वे बेहिचक हजम कर जाते हैं। काला कौवा, मैना, चरखी, डिगडाल, मुटरी, बुलबुल, बत्तख आदि सयुक्तभोजी पक्षियों के उदाहरण हैं। कौवा परिवार के पक्षी तो

सर्वभक्षी (Omnivorous) होते हैं, जो कीट पतगो, मेढक, छिपकली से लेकर सडी-गली वस्तुए भी मजे मे खाते हैं।

कुछ पक्षी अखाद्यभोजी होते हैं। अर्थात् वे सडी-गली वस्तुएं खाकर हमारे आसपास के वातावरण (Environment) को स्वच्छ बनाते है। दूसरे शब्दो मे पक्षी मेहतर (Scavenger) की तरह काम करते हैं। मरे हुए जीव-जन्तुओ जैसे गाय, बैल, भैस तथा अन्य सडी-गली वस्तुएँ खाकर ये प्रदूषण तथा बीमारियो को फैलने से रोकते हैं। उडने वाले पक्षियो को दूसरे जन्तुओ की अपेक्षा अधिक भोजन की आवश्यकता होती है, क्योकि उन्हे आसमान मे दूर दूर तक उडना होता है, अत श्रम अधिक होने से ज्यादा शक्ति की भी जरूरत पडती है। भोजन की तलाश मे विभिन्न पक्षी मीलो दूर निकल जाते हैं और शाम होने पर अपने घोसले मे विश्राम के लिए चले आते है। अन्य जीवो की तरह पक्षियो के लिए भी आहार प्रथम मौलिक आवश्यकता है।

पक्षियो के पॉव

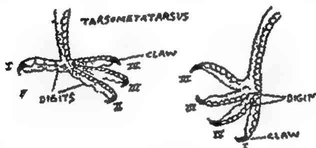
पाव की तरह पक्षियो के पॉव भी अनेक प्रकार के होते हैं। यह तय है कि पक्षियो के पॉव उनके चलने-फिरने, उडने तथा तैरने मे मदद करते हैं। पाव की सहायता से पक्षियो मे प्रचलन (Locomotion) की क्रिया सम्पन्न होती है। कुछ पक्षियो के पॉव छोट होते हैं तो कुछ के बहुत बडे होते हैं। गोरैया मैना, अबाबील के पॉव छोटे होते हैं, तो सारस, बगुला आदि के पॉव बडे होते हैं। सच तो यह है कि पक्षियो के पॉव मे उनके भोजन और वातावरण के अनुरूप अनुकूलता (Adaptation) पायी जाती है।

शिकारी पक्षियो जसे बाज, गिद्ध, चील, उल्लू, गरुड आदि मे शिकार परिग्रहण प्रकार के पॉव पाये जाते हैं। ऐसे पॉव को रेप्टोरियल पाद (Raptorial Foot) कहते है। एसा पॉव शिकार को झपट्टा मारकर कसकर पकडने का काम करता है। इनकी अगुलियाँ छोटी, सुदृढ एव कुछ मुडी हुई होती हैं। इसी प्रकार कुछ पक्षियो मे आरोही किस्म के पॉव (Climbing type of Feet) पाये जाते हैं। ऐसे पॉव कठफोडवा (Woodpecker), तोता (Parrot), हुदहुद (Hoophoe) आदि पक्षियो मे देखने को मिलते हैं। इनमे चार अगुलियाँ होती है जिनमे से पहली और चौथी अगुली पीछे की ओर तथा दूसरी ओर तीसरी आगे की ओर उन्मुख होती हैं। नखर (Claw) सुविकसित (Well developed) नुकीले तथा अन्दर की ओर मुडे होते हैं। इस प्रकार के पॉव पेड की टहनियो को पकडने तथा वृक्षो के तनो पर आरोहण के अनुकूल होते हैं।

जमीन पर तेज दौडने वाले पक्षियो (Fast Running Birds) मे धावक प्रकार के पॉव (Running type of Feet) पाये जाते हैं। ऐसे पॉव काफी शक्तिशाली एव मजबूत होते हैं। इनमे अगुलियो की सख्या कम

होती है तथा सभी अंगुलियाँ आगे की ओर उन्मुख रहती हैं। दरअसल धावक किस्म के पांव केवल उन्हीं पक्षियों मे पाये जाते हैं, जिनमे उडने की क्षमता (Flying Capacity) बिल्कुल नही या न के बराबर होती है—जैसे शुतुरमुर्ग (Ostrich) रीया (Rhea), एम्यू (Emu) फीजेण्टस (Pheasants) इत्यादि। ये सभी 'Flightless Birds' के उदाहरण हैं

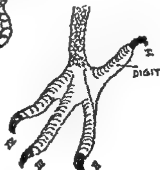
PERCTING TYPE OF FEET



RAPTORIAL FOOT OF HAWK



HERON'S LEAF WALKING FOOT



SWIMMING FEET



CLIMBING TYPE OF FOOT





जो उड तो नही सकते, किन्तु तेज दौडने मे सक्षम होते हैं। स्विपट्स तथा कुछ अन्य पक्षियो मे चिपकने वाले पाँव (Clinging type of Feet) पाये जाते हैं। इस प्रकार के पाव वृक्षो की छाल (Bark), मकानो की निचली सतहो एव अन्य खडी सतहो पर चिपकने के अनुकूल होते हैं।

कुछ पक्षियो जैसे जेकाना (Jacana), सारस (Stroks), स्नाइप्स (Snipes) आदि मे पत्तियो पर चलने वाले पाद (Leaf walking type of Feet) पाये जाते हैं। इनकी अगुलिया बहुत लम्बी, पतली एव जाल रहित (Webless) होती हैं या जाल अल्प विकसित (Less developed) होता है। ऐसा पाँव जल की सतह पर तैरती हुई पत्तियो पर चलने के अनुकूल होता है। इसके विपरीत बत्तख (Duck), हस (Swans), जल-मुर्गी (Coot), ग्रेब्स तथा पेलिकन्स (Grebs and Pelicans) आदि पक्षियो मे प्लावी प्रकार के पाद (Swimming type of Feet) पाये जाते है। ये छोटे, सुगठित और जाल (Web) युक्त होते हैं। प्राय सभी जलीय पक्षियो (Aquatic Birds) मे ऐसे ही पाँव पाये जाते है।

उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि पक्षियो के विभिन्न आकार-प्रकार के पाव बेमतलब नही हैं, वरन उनका पक्षियो के लिए विशेष महत्व है। सच तो यह है कि पक्षियो के पांव की बनावट को देखकर हम उनके भोजन के विषय मे पता लगा सकते हैं। पक्षियो के पाव खास तौर पर उनके वातावरण तथा आहार-आदतो (Food habits) के अनुरूप ही होते हैं। अगर ऐसा न हो तो उनका अस्तित्व ही खतरे मे पड जाएगा।

पक्षी गायन

हमारे आस-पास सुन्दर गाने वाले पक्षियो की कमी नही है। किसी विशाल पीपल या बरगद के वक्ष की डालियो पर बैठे रग बिरगे पक्षियो के कलरव से भला किसे सुख न मिलता होगा ? सभी पक्षियो की बोली मीठी हो, ऐसी बात नही है। कौवे की कांव-कांव किसे अच्छी लगती है ? शायद किसी को भी नही। इसी प्रकार नीलकठ बगुले, उल्लू चरखी के भी स्वर ककश होते हैं। किंतु पपीहे की 'पी कहाँ', 'पी कहाँ', की टर और कोयल की 'कुहू' कुहू' जैसी मधुर आवाज सबका मन मोह लेती है। पक्षियो की बोली अनेक प्रकार की होती है। कभी पक्षी आनन्द के लिए गाते हैं तो कभी अपनी बोली से किसी विशेष सकेत का प्रेषण करते हैं। एक साथ समूह मे बठी चिड़ियाँ आपस मे बातचीत करती हुई मालूम पडती हैं। किंतु उनकी भाषा समझना बहुत कठिन है। बडे-बडे पक्षीविशेषज्ञ भी पक्षियो की बोली का सही-सही अथ नही लगा पाते।



कुछ पक्षियो की बोली स्पष्ट (Clear) होती है तो कुछ की अस्पष्ट। अक्सर नए पक्षी मादा को प्रणय क्रीडा के लिए आमन्त्रित करने हेतु मधुर स्वर मे गाते हैं। इस प्रकार का प्रणय-गान (Love Song) पक्षियो मे बहुत सामान्य है। सुन्दर गाने वाले पक्षियो मे प्रमुख हैं—श्यामा, बुलबुल, कोयल, पपीहा, पहाडी मैना, श्यामचिरी, हारिल, कस्तूरा, तूती, हरेवा, गगरा इत्यादि। कबूतर की गुटरु-गूं, गुटरु-गू जैसी आवाज भी कर्णप्रिय है। यही कारण है कि बहुत से लोग अपने घरो मे कबूतर, तोता या मैना पालते हैं। तोता और मैना दूसरे पक्षियो की आवाज की बखूबी नक्ल कर लेते है। यही कारण है कि पक्षी प्रेमी इन्हे पिंजरे मे बद कर तरह-तरह की आवाज बोलना सिखाते है।

सच पूछिए तो प्रणय-क्रीडा के समय प्राय सभी नर पक्षी अपनी मादा को रिझाने के लिए सुरीली आवाज निकालने का प्रयास करते हैं। अगर प्रणय-क्रीडा म विघ्न डालने कोई दूसरा पक्षी आ जाए, तो नर सतर्क हो जाता है और दूसर पक्षी से लडकर उसे भगा देता है। इस प्रकार पक्षियो के जीवन मे प्रणय सगीत का बहुत महत्व है। नर पक्षी की आवाज से प्रसन्न होकर मादा पक्षी जोडा बांधने के लिए तैयार हो जाती है। प्रणय क्रीडा के अतिरिक्त वसत ऋतु मे या प्राय नित्य ही सुबह और सायकाल मे पक्षियो के चहकने की आवाज सुनी जा सकती है। पीलक (Golden oriole) की आवाज भी बहुत मधुर होती है। इसकी तेज सीटी जसी आवाज दूर से ही सुनाई पडती है। बुलबुल भी सुरीली आवाज मे गाने वाली चिडिया है। हारिल (Common Green Pigeon) की आवाज भी सीटी जैसी सुरीली होती है। पपीहे की आवाज से तो सभी परिचित हैं। यह भी विचित्र पक्षी होता है। कभी-कभी तो यह घटो 'पी कहाँ', 'पी-कहाँ' की रट लगाये रहता है। पक्षी वैज्ञानिका के अनुसार इसकी आवाज अंग्रेजी के 'ब्रेन फीवर' (Brain Fever) शब्द से मिलती-जुलती होती है। शायद इसी कारण से पपीहा को ब्रेन फीवर बर्ड' (Brain Fever Bird) भी कहते हैं।

प्रणय गायन के अतिरिक्त कुछ विशेष परिस्थितियो मे पक्षी कर्कश आवाज निकालते हैं। ऐसा वे तब करते हैं, जब किसी दूसरे समुदाय के पक्षी उन्हे डराने धमकाने या मारने के लिए आते हैं। अक्सर अपने शत्रुओ की आहट पाकर कोई पक्षी तेज स्वर मे चीखने लगता है।

किसी शिकारी पक्षी के आक्रमण करने पर भी सामान्य पक्षी तेज स्वर मे बोलकर विरोध प्रकट करता है और अपनी सुरक्षा का हर सम्भव प्रयास करता है।

कई पक्षी सकट आने पर अपने समुदाय के सदस्यों को सतर्क करने के लिए विशेष आवाज उत्पन्न करते हैं। चरखी चिडिया इसका सुन्दर उदाहरण है। क्रोध की अवस्था मे पक्षी की आवाज भिन्न होती है।



इसी प्रकार दुःख मे पक्षी के कराहने की आवाज तथा प्यार और दुलार की आवाज भी अलग किस्म की होती है। मुर्गे की आवाज यानी बाँग हमे रोज सवेरे जगने की सलाह देती है। सचमुच पक्षियों के कलरव और उनकी मीठी आवाज के बिना मानव जीवन बहुत नीरस और आकर्षणहीन होता!

पक्षी प्रवास

प्रवास या प्रव्रजन पक्षियो के जीवन की एक अनोखी घटना है। अनुकूल वातावरण, भोजन और आवास की तलाश मे कुछ खास अवधि के लिए पक्षी एक स्थान से दूसरे स्थान पर चले जाते हैं। नये स्थान पर जब मौसम प्रतिकूल होने लगता है और भोजन की कमी महसूस होने लगती है, तो पक्षी अपने मूल स्थान पर लौट आते हैं। जीव वैज्ञानिक इस घटना को प्रवास या प्रव्रजन कहते हैं।

प्रवास (Migration) तो अनेक जीव जन्तुओ मे होता है, किन्तु समस्त प्रवासी जीवो मे पक्षियो का स्थान सर्वोपरि है। सच पूछिए तो प्रवास का अर्थ उद्देश्यहीन भटकना नही है। यह एक सुनिश्चित आनुवंशिक गुण है, जो जीव-जतुओ को अपने दूरस्थ गन्तव्य स्थानों की ओर जाने के लिए प्रेरित करता है। प्रवास की अवधि समाप्त होने के पश्चात् पक्षी अपने मूल स्थान पर प्रत्येक वर्ष नियमित समय पर पहुँच जाते हैं। मध्ययुग मे भी लोगो को पक्षियो के प्रवास के सबध मे थोडी-बहुत जानकारी थी। किन्तु इनके कारणो के सबध मे वैज्ञानिक अध्ययन कई दशको पूर्व ही आरम्भ किए गए थे। ससार की लगभग 8580 पक्षी प्रजातियो मे आधी प्रजातियाँ नियमित रूप से प्रवास करती हैं। जिन पक्षियो मे प्रव्रजन या प्रवास होता है, उन्हे प्रवासी पक्षी (Migratory Bird) तथा जिनमे ऐसा नही होता उसे आवासी पक्षी (Resident Bird) कहते हैं।

पक्षी प्रवास के प्रकार

पक्षी प्रवास कई प्रकार के होते हैं जिनमे निम्न प्रकार प्रमुख है—

1 अक्षाशी प्रवास—ऐसे प्रवास का अर्थ है पक्षी का उत्तर से

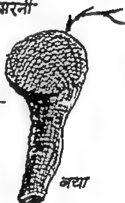
दक्षिण तथा दक्षिण से उत्तर दिशाओं मे आना-जाना । उत्तरी अमेरिका तथा यूरेशियाई पक्षी विषुवत रेखा को पार कर दक्षिणी अमेरिका, अफ्रीका और भारत के उष्णतर भागो मे जाडा बिताने के लिए चल जाते हैं । अमेरिकी गोल्डेन प्लोवर नामक पक्षी जाडे के नौ महीने आठ हजार मील दक्षिण मे अर्जेण्टिना के मैदानो मे बिताता है । अर्थात्


फाख्ता


मछमरनी


फुदकी


शकरखोरा


बया


अबाली


कौवा

गोल्डेन प्लोवर वर्ष मे दो गर्मियो का आनन्द लेता है । उसे तो यह ज्ञान भी नही होता कि जाडा कैसा होता है ।

2 दिशांतरीय प्रवास—ऐसा प्रवास उन पक्षियो मे होता है जो दक्षिण गोलार्द्ध मे रहते हैं और पूरब-पश्चिम दिशा मे प्रवास करते हैं । पटेगोनियन प्लोवर नामक पक्षी इस प्रकार के प्रवास का मुख्य उदाहरण है ।

3 ऊँचाई मे प्रवास—उदग्र प्रवास गर्मियो मे ऊँचे पहाडो से, निचली घाटियो की दिशा मे होता है। अनेक भारतीय तथा विदेशी पर्वतीय पक्षियो मे इस तरह का प्रवास देखने को मिलता है। गर्मियो मे भारत के मदानी भाग मे रहने वाले पक्षी समुद्रतट से हजारो फुट ऊँचे उडते हुए हिमालय की तराइयो मे पहुच जाते है। सर्दी आने पर ये पुन मदानो में लौट आते हैं। 'वुड कॉक' और 'बुश चैट' ऐसे ही पक्षी हैं, जिनमें उदग्र प्रवास (Altitudinal Migration) होता है। एँडीज के ग्रीब तथा कूट पक्षी इस तरह के प्रवासी पक्षी हैं।

4 आशिक प्रवास—अनेक पक्षी प्रजातियो जैसे कनाडा तथा उत्तरी सयुक्त राज्य अमेरिका के नीलकठों मे आशिक प्रवास देखने को मिलता है। ऐसे प्रवासी पक्षियो मे सभी अपने मूल निवास को छोडकर नही जाते हैं वरन कुछ पक्षी वही रह जाते हैं।

5 ऋतुपरक प्रवास—अनेक पक्षी प्रजातियो मे ऋतुपरक प्रवास देखने को मिलता है। उदाहरण के लिए ब्रिटेन के बतासी, अबाबील तथा कोकिल पक्षी ग्रीष्म आगतुक (Summer visitors) होते हैं। क्योंकि वे दक्षिण से चलकर वसत ऋतु मे वहाँ पहुँचते हैं और प्रजनन करते हैं। शीतकाल मे पुन अपने मूल स्थान यानी दक्षिण मे चले जाते हैं। इसी प्रकार कुछ पक्षी शीत आगतुक (Winter visitors) होते है क्योकि वे शीतकाल मे उत्तर दिशा से आते हैं और जाडा बिताने के पश्चात पुन उत्तर दिशा में लौट जाते हैं। इतना ही नही, कुछ पक्षी मार्ग-पक्षी (Birds of Passage) भी होते हैं। ऐसे पक्षी वर्ष मे दो बार—एक बार वसत मे गर्म से ठडे प्रदेश मे और शरद् मे ठडे से गर्म प्रदेश मे जाते हुए दिखायी पडते हैं। इसी वजह से इन्हे 'मार्ग-पक्षी' कहा जाता है।

इसके अतिरिक्त कुछ पक्षियो मे अनियमित प्रवास (Erratic Migration) देखने को मिलता है। बगुले, कोकिल, कस्तूरो आदि मे ऐसा ही प्रवास देखने को मिलता है। ऐसे पक्षी प्रजनन के बाद वयस्क तथा बच्चो के साथ भोजन की तलाश तथा शत्रुओ से सुरक्षा के लिए अपने निवास-स्थल से सकडो मील दूर अन्य दिशाओ मे निकल जाते हैं।

प्रवास-विधियाँ

कुछ पक्षी अपनी प्रवास यात्रा रात्रि मे आरभ करते हैं तथा कुछ दिन मे। कौवा, अबाबील, रोबिन, ब्लैक बर्ड, सारस, नीलकठ, बाज

आदि दिन के समय उडते हैं। ऐसे पक्षी दिवा प्रवासी (Diurnal Migrants) कहलाते हैं। ये अक्सर झुड मे उडते हैं जैसे बत्तख तथा हस। रात्रि प्रवासी (Nocturnal Migrants) पक्षी रात्रि मे प्रवास-यात्रा आरम्भ करते हैं। रात्रि प्रवासी पक्षी जैसे—गौरैया, पिटका, कस्तूरा इत्यादि रात्रि मे अपनी प्रवास-यात्रा प्रारम्भ करते हैं। ये आकार मे छोटे होते हैं। स्पष्ट है कि ये पक्षी शत्रुओं से सुरक्षा के लिए भी रात्रि के अधेरे मे उडना पसद करते हैं।

कुछ पक्षी धरती के बहुत निकट उडते देखे जा सकते हैं, जबकि अधिकाश पक्षी 3000 फुट की ऊँचाई पर उडते हैं। कुछ छोटे पक्षी 5000 से 15000 फुट की ऊचाई पर भी उडते देखे गए हैं। इतना ही नही, कुछ पक्षी 20000 या उससे भी अधिक ऊँचाई पर हिमालय तथा एडीज की शृखलाओ का पार कर जाते हैं। प्रवास के दौरान पक्षी सामान्य उडान की अपेक्षा तेज गति से उडते है। कौवा, फिन्च आदि 30 मील प्रति घटा की रफ्तार से उडता है जबकि भारतीय बतासी 170 मील प्रति घटा की रफ्तार से उडता है, जो एक रिकाड है। प्रवास के दौरान विभिन्न पक्षी अलग अलग दूरिया तय करते हैं। मसलन हिमालय का बर्फीला तीतर तकरीबन एक या दो मील की दूरी तय करता है जबकि चिकाडीज (Chicades) नामक चिडिया 8000 फुट यात्रा करती है। गोल्डेन प्लोवर (Golden Plover), अबाबील तथा कई अन्य पक्षी 6000 से 9000 मील की लम्बी दूरी तय कर एक कीर्तिमान स्थापित करते है। उत्तरी ध्रुव का कुर्री पक्षी 11000 मील की यात्रा करके दक्षिण ध्रुव प्रदेश पहुच जाता है।

प्रवासी पक्षी प्राय निश्चित माग रेखाओ मे उडते हैं। समुद्री पक्षी समुद्र मार्ग अपनाते हैं तो कुछ पक्षी तटीय मार्गों से प्रवास-यात्रा करते हैं।

प्रवास के कारण

पक्षी प्रवास के अनेक कारण हैं, जैसे भोजन और अनुकूल परिस्थितियो की तलाश, शत्रुओ से सुरक्षा इत्यादि। प्रवास-यात्रा के दौरान अनेक पक्षियो को हजारो मील की दूरी तय करनी पडती है तथा अनेक कठिनाइयो का सामना करना पडता है फिर भी उनका यह सिलसिला प्रति वर्ष नियमित रूप से जारी रहता है। वर्षों तक पक्षी

वज्ञानिवो (Ornithologists) ने पक्षी प्रवास के कारणो की खोज की है। विभिन्न पक्षी विशेषज्ञो के मत भिन्न-भिन्न है। कुछ वैज्ञानिको के अनुसार वातावरण के उद्दीपन (Environmental Stimuli) जैसे सूर्य की तीव्रता मे कमी, ठड और तूफानी मौसम, वायु दबाव का बढना, आहार की कमी आदि ऐसे ही वाह्य कारक (External Factors) है, जो पक्षियो को अनुकूल स्थानो मे चले जाने के लिए प्रेरित करते है। गर्मी की तीव्रता, सूखा आदि भी प्रवास के लिए प्रेरित करते हे।

कुछ पक्षी वैज्ञानिको के अनुसार पक्षियो के जनन अगो (Sex Organs) का परिपक्व (Mature) होना भी एक महत्वपूर्ण कारण है जो प्रवास के लिए आवेग पैदा करता है। सर्वेक्षणो और शोधकार्यो (Researches) मे यह ज्ञात हुआ है कि पक्षियो के प्रवास-यात्रा पर निकलने की प्रेरणा और आन्तरिक प्रजनन तत्र (Reproductive System) मे गहरा सबध है। किन्तु बाद मे यह भी देखा गया कि अगर प्रवासी पक्षी के प्रजनन अग निकाल दिए जाएँ तो भी वह प्रवास-यात्रा आरभ करता है। आधुनिक शोधकार्यो से यह जानकारी मिली है कि प्रवास यात्रा की प्रेरणा का सबध कुछ विशेष किस्म के हारमोन (Hormone) मे है। इस हारमोन का नाम है—गोनडोट्रापिक हारमोन (Gonadotropic Hormone) जो पीयूष ग्रथि (Pituitary gland) के अग्र भाग मे स्रावित होता है। यह हारमोन पक्षियो के जनन अगो (अडाशय और वृषण) के अतिरिक्त शरीर के अन्य अगो की क्रियाओ को प्रभावित करता है। यह शरीर मे वसा के निर्माण और भडारन (Formation and Storage) को भी प्रभावित करता है। प्रवास यात्रा म श्रम के कारण प्रवासी पक्षी को विशेष ऊर्जा की आवश्यकता होती है। यह ऊर्जा सचित वसा के दहन मे प्राप्त होती है।

प्रवासी पक्षियो पर किए प्रयोगो मे यह भी देखा गया है कि वायुमडल मे प्रकाश की मात्रा मे बढोत्तरी होने मे पीयूष ग्रथि उत्तेजित हो जाती है। परिणामस्वरूप अधिक मात्रा मे गोनेडोट्राफिक हारमोन (GTH) का स्राव होने लगता है। बसत ऋतु के आरभ मे निकलने वाले प्रवासी पक्षी इसके प्रमाण है। थाइरायड परिकल्पना (Thyroid Hypothesis) के अनुसार पक्षियो के शरीर मे स्थित एक अन्य अत -स्रावी ग्रथि (Endocrine gland) थाइरायड के हारमोन (Hormones of Thyroid gland) पक्षियो के शारीरिक उपापचय (Metabolism) मे

ऐसा परिवर्तन लाते हैं कि प्रवासी पक्षी प्रवास के लिए उत्तेजित हो जाते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि थाइरायड और पीयूष ग्रंथि के हारमोन पक्षियों को प्रवास के लिए प्रेरित करते हैं।

दिशा निर्धारण

यह आश्चर्यजनक किन्तु सत्य है कि प्रत्येक प्रजाति का प्रवासी पक्षी प्रति वर्ष एक निश्चित मार्ग से ही यात्रा कर अपने गंतव्य तक पहुँचता है। जन्तु पक्षी प्रवास यात्रा के समय सूर्य से दिशा निर्देश प्राप्त करते हैं। शायद यही कारण है कि आसमान में बादल छा जाने पर प्रवासी पक्षी कुछ समय के लिए दिग्भ्रमित हो जाते हैं। पक्षी वैज्ञानिक अभी तक यह नहीं जान सके हैं कि पक्षी सूर्य से कैसे दिशा निर्देश प्राप्त करते हैं। किन्तु इतना तय है कि प्रवासी पक्षियों में 'सूर्य कम्पास बुद्धि' होती है, जिसका प्रयोग वे प्रवास यात्राओं के समय करते हैं। दिन में उड़ान भरने वाले पक्षी सूर्य से तथा रात्रि में प्रवास करने वाले पक्षी चन्द्रमा और तारों की मदद से दिशा निर्देश प्राप्त करते हैं। कुछ वैज्ञानिकों का अनुमान है कि प्रवासी पक्षियों में दिशा निर्धारण की जन्मजात क्षमता होती है। अर्थात यह एक आनुवंशिक गुण (Genetic character) है। माता पिता से दूर रखे जाने पर भी प्रवासी पक्षियों के बच्चे सही दिशा में प्रवास-यात्रा करते हैं।

भारत में आने वाले प्रवासी पक्षी

प्रतिवर्ष भारत में हजारों प्रवासी पक्षी दूसरे देशों से मेहमान की तरह आते हैं, एक निश्चित अवधि तक रहते और फिर अपने देश लौट जाते हैं। भारत में आने वाले प्रवासी पक्षी (Migratory Bird) मुख्यत रूस और मध्य एशिया से आते है। राजस्थान के भरतपुर पक्षी विहार (Bharatpur Bird Sanctuary) तथा दिल्ली के चिड़ियाघर में ऐसे अनगिनत प्रवासी पक्षी देखे जा सकते हैं। प्रवासी पक्षियों की गति-विधियों का अध्ययन करने के लिए उनके पाँव में छल्ले (Ring) पहना दिए जाते हैं। प्रमाण के तौर पर ऐसा ही एक प्रवासी पक्षी Green Sand Piper जिसे रूस (मास्को) में छल्ला पहनाया गया था, केरल की झील में विचरण करता पाया गया था।

सच तो यह है कि हमारे देश में मिलने वाली दो हजार से अधिक

पक्षी प्रजातियो मे से तकरीबन तीन सौ पचास प्रजातियाँ ऐसी हैं जो प्रति वर्ष विदेशो से कुछ महीनो के लिए यहां आती हैं। अबाबील, सीकपर मुर्गाबियाँ फुदकी, पयरचिरौटा आदि ऐसे ही पक्षी हैं। ये प्रति वर्ष शरद् ऋतु मे भारत आते है, यहाँ का मौसम उनके लिए बहुत अनुकूल होता है। झीलो के आस-पास तीन चार महीने व्यतीत करने के पश्चात् गर्मी के आरभ होने पर ये पुन अपने मूल स्थान को लौट जाते हैं। बहुत अधिक ठडक पडने पर कश्मीर, गढवाल, सिक्किम जैसे ठडे प्रदेशो से भी पक्षी उडकर गर्म और अनुकूल स्थानो की ओर चले जाते हैं। प्रवासी पक्षियो मे साइबेरियन क्रेन (Siberian Cranes) का विशेष स्थान है। शीतकाल मे ये पक्षी साइबेरिया जैसे ठडे प्रदेशो से उडकर हजारो मील की दूरी तय कर भारत मे आते हैं। यहाँ का हरा भरा वातावरण उनके लिए बहुत अनुकूल होता है। दिल्ली के चिडियाघर तथा घना पक्षी विहार मे ये पक्षी विशेष रूप से इकट्ठे होते हैं।

पक्षी प्रवास के अनेक लाभ हैं, जैसे बेहतर जलवायु, आहार और आवास की सुविधा, प्रजनन आदि के लिए उपयुक्त स्थान की प्राप्ति इत्यादि। इसके साथ ही प्रवास के दौरान अन्य पक्षियो के साथ जीन विनिमय (Exchange of Genes) के भी अवसर मिलते है। यही कारण है कि तमाम बाधा-विपदाओ, आँधी तूफान और मार्ग की असुविधाओ के बावजूद प्रति वर्ष बेशुमार पक्षी प्रवास-यात्रा पर निकलते है।

पक्षियो मे प्रणय-क्रीडा

अन्य जीव जतुओ की तरह पक्षियो मे भी प्रेम व्यवहार देखने को मिलता है। प्राय नर पक्षी जोडा बाँधने से पूर्व सौन्दर्य का प्रदर्शन आरम्भ कर देते हैं। कबूतरो और पण्डुको मे तो अद्भुत प्रेम-भाव देखने को मिलता है। नर कबूतर मादा को रिझाने के लिए मादा कबूतर के सामने प्रसन्न भाव से नाचने-गाने और 'गुटरगू गुटरगू' करने लगता है। कहते हैं, कबूतरो मे नर-मादा का सबध जीवन भर का होता है। कबूतरो का दाम्पत्य प्रेम जग जाहिर है। जब नर कबूतर अपने गले की थैली फुलाकर नाचने-गाने लगता है, तो मादा कबूतर प्रसन्न होकर जोडा बाँधने के लिए तैयार हो जाती है।

वसत ऋतु के आरभ होते ही पेड पौधो के साथ साथ पशु-पक्षियो मे भी नवजीवन का सचार दिखायी पडता है। पक्षीगण परी की सुदर पोशाक के माध्यम से अपनी मादाओं को रिझाने लगते हैं। सुदर गाने वाले पक्षी मधुर स्वर मे गा-गाकर अपनी मादाओ को काम क्रीडा के लिए फुसलाने लगते है। कोयल, पपीहा जैसे सुदर गाने वाले पक्षी खूब जोर-जोर से प्रणय गीत गाते है। प्राय पक्षी समुदाय मे नर की सख्या मादाओ की अपेक्षा अधिक होती है। अत प्रतियोगिता और प्रतिद्वन्द्विता स्वाभाविक ही है। नर पक्षियो की लडाई मे शक्तिशाली नर को ही मादा के साथ सहवास का अवसर मिलता है। चडूक पक्षी का नर वसत आरभ होने पर मादा के सामने गाने और उसे रिझाने लगता है। नृत्य-कला मे अधिक निपुण मोर (Peacock) है। मयूर का नृत्य तो मशहूर है। वर्षा ऋतु मे बादल को देखकर मयूर बहुत प्रसन्न होता है और अपने खूबसूरत पखो को फलाकर नाचने लगता है। मादा मयूर इस नृत्य को देखकर प्रसन्न होती है और जोडा बाँधने के लिए

तैयार हो जाती है।

कभी-कभी तो नर पक्षी मादा के साथ सहवास करने के लिए साथी नर पक्षियो से खूब लडता-झगडता है। ऐसे मे किसी नर की मृत्यु भी हो जाए, तो आश्चर्य नही है। कुछ मादा पक्षी अपनी भावभगिमाओ से नर पक्षी को आकर्षित करने का प्रयास करती है। बटेर पक्षी मे ऐसा ही होता है। मादा पक्षी नर को काम-क्रीडा के लिए रिझाती है कि तु अधिकाश पक्षियो मे मादा को रिझाने का काम नर पक्षी ही करता है। पक्षियो मे सौन्दय प्रदशन खूब देखने को मिलता है। जैसे मधुर आवाज मे गाना, पख फडकाना, मीठी बोली बोलना, मादाओ के सामने नाचना गाना इत्यादि। कई पक्षी तो मादा के सामने नाचते-नाचते मादा की गर्दन को अपनी चोच से छू देते है मानो प्रणय के लिए विशष आग्रह कर रहे हो। अर्थात अपनी मादा का रिझाने के लिए नर पक्षी कोई कोर-कसर नही छोडता तथा विभिन्न उपक्रमो से मादा को प्रसन्न करके सहवास के लिए प्रेरित करता है। कभी-कभी नर पक्षी आकाश मे मादा को खदेडता हुआ सुरक्षित स्थान पर पहुचकर प्रणय-क्रीडा सम्पन्न करता है। प्रजनन काल मे मादा पक्षी अड देती ह। ये अड सुरक्षित स्थान पर बनाये घोसले मे दिये जाते है। कालान्तर मे अडो से शिशु पक्षी निकलते है। पक्षियो मे सौ दय प्रदशन और प्रणय-क्रीडा मनुष्यो जैसी ही पायी जाती है। पक्षियो का सौन्दय प्रदशन या प्रणय व्यवहार दृष्टव्य है।

पक्षियो में शिशु-पालन

परिचय

अन्य जीव-जतुओ की तरह पक्षियो को भी अपनी सतानें बहुत प्रिय हैं। जिस प्रकार मनुष्य अपनी सतान के लिए चिंतित रहता है, उसी प्रकार पक्षी भी अपने शिशुओ का पूरा-पूरा ख्याल रखते हैं। वे अपने शिशुओ को दाना चुगने, उडने, चलने-फिरने तथा शत्रुओ से अपनी रक्षा करने का समुचित प्रशिक्षण देते हैं।

अडो से निकलने के बाद पक्षियो के बच्चे प्राय असहाय जसे होते हैं और उन्हें पैतृक-सरक्षण (Parental Care) की आवश्यकता होती है। पक्षियो मे पतृक-सरक्षण मनुष्य जैसा ही होता है। तोता, फाख्ता, कौआ आदि के शिशु कई दिनो तक आँखें नही खोल पाते और असहाय अवस्था में घोसले मे पडे रहते हैं। गायक पक्षियो के शिशु भी जन्म के समय बिल्कुल असहाय, अधे और आवरणहीन होते हैं। भोजन के लिए वे पूर्णत अपने माता-पिता पर आश्रित रहते हैं। यहाँ तक कि घोसला छोडने के कई दिन बाद तक भी वे अपने माता-पिता से ही भोजन प्राप्त करते हैं। तात्पर्य यह है कि अधिकाश शिशु पक्षी अडो से निकलने के बाद असहाय रहते हैं क्योकि उनके शरीर पर नाम मात्र के रोएँ रहते हैं तथा उनका शरीर बहुत कमजोर होता है। किन्तु ऐसे भी पक्षी हैं जिनके शिशु अडे से बाहर निकलते ही दौडना शुरू कर देते हैं। इतना ही नही, कुछ घटो से लेकर दो-तीन दिन मे ही ये पूणत आत्मनिभर होकर घोसला छोड देते है। ऐसे पक्षिया मे शुतुरमुग, मुर्गा, तीतर, बत्तख आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। ऐसे आत्मनिभर पक्षी प्राय मद-बुद्धि वाले होते हैं। तोता, फाख्ता, कौवा आदि को अपेक्षाकृत बुद्धिमान पक्षी माना जाता है।

घोंसला निर्माण

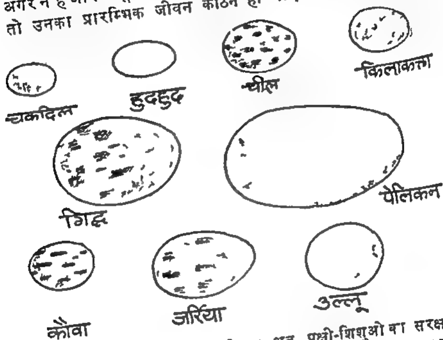
घोसला निर्माण शिशु पालन की पहली आवश्यकता है। इसमे कोई दो मत नही कि घोसला बनाने का मुख्य उद्देश्य अडो बच्चों तथा कुछ हद तक मादा की सुरक्षा के लिए होता है। पक्षियो मे घोसला बनाने की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। यह बात और है कि कुछ पक्षियो के घोसले बहुत मजबूत तो कुछ के खूबसूरत या साधारण ढग के होते हैं। कुछ घोसले कलापूर्ण, तो कुछ बिल्कुल बेढगे होते हैं। पक्षियो के घोसले अक्सर पेड की डालियो पर देखने को मिलते हैं। नर पक्षी घास, पत्ती, तिनका, धागे आदि इकट्ठा करता है और मादा अपनी इच्छानुसार घोसला बनाती है। बया के घोसले जितने सुदर होते हैं, उतने ही मजबूत और कलापूर्ण भी। सक्षेप मे, पक्षियो के घोसले विभिन्न प्रकार के होते है। कठफोडवा का घोसला काफी मजबूत होता है, जिसके अन्दर अडे-बच्चे पूर्णत सुरक्षित होते हैं। इसी प्रकार धनेश पक्षी भी किसी बडे वृक्ष के कोटर मे अडे देता है। धनेश का घोसला विचित्र किस्म का होता है। बया और दरजिन फुदकी के कलात्मक घोसले तो देखते ही बनते हैं। वसे अबाबील और बतासी के घोसले भी कारीगरी के नमूने कहे जा सकते हैं।

अडा सेना

घोसला बनाने के बाद मादा पक्षी अडे देती है। अडा सेने का काम अक्सर मादा पक्षी ही करती है, किन्तु कई पक्षियो मे नर और मादा दोनो मिलकर बारी-बारी से अडा सेते हैं। मादा धनेश अडे से शिशु के निकलने तक पर्दानशीन बनी रहती है। कुछ पक्षी जैसे कोयल और पपीहा अडा सेने का काम दूसरे पक्षियो से करवाते है। ये चालाकी से अपने अडे दूसरे पक्षी के घोसले मे रख आते हैं और शिशु पालन के तमाम दायित्वों से मुक्त हो जाते हैं।

सचमुच शिशु-पालन एक तपस्या के समान है। पक्षियो मे मादा इस काम को बखूबी करती है। कही कहीं नर पक्षी भी शिशु-पालन की जिम्मेवारी आदशपूर्ण ढग से निभाते हैं। उदाहरण के लिए नर कबूतर का अडा सेना अपने आप मे एक आदर्श है। नर कबूतर अडे चाव से मादा को हटाकर स्वय अडे पर बैठकर उसे सेता है और अपना दायित्व पूरा करता है।

पक्षी विशेषज्ञो (Ornithologists) के अनुसार पक्षी अडे पर बैठकर न केवल उसकी सुरक्षा करते है, वरन उसके फूट जाने पर वे अपने बच्चो को परो के नीचे छिपाकर उन्हे बाह्य विपदाओ यथा—आधी, पानी, धूप और दुश्मनो से भी बचाते है। इसमे कोई सदेह नही है कि अगर नन्हे और मासूम पक्षी-शिशुओ को अगर पैतृक सरक्षण न मिले, तो उनका प्रारम्भिक जीवन कठिन हो जाएगा और पक्षियो का



अस्तित्व ही खतरे मे पड जायेगा। अत पक्षी-शिशुओ का सरक्षण नितात आवश्यक है और प्रकृति ने स्वय उसकी समुचित व्यवस्था कर दी है।

अडा सेने के समय मादा पक्षी के वक्षस्थल मे एक या अधिक स्थानो के पर गिर जाते है। अडा सेने के समय इन स्थानो से अडो का सीधा सम्पर्क बना रहता है। इससे उष्णता मिलती है और अनुकूल परिस्थिति मिलने से अडे के भीतर शिशु का निर्माण काय निरतर जारी रहता है। जब मादा पक्षी अडा सेती है, तो नर भोजन की तलाश मे निकल जाता है। वह समय-समय पर मादा को दाना या कीडे मकोडे लाकर खिलाता रहता है। कालातर मे अडे से शिशु पक्षी बाहर निकलता है। अलग-अलग पक्षियो मे अडे फूटने का समय भी अलग-अलग होता है,

जैसे मुर्गी के अडे 22 दिन मे, बत्तख के 28 दिन मे और अबाबील के 15 दिन मे फूटते है। ससार का सबसे छोटा अडा हमिंग बड (Humming Bird) तथा सबसे बडा अडा शुतुरमुग (Ostrich) का होता है।

नवजात शिशु को समय-समय पर आहार लाकर देने का काय प्राय नर पक्षी का होता है। आपको यह जानकर बहुत आश्चय होगा कि टिटस अपने बच्चा को दिन भर मे 350 से 550 बार भोजन लाकर खिलाता है। गगरा जैसा छोटा पक्षी अपने वच्चो के लिए 35 45 जोराइया तलाश करके उन्हे खिलाता है। तात्पय यह कि भोजन की तलाश मे पक्षियो को बहुत परिश्रम करना पडता है। इसके लिए सैकडो बार उन्ह घोसले से उडकर बाहर जाना और फिर आहार लेकर आना पडता है। नर और मादा कबूतर अपनी चोच से अपने बच्चे को एक विशेष प्रकार का गाढा (दूध जैसा) पदार्थ देते है। यह कबूतर के चुगे हुए अधपके दानो से उसके गले की थैली के भीतर बनता है। इसे कबूतर का दूध (Pigearis milk) भी कहते है। यह शिशुओ के लिए बहुत पौष्टिक होता है।

अडा सेने की अनोखी विधि

कुछ पक्षी न तो स्वय अपना अडा सेते हैं, और न ही किसी दूसरे पक्षी से ही सेवाते हैं। वल्कि सूय की किरणो से इनके अडो को समुचित ताप मिलता रहता है। उदाहरणार्थ मादा शुतुरमुर्ग अपने अडे देकर उन्ह रेत से ढक देती है। इनके अडो को घडियाल के अडो की तरह धूप से गर्मी मिलती है। रात्रि मे शुतुरमुर्ग स्वय अडो पर बैठकर उन्हे गर्मी प्रदान करता है। सेलिबस नामक टापू पर रहने वाले पक्षी उष्ण जल के झरने के पास गडढे बनाकर उनमे अडे देते हैं। उष्ण जल से ये अडे गर्म रहते है और उनके भीतर शिशु का विकास जारी रहता है। मादा पक्षी एक निश्चित अवधि के बाद गड्ढे खोदती है जिससे शिशु बाहर निकल आते हैं।

कुछ स्थानो पर तो अडा सेने की आवश्यकता ही नही पडती है। दरअसल जहा अधिक गर्मी पडती है, वहाँ पक्षियो को अडा सेना नही पडता। हाँ, अधिक गर्मी से अडा खराब न हो जाये, इसलिए उसे समय-समय पर पानी से भिगोना अवश्य पडता है।

उड्डयन प्रशिक्षण

पक्षियो के शिशु जब बडे हो जाते हैं तो धीरे-धीरे उनमे उडने योग्य पर निकल आते हैं। वैसे तो उडना पक्षियो का एक नसर्गिक गुण है, किन्तु कुछ पक्षियो को इसके लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। यह प्रशिक्षण उसके जनक ही देते हैं। बगुलो मे छोटे शिशुओ को उडने का प्रशिक्षण दिया जाता है और फिर वे मछली पकडने की कला भी सीखते है। बाज और बहरी जैसे शिकारी पक्षी अपने शिशुओ के समक्ष मास के टुकडे उछाल देते है। इसे पकडने के लिए बच्चे घोसल से निकलकर हवा मे कूद पडते हैं और उडते हुए शिकार करना सीखते हैं।

जलीय पक्षी अपने बच्चो को भली-भाति तैरना और शिकार पकडना सिखलाते हैं। इस प्रकार पक्षी अपने शिशुओ को न केवल चलना-फिरना और उडना, वरन् दाना चुगने और आत्म-सुरक्षा का भी विधिवत प्रशिक्षण देते हैं। वैसे प्रजनन तथा कई महत्वपूर्ण बातो को पक्षी अत प्ररणा (Intuition) से ही सीख लेते है। जिस कुशल ... से पक्षी अपने बच्चो का पालन-पोषण करते हैं उसी तत्परता के साथ वे अपने बच्चो की रक्षा भी करते हैं। अपने शत्रुओ को वे चोच मार-मारकर भगा देते हैं। बहादुर पक्षी भुजगा तो चील और कौवे जसे पक्षियो को भी मार भगाता है।

आलसी पक्षियो को उनके जनक जबरदस्ती घोसले से बाहर निकाल देत हैं और उन्हे विवश होकर उडना पडता है। इसी तरह बाज और गरुड जसे पक्षी उडने लायक अपने शिशुओ को चोच से मार-मारकर दूर भगा देते हैं जिससे वे आत्मनिभर और निडर बनें। यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि पक्षियो मे अन्य विकसित प्राणियो की तरह शिशु-पालन की गौरवशाली परपरा देखने को मिलती है। कही-कही तो यह परपरा अनुकरणीय लगती है।

उडने मे असमर्थ पक्षी

परिचय

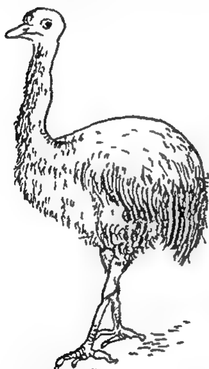
आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि पक्षियो के विशाल ससार मे ऐसे भी पक्षी हैं, जो उडने मे असमर्थ, किन्तु दौडने मे बहुत तेज होते हैं। शायद इसीलिए इन्हे 'दौडने वाली चिडिया' (Running Birds) या 'उडने मे असमथ पक्षी' (Flightless Birds) कहते हैं। इनके न उडने का प्रमुख कारण है इनका भारी-भरकम शरीर। दूसरे शब्दो मे इनका विशालकाय शरीर इनके उडने मे बाधक बनता है। इतना ही नहीं इन पक्षियो के पख भी शरीर की तुलना मे बहुत छोटे होते हैं। अर्थात् इनमे ह्रासित पख (Reduced Wings) पाये जाते हैं।

पक्षी जगत के अधिकाश पक्षी उडने मे समथ हैं। ऐसे पक्षियो को कैरिनेटी (Carinatae) उपवर्ग (Subclass) मे रखा गया है। न उडने वाले पक्षियो (Flightless Birds) को रेटाइटी (Retitae) उपवग मे रखा गया है। इस उपवर्ग के पक्षी आकार मे बडे, किन्तु उनके पख बहुत छोटे होते हैं। इनके पर (Feathers) भी छोटे और अविकसित होते हैं। इसके साथ ही पर के बारब्यूलो (Barbules) मे हुक (Hooks) भी नही होते हैं।

शुतुरमुर्ग (Ostrich)

न उडने वाले पक्षियो मे सर्वप्रथम शुतुरमुर्ग (Ostrich Struthio) का नाम आता है। शुतुरमुर्ग पक्षी-जगत का सबसे बडा पक्षी है, जो खडी स्थिति में लगभग 8 फुट ऊँचा होता है। इसका वजन करीब चार मन तक होता है। यह अफ्रीका तथा अरब के रेगिस्तानो (Deserts) मे पाया जाता है। वस्तुत शुतुरमुर्ग अपने भारी-भरकम शरीर को लेकर

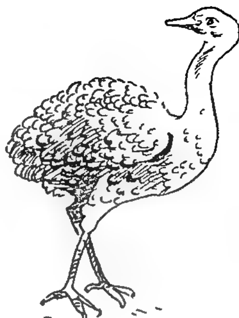
उडने मे असमथ है जो स्वाभाविक भी है। किन्तु यह तेज दौडने म अति निपुण होता है, फिर भी अक्सर शिकारियो की गोली का निशाना बन ही जाता है। शुतुरमुग दौडते वक्त अपने पखो को नाव क पाल की तरह तान लेता है जिससे पख मे हवा भर जाती है जो दौडने मे सहायक होती है। यह दौडते समय गोलाई मे चक्कर लगाता है। इसलिए शिकारी लोग इसे आसानी से घेरकर मार डालते है।



शुतुरमुर्ग की गदन लम्बी और चोच बडी होती है। इसका शरीर भारो और पूछ छोटी होती है। इसकी त्वचा (Skin) इतनी माटी होती है कि उससे चमडा भी बनाया जा सकता है। इसके पश्चपाद (Hind-limbs) काफी मजबूत और दौडने के अनुकूल होते हैं। नर शुतुरमुग काला एव मादा स्लेटी रग की हाती है। नर मे एक अकेला ठास शिश्न (Penis) होता है जिसे अवस्कर के भोतर एक कोप्ठ मे सिकोडा जा सकता है। मादा शुतुरमुग मे एक भगशिश्न होता है। मादा एक बार म रेत के गड्ढ मे 10-15 अड देती है जि हे नर-मादा दोनो मिलकर सेते हैं। शुतुरमुर्ग के अडे सबसे बडे अर्थात् एक डेढ किलोग्राम वजन के हाते है। प्रयास करने से ये पक्षी पालतू भी बनाये जा सकते हैं। कुछ आदिवासी जातियाँ तो इन पक्षियो को गाडी म भी जातती हैं। इनको वश मे करने के लिए हाथी के अकुश जैसी छडो का प्रयोग किया जाता है। स्वभाव मे ये पक्षी सीधे सादे होते हैं, कि तु गुस्सा आने पर अपनी चोच एव शक्तिशाली टाँगो से अपने शत्रु पर जोरो का प्रहार करते हैं।

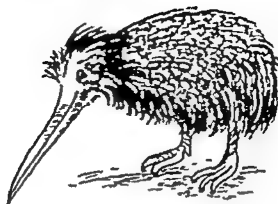
रीया (Rhea)

उडने मे असमर्थ पक्षियो मे रीया भी आता है जो शुतुरमुग से कुछ छोटा होता है। इसे दक्षिण अमेरिका का शुतुरमुर्ग भी कहते है, किन्तु यह वास्तविक शुतुरमुर्ग नही होता। रीया पम्पास क्षेत्रो मे पाया जाने वाला तथा धीमा दौडने वाला पक्षी है। वैसे इसकी शक्ल सूरत भी शुतुरमुग जैसी ही होती है। कितु इसके पख थोडे बडे होते हैं। इसकी टागो मे तीन अगूठे होते है। यह शाकाहारी (Herbivorous) पक्षी है तथा इसकी आदतें (Habits) लगभग शतुरमुग जैसी ही होती हैं। इनके अडे जमीन पर उथले घोसलो मे दिये जाते हैं, जिन्हे केवल नर पक्षी ही सेता है।


रीया

कीवी (Kiwi Apteryx)

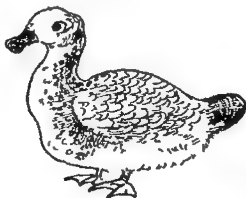
न्यूजीलैण्ड मे पाया जाने वाला पक्षी कीवी भी एक अनुडनशील पक्षी (Flightless Bird) है। यह एक स्थलीय (Terrestrial) पक्षी है जो आद्र जगलो मे पाया जाता है। यह रात्रिचर (Nocturnal) पक्षी स्वभावत कीटभक्षी (Insectivorous) होता है। इसकी चोच लम्बी होती है, जिसमे नोक पर नासाछिद्र (Nostrils) बने होते है। यह व्यवस्था अन्य पक्षियो से सवथा भिन्न है। इसकी आखे छोटी और दृष्टि पालियाँ ह्रासित (Reduced) होती हैं। इसकी गध सवेदना अन्य पक्षियो से अधिक विकसित होती है। इसकी टाँगो मे मात्र तीन उँगलिया होती हैं। नर कीवी मे एक शिश्न तथा मादा मे भगशिश्न होता है। ससार मे कीवी लुप्तप्राय है।



कीवी

डो-डो (Do Do)

बेडौल शरीर वाला मारीशस का पक्षी डो डो (Do Do) भी एक अनुडनशील पक्षी है जो बहुत ही अनोखे आकार का होता है। इसका वजन 25 30 किलोग्राम होता है। पक्षी विशेषज्ञों के अनुसार ये पक्षी



डोडो

अब पूर्णत लुप्त हो चुके हैं। उडने मे असमथ होने के कारण इनका खूब शिकार होता था।

एमू और केसोवरी

इसी प्रकार 'ऐमू' और 'केसोवरी' भी न उडने वाले पक्षियो की श्रेणी मे आते हैं। आस्ट्रेलियन पक्षी ऐमू रीया से छोटा होता है। इसके सिर पर सु दर कलँगी पायी जाती है। इसके पख भी शुतुरमुग की तरह छोटे होते हैं। यह भी अनुडनशील, किन्तु तेज दौडने वाला पक्षी है।

केसोवरी के सिर पर भी ऐमू की तरह कलँगी लगी होती है। यह तेज दौडता है। आवश्यकतानुसार केसोवरी अपनी मजबूत टागो से घातक हमला कर सकता है। यह एक शाकाहारी पक्षी है जो आस्ट्रेलिया तथा न्यूगिनी मे पाया जाता है। इसकी टागो मे भी तीन अँगूठे होते हैं।

पेंगुइन (Penguine)

पेंगुइन ठडे प्रदेशो मे पाया जाने वाला एक खूबसूरत किन्तु उडने मे असमर्थ पक्षी है। यह समुद्र के किनारे दक्षिणी अमेरिका, न्यूजीलैण्ड, आस्ट्रेलिया, हिन्द महासागर के दक्षिणी भागो मे पाया जाता है। इसकी ऊँचाई 3 4 फुट होती है तथा वजन 35 40 किलोग्राम तक होता है। दक्षिणी ध्रुव (South Pole) मे भी पेंगुइनो की अच्छी जनसख्या है। दूर से किसी वकील की तरह दिखने वाले ये पक्षी मनुष्य की भाँति खडे होकर चलते हैं तथा मनुष्य से दोस्ती करने के लिए सदव उत्सुक दिखते है। एक पत्नीत्व का पालन करने वाले इस पक्षी की मादा एक बार मे दो अडे देती है। ये अडे समुद्र मे दिये जाते हैं।

वस्तुत उडने मे असमर्थ पक्षियो का जीवन सदैव सकट मे रहता है। क्योकि न उड सकने के कारण शिकारियो की गोलियाँ आसानी से इन्हे मौत के घाट उतार देती हैं। यही कारण है कि ऐसे पक्षियो की सख्या निरतर घटती जा रही है। इनके अस्तित्व की सुरक्षा के लिए इनका सरक्षण बहुत आवश्यक है।

पक्षियो का आर्थिक महत्व

पक्षियो का महत्व केवल इसलिए नही है कि वे देखने और गाने म सुदर होते हैं बल्कि इनका आर्थिक महत्व भी है। दूसरे शब्दो मे पक्षियो मे अनेक उपयोगी वस्तुओ की प्राप्ति होती है। जैसे पक्षियो का मास और अडे खाने के काम मे आते हैं। प्रोटीन, विटामिन और खनिज लवणो से भरपूर अडे की उपयोगिता से सभी परिचित हैं। मुर्गी बत्तख, कबूतर तथा अन्य कई पक्षियो के अडे खाने के काम मे आते हैं। मुर्गी के मास और अडे को प्रोटीन का बढिया स्रोत माना जाता है। दूध के बाद मुर्गी का अडा सर्वोत्तम भोजन समझा जाता है। इतना ही नही, इन अडो का उपयोग टॉफी, केक, बिस्कुट, पेस्ट्री तथा अन्य खाद्य सामग्री बनाने मे भी होता है। साप, बिल्ली, नेवला आदि भी पक्षियो का भक्षण कर 'जीवो जीवस्य भोजनम' वाली उक्ति को चरितार्थ करते हैं। कुछ खास पक्षियो का मास बहुत पौष्टिक और स्वादिष्ट भी होता है जैसे मुर्गी के चूजे, कबूतर टर्की हरियल सारस आदि का मास। यही कारण है कि पक्षियो की अनेक प्रजातियो को पालतू बनाया गया। आजकल मुर्गी पालन (Poultry) हेतु भारत सरकार आर्थिक मदद कर रही है। यही कारण है कि हमारे देश मे मुर्गी के मास और अडे की खपत निरतर बढती जा रही है।

आपको यह जानकर बहुत आश्चर्य होगा कि चीन के लोग बतासी नामक पक्षी का घोसला भी खाने के रूप मे इस्तेमाल करते हैं। कहते है इस पक्षी के घोसले लार (Saliva) से बनाये जाते है जिसमे इसे पौष्टिक माना जाता है। भोजन ही नही अनेक दवाओ के निर्माण मे भी पक्षियो के पर और पेशियो (Muscles) का प्रयोग किया जाता है। कबूतर का मास पक्षाघात (Paralysis) से पीडित व्यक्ति के लिए हितकर माना

गया है। यूनानी और आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धतियो मे पक्षियो का बहुत महत्व है। मुर्गी के अडे से अनेक पौष्टिक दवाइयाँ बनायी जाती हैं। अनुसधान के क्षेत्र मे भी मुर्गी के अडे का बहुत महत्व है। इस पर अनेक प्रकार के जीव वैज्ञानिक (Biological) परीक्षण किए जाते हैं। उदाहरणार्थ बैक्टीरिया, वाइरस, कवक आदि के सवर्द्धन मे भी मुर्गी के अडे का प्रयोग किया जाता है। अर्थ यह है कि भोजन के साथ-साथ पक्षियो का औषध महत्व (Medicinal Value) भी कम नही है।

कृषि क्षेत्र मे भी पक्षियो की महत्वपूर्ण भूमिका है। अनेक पक्षी फसलो को नष्ट करने वाले कीटो को खाकर किसानो की मदद करते हैं। इस प्रकार जैविक नियत्रण (Biological Control) द्वारा पक्षी फसलो की पैदावार बढाने मे सहायता करते हैं। इसी प्रकार अनगिनत कीट-भक्षी (Insectivorous) पक्षी हजारो-लाखो टन कीट प्रति वर्ष खाकर फसलो की सुरक्षा करते हैं। अनेक मासाहारी (Carnivorous) पक्षी जैसे बाज उल्लू, उकाब इत्यादि चूहो, खरगोशो गिलहरियो को खाकर भी फसलो को नष्ट होने से बचाते हैं। इतना ही नही, कई पक्षी कीटो के लार्वा (जो पौधो की पत्तियो को खाते हैं) तथा हानिकारक कृमियो को भी खाकर फसल की सुरक्षा करते हैं।

पक्षियो की विष्ठा (Guano) खेतो के लिए उत्तम खाद का काम देती है। इसमे फास्फेट, नाइट्रोजन, कैल्शियम जैसे पोषक पदार्थ प्रचुर मात्रा म मौजूद रहते हैं। चिली के समुद्र पार वाले द्वीपो मे अनेक प्रवासी तथा समुद्री पक्षी प्रजनन (Reproduction) के लिए इकट्ठ होते हैं। फलत बहुत अधिक मात्रा मे विष्ठा एकत्र हो जाती है, जिसे अनेक कृषि प्रधान देशो मे निर्यात किया जाता है। खाद तक ही पक्षियो का महत्व सीमित नही है। पक्षीगण पौधो मे परागण (Pollination) की क्रिया भी सम्पन्न करते हैं। जाहिर है कि परागण का पौधो के जीवन मे बहुत महत्व है। फल खाने वाले पक्षी बीजो को दूर-दूर तक फैलाने मे सहायता करते हैं।

ऊपर वर्णित महत्वो के अतिरिक्त पक्षियो का सौन्दर्य एव व्यावसायिक महत्व (Aesthetic and Commercial Value) भी है। पक्षियो के परो से बनी गर्म पोशाकें उत्तरी ध्रुव की भयकर ठड से बचाने मे सहायक हैं। रग-बिरगे परो से न केवल घरो को सजाया जाता है, वरन् आदिवासी जन-जातियाँ उनसे अपना शरीर भी सजाती हैं। खेल

सामग्री जैसे बैडमिंटन की कॉक भी पक्षी-परो से ही निर्मित हैं। छोट और मुलायम परो से दुकानो को साफ रखने के लिए झाडन बनाये जात हैं। मुगल काल मे तो पक्षियो के लम्बे और मजबूत परो से लेखनी भी बनायी जाती थी। मोर के खूबसूरत पखो से हाथ के सुदर पखे बनाये जाते है। विविध मासाहारी पक्षी जैसे गिद्ध, कौआ, उकाब आदि अप मार्जक (Scavanger) पक्षी हैं, जो जानवरो का सडा-गला मास खाकर सफाई का काम करते हैं। इस प्रकार ये पक्षी रोगो को फैलने से रोकत हैं। प्राचीन काल मे कबूतरो की विभिन्न प्रजातियाँ (Species) पत्र वाहक का कार्य करती थी। अनेक पक्षी ऋतुओ मे होने वाले परिवर्तनों का सकेत देते हैं जसे कोयल का कूकना वसत के आगमन का सकेत देता है। मोर का नाचना वर्षा होने का सूचक है। इस तरह यह कहना अनुचित न होगा कि पक्षियो का आर्थिक महत्व (Economic Importance) किसी भी अन्य जीव से कम नही है।

पक्षियो का वर्गीकरण

ससार मे हजारो किस्म के पक्षी पाये जाते हैं। उन सबका एक साथ अध्ययन करना सभव नही है। पक्षी वैज्ञानिको ने अध्ययन की सुविधा के लिए पक्षियो का वर्गीकरण (Classification) किया है। किन्तु वर्गीकरण के पूव हमारे लिए पक्षियो के विशिष्ट लक्षणो (Specialized Characters) को जानना आवश्यक है।

पक्षियों के विशिष्ट लक्षण

1 सभी पक्षी नियततापी (Warm blooded) कशेरुकी (Vertebrate) प्राणी हैं, जो विशेष रूप से वायवीय जीवन (Aerial mode of Life) के लिए अनुकूल होते हैं।

2 इनका बाह्य ककाल (Exo-skeleton) पिच्छो (Feathers) के रूप मे होता है।

3 इनके अग्रपाद (Fore-limbs) पखो (Wings) मे रूपातरित होते हैं।

4 इनके पश्चपाद (Hind-limbs) चलने, पक्षिसाद अथवा तैरने के लिए अनुकूलित होते हैं तथा उनमे चार उँगलियाँ होती हैं।

5 पक्षियो मे त्वचा ग्रथियो (Dermal glands) का अभाव होता है। केवल पूछ के आधार पर तेल ग्रथियाँ होती है।

6 जबडे (Jaws) आगे की ओर निकलकर दतविहीन (Teethless) चोच बनाते हैं।

7 इनकी ग्रीवा (Neck) काफी लचीली तथा चल (Motile) होती है।

8 पक्षियो का अन्त ककाल (Endo-skeleton) हल्का तथा वातिल

अस्थियों (Pneumatic Bones) का बना होता है।

9 इनका श्वसन तंत्र 'Respiratory System) अधिक फला हुआ तथा वायु कोणो (Air Sacs) द्वारा अनुपूरित होता है।

10 पक्षियों के हृदय स्तनधारियों की तरह चार-वेश्मी (Four chambered) होते हैं।

11 रक्त की लाल रक्त कणिकाएँ (RBC) अडाकार, केन्द्रक युक्त (Nucleate) तथा उभयोत्तल होती हैं।

12 पक्षियों मे लिंग (Sex) पृथक होते हैं तथा लैंगिक द्विरूपता (Sexual Dimorphism) सुव्यक्त होती है।

13 मादा पक्षियों मे केवल बाँया अडाशय (Left Ovary) ही पाया जाता है। दायाँ अडाशय न्यूनाधिक रूप मे पूरी तरह ह्रासित (Reduced) होता है।

14 पक्षियों के अडे बड़े, पीतयुक्त (Yolky) तथा खोलयुक्त (Shelled) होते हैं। अडे के अन्दर पीतक (Yolk) की मात्रा अधिक होती है और उसके ऊपर अल्बूमेन चढा होता है।

15 पक्षियों मे निषेचन (Fertilization) आन्तरिक (Internal) होता है।

16 पक्षियों मे पैतृक-रक्षण (Parental Care) अधिक विकसित होता है।

वर्गीकरण (Classification)

सब क्लास (Sub class) I—ऑर्किऑर्निथीस (Archaeornithes)

(i) इसके अतर्गत जुरैसिक काल के बाद के सभी जीवाश्म पक्षी (Fossil Birds) आते हैं।

(ii) इनके जबडे दन्तयुक्त होते हैं।

(iii) पादो पर शल्क होते है और प्रत्येक अग्रपाद मे तीन अगुलियाँ होती हैं।

(iv) पूछ लबी होती है और इस पर दो कतारो मे पिच्छ लगे रहते हैं।

उदाहरण आर्कियोप्टेरिक्स (Archaeopteryx)

सब क्लास (Sub class) II—निऑर्निथीस (Neornithes)

(i) इसके अतगत सभी जीवित एव कुछ लुप्त पक्षी आते हैं।

(ii) इनके जबड़े दतहीन (Teethless Jaw) होते हैं।

(iii) पूछ छोटी होती है और पिच्छ अर्द्धवृत्ताकार क्रम मे लगे होते हैं।

(iv) अग्रपादो मे नखर (Claw) नही होते।

इस सब क्लास को तीन सुपर आर्डरो (Super orders) मे विभक्त किया गया है—

सुपर आर्डर 1—ओडॉन्टोग्नेथी (Odontognathae)

(i) ये दन्तयुक्त पक्षी हैं जिनमे पाइगोस्टाइल (Pygostyle) अनुपस्थित होती है।

(ii) अग्रपादो की अस्थियाँ अल्पविकसित होती हैं।

(iii) ये विलुप्त पक्षी हैं।

उदाहरण हेस्पेरार्निस, इक्थियॉर्निस।

सुपर आर्डर 2—पेलियोग्नेथी या रेटिटी (Ratitae)

(i) ये बड़े आकार वाले पक्षी हैं जो उड़ने मे असमर्थ होते हैं। इनमे तेज दौड़ने की क्षमता होती है।

(ii) पख ह्रासित या होते ही नही हैं।

(iii) इनके दाँत नही होते।

इसे निम्नलिखित आडरो मे विभक्त किया गया है—

आडर 1 स्ट्रुथिआर्निफॉर्मिस (Struthiorniformes)

(i) ये सबसे बड़े जीवित पक्षी हैं जिनकी गदन लम्बी होती है।

(ii) प्रत्येक पश्चपाद मे दो अंगुलियाँ होती हैं।

उदाहरण शुतुरमुग (Struthio)

आडर 2 केसुएरीफॉर्मिस (Casuariformes)

(i) गदन छोटी होती है तथा गदन व शरीर पर घने पिच्छ होते हैं।

(ii) शीर्ष पर टोप के समान अस्थिल गाँठें होती हैं।

(iii) पश्चपाद मे तीन अगुलियाँ होती हैं।

उदाहरण केसुएरिस (Casuaris)

आडर 3 एप्टेरिजाईफॉर्मिस (Apterygiformes)

(i) ये छोटे स्थलचर पक्षी हैं जिनकी गर्दन छोटी तथा चोच लम्बी होती है।

(ii) पख लुप्तावेषी (Vestigeal) तथा निष्क्रिय होते हैं।

(iii) प्रत्येक पश्चपाद मे चार अगुलियाँ होती हैं।

उदाहरण एप्टेरिस (Apteryx—Kiwi)

आर्डर 4 रीहिफॉर्मिस (Rheiformes)

(i) शीर्ष एव गर्दन आशिक रूप से पिच्छो द्वारा ढके रहते हैं।

(ii) प्रत्येक पश्चपाद मे तीन अँगुलियाँ होती हैं।

(iii) पख अपेक्षाकृत बडे किन्तु निष्क्रिय होते हैं।

उदाहरण रीहा (Rhea) (दक्षिणी अमेरिका मे उपलब्ध)

आर्डर 5 डाइनोर्निथिफॉर्मिस (Dinornithiformes)

ये न्यूजीलैण्ड मे पाये जाने वाले भीमकाय पक्षी हैं, जो उडने में असमर्थ होते है। ये कुछ समय पूर्व विलुप्त हो गये हैं।

उदाहरण डाइनोर्निस (*Dinornis*)

आर्डर 6 एपिऑर्निथिफॉर्मिस (Aepyornithiformes)

(i) पख लुप्तावेषी (Vestigeal) होते हैं।

(ii) प्रत्येक पश्चपाद मे चार अगुलियाँ होती हैं।

(iii) ये विशाल शरीर वाले पक्षी हैं जिनमे उडने की क्षमता नहीं होती।

(iv) इसके अन्तर्गत अधिकाश जीवाश्म (Fossil) पक्षी आते हैं।

उदाहरण एपिऑर्निस (Aepyornis)

आर्डर 7 टाइनेमिफॉर्मिस (Tinamiformes)

(i) ये तेजी से भागने वाले पक्षी होते हैं। जिनमे उडने की क्षमता नही होती।

(ii) पख सुविकसित होते हैं और स्टरनम (Sternum) नौतलित (Keeled) होती है।

(iii) पश्चपादो मे Perching की क्षमता नहीं होती।

उदाहरण - टाइनेमस (Tinamus)

सुपर आर्डर 3—निओग्नेथी (Neognathae)

(i) ये आधुनिक पक्षी हैं जो विश्व के प्राय सभी भागो मे पाये जाते हैं।

(ii) इनकी चोच दतरहित (Teethless) होती है।

(iii) पख सुविकसित होते हैं।

इस सुपर आर्डर को निम्न आडरो मे बाँटा गया है—

आडर 1 आन्सेरिफॉर्मिस (Anseriformes)

(i) ये जलीय पक्षी हैं जिनकी चोच चौडी एव दबी होती है।

(ii) पश्चपाद छोटे तथा जालयुक्त (Webbed) होते हैं।

(iii) जिह्वा (Torgue) मोटी और मासल होती है।

उदाहरण बत्तख (Duck), हस (Cygnus)

आडर 2 कोलम्बिफॉर्मस (Columbiformes)

(i) इनकी चोच छोटी होती है।

(ii) चोच अनाज के दाने व फल खाने के अनुकूल होती है। क्रॉप (Crop) बडा होता है।

(iii) पाद Perching किस्म के होते हैं, यानि पेड की डाली को मजबूती से पकडने मे समर्थ होते हैं।

उदाहरण कबूतर (Columba livia)

आडर 3 सिटैसिफॉर्मिस (Psittaciformes)

(i) इनकी चोच नुकीली, मजबूत तथा फलो को चीरने के अनुकूल होती है।

(ii) ऊपरी चोच निचली चोच से बडी होती है तथा ऊपर-नीचे स्वतन्त्र रूप से हिल-डुल सकती है।

(iii) पाद Perching किस्म के होते हैं।

उदाहरण तोता (Psittacula—Parrot)

आडर 4 क्यूक्यूलिफॉर्मिस (Cuculiformes)

(i) चोच थोडी सी मुडी होती है तथा इसमे एक गहरी खाँच होती है। यह फलो को कुतरने के अनुकूल होती है।

(ii) पख लब और नुकीले होते हैं।

उदाहरण कोयल (Eudynamis—Koel)

आडर 5 पसेरिफॉर्मिस (Passeriformes)

(i) पाद Perching के अनकूल होते हैं।

(ii) पाद मे चार अँगुलिया होती है जिनमे से तीन आगे की ओर तथा एक पीछे की ओर उन्मुख रहती है।

उदाहरण कौआ (Corvus—Crow)

घरेलू चिडिया (Passer domesticus)

आडर 6 स्ट्राइजिफॉमिस (Strigiformes)

(i) ये रात्रिचर (Nocturnal) शिकारी पक्षी हैं।

(ii) इनके पाद वस्तुओ को पकडने के अनुकल होते हैं।

(iii) चोच छोटी और अकुश के समान होती है।

उदाहरण उल्लू (Bubo—Owl)

आर्डर 7 फाल्कोनिफार्मिस (Falconiformes)

(i) ये दिनचर (Diurnal) शिकारी पक्षी है।

(ii) इनकी चोच सुदृढ, मुडी हुई तथा शिकार करने के अनुकूल होती है।

(iii) पश्चपाद शक्तिशाली होते है और अगुलियो पर तेज व नुकील नखर (Claw) होते है।

(iv) इनमे उडने की प्रचुर क्षमता होती है।

उदाहरण चील (Kite), बाज (Falcon), गिद्ध (Hawk)

आर्डर 8 गैलिफॉर्मिस (Galliformes)

(i) ये Game Birds ह जो तेज दौडते है।

(ii) चोच छोटी व बीज खाने के अनकूल होती है।

(iii) ये थोडी दूर तक ही उड सकते हैं किन्तु उडने की गति (Speed) तीव्र होती है।

उदाहरण मुर्गा (Gallus—Fowl), मोर (Peacock)

आडर 9 पिसिफॉर्मिस (Pisciformes)

(i) ये काष्ठछेदक (Wood boring) पक्षी हैं।

(ii) इनकी चोच सुदृढ, शक्तिशाली एव रुखानी के समान होती है।

(iii) जिह्वा लबी और बहि सारी होती है।

उदाहरण कठफोडवा (Woodpecker)

आर्डर 10 कोरेसिआईफॉर्मिस (Coraciformes)

(i) इनकी चोच अत्यधिक विकसित, नुकीली एव दरातीदार तथा जगली फलो के खाने के अनुकूल होती है।

(ii) पाद नखरयुक्त तथा Perching किस्म के होते हैं।

(iii) पूँछ पर लंबे पुच्छ-पिच्छ (Tail feathers) लगे होते है।
उदाहरण हानबिल (Dichoceros—Hornbill) तथा
किंगफिशर (Kingfisher)

आडर 11 गैवीफॉर्मिस (Gaviformes)
(i) ये समुद्री पक्षी हैं जिनमे जालक (Web) लगे होते हैं।
(ii) पूँछ पर छोटे आकार के 18-20 दृढ पिच्छ होते है।
उदाहरण गेविया (Gavia—Loon)

आडर 12 पोडिसिपिटिफॉर्मिस (Podicipitiformes)
(i) ये पालिमय पादो वाले जलीय पक्षी हैं।
(ii) पाद शरीर पर काफी पीछे की ओर स्थित होते है।
उदाहरण पोडिसेप्स (Podiceps)

आडर 13 ग्रुआईफॉर्मिस (Gruiformes)
(i) ये नदियो और झीलो के किनारे दलदली भूमि पर रहने वाले पक्षी हैं।
(ii) इनकी उड्डयन क्षमता (Flying Capacity) कम होती है।
(iii) ये सर्वभक्षी (Omnivorous) पक्षी हैं।
उदाहरण सारस (Crane), रेलस (Rallus)

आडर 14 पेलेकैनिफॉर्मिस (Pelecaniformes)
(i) ये जलीय पक्षी हैं जिनके पाद छोटे होते हैं तथा अँगुलियो के बीच जालक (Web) होते हैं।
(ii) निचली चोच मे Gular Pouch होता है।
उदाहरण कारमोरेण्ट्स (Cormorants),
पेलिकन्स (Pelecans—Pelicans)

आर्डर 15 साइकोनिफॉर्मिस (Ciconiformes)
(i) ये दलदली भूमि पर रहने वाले पक्षी हैं।
(ii) इनकी गदन व टाँगें लम्बी होती हैं।
(iii) अँगुलियो मे जालक (Web) नही होते।
उदाहरण बगुला (Ciconia—Strok), सारस (Ardea)

आडर 16 केसाड्रुआईफॉर्मिस (Cassadruiformes)
उदाहरण ग्रैकुला (Gracula—Hill Mayna)

पक्षियो में आत्महत्या

मनुष्य मे आत्महत्या जैसी घटना एक आम बात है। किन्तु पक्षी भी आत्महत्या करते हैं, यह बात कुछ अटपटी लगती है। किन्तु यह सत्य है कि प्रति वर्ष हजारो पक्षी सामूहिक आत्महत्या के शिकार होते हैं। भारत के असम राज्य मे एक छोटा-सा गाँव है 'जतिगा' (Jatinga) जहाँ प्रति वर्ष अनगिनत पक्षी आत्महत्या करते हैं।

अनबूझ पहेली

जतिगा पहाडो पर पक्षियो की सामूहिक आत्महत्या, सदियो से एक पहेली बनी हुई है। दूर दराज से विभिन्न प्रकार के पक्षी इस पहाडी पर अपना सिर मारते है और गिरने के पश्चात् अन्न जल छोडकर अपने प्राण त्याग देते हैं। यह दुखद घटना प्रत्येक वर्ष अगस्त से अक्टूबर माह के बीच घटित होती है। और इस अवधि मे भी सितम्बर माह मे पक्षियो द्वारा आत्महत्या की घटना विशेष रूप से देखने का मिलती है। कृष्ण-पक्ष की रातों मे विभिन्न प्रजातियो के सैकडो पक्षी एक सीमित क्षेत्र के ऊपर उडने लगते हैं। वस्तुत ऐसा तब होता है, जब दक्षिणी हवा बह रही हो और सघन कोहरा छाया हो। ऐसे मौसम मे अगर जतिगा रेलवे स्टेशन और ग्राम स्वास्थ्य केन्द्र (Primary Health Centre) के बीच किसी स्थान पर प्रकाश का स्रोत मौजूद हो, तो आकाश मे उडते पक्षी तुरत प्रकाश की ओर आकृष्ट होकर गिरने लगते हैं। जतिगा के ग्रामीण लोग ऐसे मौसम मे मशाल या पेट्रोमैक्स जलाकर रख देते हैं और नीचे गिरने वाले पक्षियो को पकडकर अपने घर ले जाते हैं।

जतिगा नामक इस छोटे गाँव ने पिछले दशको मे भारत के ही नही, वरन् सम्पूर्ण विश्व के पक्षी विशेषज्ञो (Ornithologists) का ध्यान

आर्डर 17 चैरेड्रिफॉर्मिस (Charadriformes)

(i) ये दलदली स्थानो एव पानी मे रहने वाले पक्षी हैं।

(ii) चोच लम्बी होती है तथा जाल केवल अँगुलियो के आधार पर ही होते हैं।

उदाहरण लेरस (Larus—Gulls),
सैण्डपाइपर (Calidris—Sandpiper)

आर्डर 18 माइक्रोपोडिफॉर्मिस (Micropodiformes)

(i) ये तेज उडने वाले कोटभक्षी पक्षी है।

(ii) चोच छोटी व दुबल होती है।

(iii) पाद छोटे होते हैं।

उदाहरण एपस (Apus—Swift),
हमिंग बर्ड (Trochus—Humming Bird)

अपनी ओर आकृष्ट किया है। दूसरे शब्दों में जतिंगा पक्षी वैज्ञानिकों के लिए एक चुनौती बन गया है। यह स्पष्ट है कि यहां पक्षियों द्वारा आत्महत्या की घटना बहुत पहले से हो रही है, किन्तु पिछले कुछ वर्षों में ही इस समस्या पर शोध एवं गंभीर अध्ययन किया गया है। जतिंगा का क्षेत्रफल तकरीबन दो वर्ग किलोमीटर है और इस क्षेत्र में लगभग तीस ऐसे स्थान हैं जहाँ ग्रामवासी पक्षियों को आकर्षित करते हैं। कहते हैं, सन् 1905 में नागा जाति के कुछ लोग रात्रि के समय अपने पशुओं की खोज में लैम्प आदि लेकर इस गाँव में गए, तो सहसा अनेक पक्षियों ने लैम्प की रोशनी का चक्कर लगाना शुरू कर दिया। तत्पश्चात पक्षीगण धीरे-धीरे नीचे गिरने लगे। नागा जाति के लोग इस घटना से बहुत घबरा गए। उन्हें लगा कि यह कोई दैवी घटना है।

वैज्ञानिक अनुसंधान

अनेक पक्षी वैज्ञानिकों ने इस रहस्यमयी घटना का वैज्ञानिक अध्ययन किया है। अब यह स्पष्ट हो चुका है कि लगभग 30 40 जातियों के पक्षी यहाँ आत्महत्या करते हैं। इनमें हरियल, जलमुर्गी, बगुला, फाख्ता आदि प्रमुख हैं। एक वर्ष तो तीन महीनों (अगस्त से अक्टूबर तक) में कोई सात हजार पक्षियों ने असमय जान दे दी थी। भारतीय जीव जन्तु सर्वेक्षण (Zoological Survey of India) के वैज्ञानिक डॉ० सुधिन सेनगुप्ता ने जतिंगा में पक्षियों के विचित्र व्यवहार का विशिष्ट अध्ययन किया है। उन्होंने 20 पक्षियों को प्रति घंटे की दर से जमीन पर गिरते देखा है। पिछले वर्ष गये वैज्ञानिकों के एक दल ने एक नया रहस्योद्घाटन किया है। उनके सर्वेक्षण के अनुसार इस बार जतिंगा पहाड़ी पर बेशुमार पक्षियों के साथ-साथ हजारों कीट-पतंगों ने भी आत्महत्या की।

प्रसिद्ध पक्षीशास्त्री डॉ० सेनगुप्ता के अनुसार जतिंगा में पक्षियों की सामूहिक आत्महत्या के लिए उस क्षेत्र की पहाड़ियों में निहित चुम्बकीय परिवर्तन जिम्मेवार है। प्रेसिडेंसी कॉलेज, कलकत्ता के भूगर्भशास्त्री डॉ० एस० घटक और कलकत्ता साइंस कॉलेज के भौतिकविद डॉ० ए० देव ने इस अलौकिक सामूहिक आत्महत्या के कारणों का पता लगाने के लिए उस क्षेत्र की चट्टानों तथा चुम्बकीय प्रारूपों का अध्ययन किया है। यह भी अनुमान लगाया गया है कि रात को आराम

करते हुए पक्षी तेज हवा और कोहरे से जग कर प्रकाश स्रोत की ओर आकर्षित होते हैं। किन्तु यह बात समझ मे नही आती कि पक्षी केवल एक विशेष पटटी—जतिंगा रेलवे स्टेशन मे प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र के बीच की पटटी की ओर ही क्यो जाते हैं? बहुत सम्भव है वहां की भौगोलिक स्थिति और चुम्बकीय शक्ति एक विशेष समय मे असर दिखाती हो। या फिर तेज हवा और वर्षा के कारण वातावरण मे बिजली का उत्पन्न होना पक्षियो के व्यवहार मे परिवर्तन कर देता हो।

ग्रामीणो द्वारा जलाये गये लैम्प के पास पक्षी सम्मोहित होकर गिर जाते हैं और फिर भागने की कोई कोशिश नही करते। इस अवस्था मे वे तब तक पड़े रहते हैं जब तक वे मर नही जाते।

श्री एच० पी० फूकन के अनुसार वर्ष के तीन महीने (अगस्त से अक्टूबर) मे जतिंगा क्षेत्र के ऊपर आकाश मे घना कोहरा छाया रहता है। ऐसे मे रात्रि के समय जब पक्षी साहसिक ढग से आहार की तलाश मे निकलते हैं, तो वे दिग्भ्रमित हो जाते हैं तथा दिशा भ्रम के कारण प्रकाश की ओर आकृष्ट होते हैं तो ग्रामीण उन्हे डडो से मार गिराते हैं। उनके अनुसार एक मौसम मे ग्रामीण लगभग 17,000 पक्षियो को मार डालते हैं। इनमे हर उम्र के पक्षी शामिल हैं। किन्तु यह आश्चर्य का विषय है कि कुछ पक्षी मसलन मना, बुलबुल और घरेलू गौरया इस घटना से अप्रभावित रहते हैं।

जूलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया (ZSI) द्वारा चलायी जा रही जतिंगा पक्षी परियोजना मे सबद्ध वैज्ञानिक इस पहेली को सुलझाने मे लगे है। वैसे इसमे कोई दो मत नही है कि इस घटना का सबध जतिंगा के भू-चुम्बकीय गुणधर्म से अवश्य है। फिर सघन कोहरे और दक्षिणी हवा का प्रवाह भी पक्षियो को दिग्भ्रमित करता है। जतिंगा के मानसून एव भू विज्ञान के परिप्रेक्ष्य मे वैज्ञानिको ने इस विचित्र घटना का हल ढूंढने की कोशिश की है।

कुछ विशेषज्ञो के अनुसार भारत के कुछ अन्य भागो तथा श्रीलका में भी जतिंगा से मिलती-जुलती घटनाए दिखायी पडती हैं। फिर भी जतिंगा मे पक्षियो की आत्महत्या उनसे भिन्न और आश्चयजनक है। आशा है कि भविष्य मे इसके कारणो की सही जानकारी मिल जायेगी और तमाम निरीह पक्षियो को आत्महत्या करने से बचाया जा सकेगा।

राष्ट्रीय पक्षी मोर

परिचय

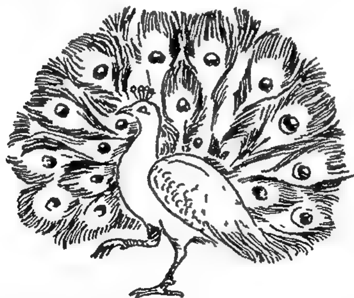
राष्ट्रीय पक्षी मोर से भला कौन भारतीय अपरिचित होगा ? मोर के पखो की सुदरता का सानी नही है। इसी प्रकार मयूर नृत्य भी बेमिसाल होता है। कहावत है कि भगवान श्रीकृष्ण ने अपने माथे पर 'मोर-मुकुट' धारण किया था। साहित्यकारो ने भी प्रसगवश साहित्य मे मोर के खूबसूरत पखो को खूब सराहा है। इसमे कोई दो मत नही कि भारत के पक्षी जगत मे मोर सर्वाधिक सुदर है। वर्षा ऋतु मे जब आकाश बादलो से आच्छादित होता है तो मोर नृत्य द्वारा अपनी प्रसन्नता का प्रदर्शन करता है। सच पूछिए तो मोर के बिना पावस ऋतु की कल्पना भी अच्छी नही लगती। मोर की सुदरता एव सरलता को ध्यान मे रखते हुए ही इसे 'राष्ट्रीय पक्षी' (National Bird) के विशिष्ट सम्मान से सुशोभित किया गया है। भारतीय मोर को वैसे तो कई नामो से जानते है—मसलन मयूर, मजा, ताऊस, मुरैला इत्यादि, किन्तु इसका जन्तु शास्त्रीय नाम (Zoological name) है—पावो ग्रिस्टेटस (Pavo gristatus)।

मोर और मोरनी के रूप-रग मे काफी अतर होता है। मोर मोरनी की अपेक्षा अधिक खूबसूरत होता है। नर के सिर पर सुदर कलगी लगी होती है। नर की गदन चमकीली और गाढी नीली होती है। मोर के पख लम्बे और रगीन होते है। मादा भूरे रग की होती है। किन्तु मादा का रग नर की तरह चमकीला और आकषक नही होता।

निवास

मोर भारतवष के अधिकाश भागो मे पाया जाता है। राजस्थान,

ब्रजभूमि तथा चित्रकूट मे तो यह बहुतायत मे पाया जाता है। किन्तु सिंधु, उत्तर पूर्वीय असम आदि क्षेत्रो मे यह मुश्किल से दिखाई पडता है। जगलो के नष्ट होने के साथ साथ इनकी सख्या भी कम होती जा रही है। वृन्दावन मे सुबह होते ही हजारो मोर एक साथ कूकने लगते हैं। इसकी बोली कुछ ककश होती है। बादल के गरजने पर या बदूक छोडने पर मोर जोर-जोर से कूकने लगता है। नदी और झील के किनारे मोर को बहुत प्रिय हैं। शाम के वक्त मोरो के झुड के झुड नदी के किनारे पानी पीने के लिए इकट्ठा होते है। भारत के अतिरिक्त श्रीलका, बर्मा और अफ्रीका मे भी ये काफी सख्या मे पाये जाते है। अफ्रीका का सफेद मोर तो ससार भर मे प्रसिद्ध है। भारतीय मोर और अन्य देशो के मोर मे काफी कुछ भिन्नता होती है। वैसे सुदरता मे भारतीय मयूर सबसे ज्यादा सुदर होता है।



मोर एक सर्वभक्षी (Omnivorous) पक्षी है। मेढक तथा सर्प इसका प्रिय आहार है। आम तौर पर यह घास-फूस, दाना, बीज, कीडे-मकोडे इत्यादि भी खाता है। दिन भर भोजन की तलाश करने के पश्चात् मोर रात्रि विश्राम हेतु निकट के जगल मे चला जाता है। आवश्यकतानुसार यह कई तरह की बोली भी बोलता है। मोर एक

बहुपत्नीक पक्षी (Polygamous Bird) है। और मोरनिया को एक मोर के पास देखा जा सकता है। गर्मी में मोर बहुत सुन्दर और भड़कीली पोशाक धारण कर लेता है। यह पोशाक रंगीन और खूबसूरत पंखों की होती है। प्रजनन ऋतु में नर मयूर का सौन्दर्य देखते ही बनता है। बादलों के गरजने पर नर मयूर मस्त होकर नाचने लगता है और मोरनियाँ नर मयूर के इर्द गिर्द इकट्ठी हो जाती हैं। नर मयूर घंटों मस्त होकर नाचता रहता है। प्रसन्नता की उस स्थिति में मोरनी मोर के साथ जोड़ा बाँधने के लिए तैयार हो जाती है। जब कभी मोर की नजर अपने पैरों पर पड़ती है तो वह निराश हो जाता है। क्योंकि उसके पाँव कुरूप होते हैं। नर मयूर बरसात में कई-कई मोरनियों के साथ बारी-बारी से जोड़ा बाँधता है। जोड़ा बाँधने के बाद मादा मोर अंडे देती है। अन्य पक्षियों की तरह मोर पेड़ पर अपना घोंसला नहीं बनाते। मोरनी अक्सर झाड़ी में या जमीन पर अंडे रखती है। काल क्रम में अन्तराल में अंडों से नन्हे शिशु उत्पन्न होते हैं।

आर्थिक महत्व

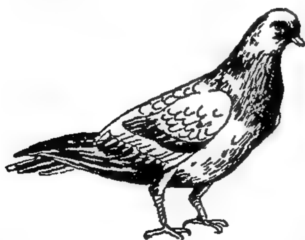
मानव समाज के लिए मोर एक उपयोगी पक्षी है क्योंकि यह कीड़े मकोड़े, सर्प तथा अन्य हानिकारक जीव-जन्तुओं को खाकर सफाई का काम करता है। मोर जहाँ भी रहते हैं वहाँ सर्प नजर नहीं आते। चूंकि मोर का माँस बहुत स्वादिष्ट होता है, अतः शिकारी इसका शिकार बेरहमी से करते हैं। लेकिन राष्ट्रीय पक्षी घोषित होने के बाद अब इसका शिकार प्रतिबंधित हो चुका है।

प्राचीन भारत में भी मयूर का बहुत महत्व था। बड़े-बड़े राजा-महाराजा इसे शौक से पालते थे। कहते हैं शाहजहाँ ने लाखों रुपये खर्च कर रत्न-जड़ित 'मयूर सिंहासन' बनवाया था, जिसकी आकृति हू-ब-हू मोर जैसी थी। इसे 'तख्ते ताऊस' भी कहते हैं। भारत आने वाले विदेशी बड़े शौक से मयूर अपने साथ ले जाते थे। मयूर जैसे सुंदर और उपयोगी पक्षी का संरक्षण हर दृष्टि से महत्वपूर्ण है। निस्संदेह मयूर पक्षियों की दुनिया में चार चाँद लगाने वाला पक्षी है।

शाति का प्रतीक कबूतर

परिचय

कबूतर भारत का एक चिरपरिचित एव सर्वसुलभ पक्षी है। हमारे देश मे कबूतर पालने की प्रथा बहुत पुरानी है। वेद-पुराणो मे भी कबूतर की चर्चा मिलती है। यजुर्वेद मे तो मनुष्य को कपोत की तरह प्रात यानी ब्रह्म-मुहूर्त मे उठने की सलाह दी गयी है। यजुर्वेद के ही एक अन्य मन्त्र मे कहा गया है—'मित्रावरुणाभ्या कपोतान' अर्थात् मित्र और वरुण यानी मित्रता, स्नेह और परस्पर वरण के लिए कपोत (कबूतर) को देखें।



स्वभाव तथा निवास

पक्षी वैज्ञानिको के अनुसार कबूतर एक अहानिकर, डरपोक तथा समूहचारी पक्षी है। यह स्वभावत शाकाहारी होता है जो अनाज के

दाने फल सब्जियाँ, बीज आदि खाकर जीवनयापन करता है। वैसे कभी-कभी यह लघु कीटो, पौधो को भी खा लेता है। अपने निवास स्थानो से ये नियमपूर्वक सुबह शाम, भोजन की तलाश म निकटवर्ती खेतो मे चले जाते है।

कबूतरों के पख आकाश मे अच्छी उडान भरने के अनुकूल होते हैं। उडने के साथ-साथ कबूतर जमीन पर भी अच्छी तरह चलत फिरते है तथा उनमे द्विपादी सचलन (Bipedal Locomotion) देखने को मिलता है। कबूतर कोयल या पपीहे की भाँति गाते नही हैं, किन्तु वे एक खास किस्म की आवाज पैदा करते हैं। कबूतरों की 'गुटुरु गू'-'गुटुर-गू' की आवाज सुनने मे बहुत अच्छी लगती है। अक्सर कबूतर अपने गले की गहरी चमकदार थैली फुलाकर 'गुटुरु गूँ' की मधुर आवाज करता हुआ अपनी प्रियतमा के इर्द-गिर्द नाचकर उसे रिझाने का प्रयास करता है। स्वभावत कबूतर प्रेमी एव विलासी होता है। कबूतरो म एकपत्नीक जीवन (Monogamous life) पाया जाता है। अर्थात एक नर कबूतर तमाम उम्र केवल एक ही मादा के साथ रहता है और उसी के साथ मैथुन (Copulation) करता है। कबूतरो का दाम्पत्य-प्रेम प्रसिद्ध है। इसमे कोई दो मत नही कि कबूतर का जीवन एक सुखी दाम्पत्य जीवन का सुदर उदाहरण है। पक्षियों मे कबूतर ही एक ऐसा पक्षी है, जिसके नर मादा आठो पहर एक-दूसरे से अलग नही होते और सदैव प्रेम-भाव प्रदर्शित करते नजर आते हैं। प्राय नर और मादा कबूतर को घर की छतो, आँगन या बरामदे म गुटुरु-गूँ गुटुरु गू करके थिरकते और चोच मे चोंच मिलाकर प्रणय-भाव प्रदर्शित करते सहज ही देखा जा सकता है।

मैथुन के दौरान नर-मादा का उनके अवस्कर सिरो पर अस्थायी सयोजन और भीतरी निषचन (Internal Fertilization) होता है। कबूतर अडप्रजनक (Oviparous) पक्षी है। इसके अडे घोसलो मे दिये जाते हैं। कबूतर के घोसले बिना किसी कारीगरी के छोटे-छोटे तिनको घास फूस के बने होते हैं। वैसे अधिकाश कबूतर घोंसला नहीं बनाते हैं। मकानो के कार्निस, छज्जे, रोशनदान आदि पर ही ये रात गुजार देते हैं और वही मादा कबूतर अडे देती है। नर-मादा अपने शरीर की गर्मी से अडे सेते हैं। तकरीबन एक पखवाडे मे अड से बच्चे निकल आते हैं। ये बच्चे परविहीन (Wingless) तथा असहाय होते हैं। मादा और नर कबूतर

अपने क्रॉप (Crop) से निकले हुए वसीय, गाढे तथा सफेद स्राव को बच्चो को पिलाते हैं। यह स्राव कपोत-दुग्ध (Pigeon's milk) कहलाता है, जो नन्हें कपोत के लिए बहुत पौष्टिक और जीवनदायी आहार होता है। कबूतरो मे पैतृक-रक्षण (Parental Care) तथा गृहगामी (Homing) प्रवृत्ति अन्य जीवो की अपेक्षा अधिक विकसित होती है। मुर्गी की तरह कबूतर भी वर्ष भर अडा देते रहते है। किन्तु मुख्यत इनका प्रजनन काल दिसम्बर से मई तक होता है। अडो की सख्या दो या तीन होती है। कबूतर के अडे सफेद और चमकीले होते हैं। मुर्गी के अडो की तरह कबूतर के अडे भी खाने मे प्रयुक्त होते हैं।

प्रजातियाँ

कबूतर ससार के सभी भागो मे पाया जाता है। भारत के प्राय सभी शहरो और गाँवो मे यह बखूबी दिखाई देता है। बडी-बडी इमारतो, मदिर, मस्जिद और गिरजाघरो मे कबूतर हजारो की सख्या में मिलते हैं। कभी-कभी तो ये कुओ के भीतर या दीवार के छिद्रो मे भी अडे देते पाये गये हैं। कबूतरो की अनेक प्रजातियाँ मिलती हैं। कबूतर का वैज्ञानिक नाम कोलम्बा लिविया (Columba livia) है। भारत मे कोलम्बा लिविया की दो उपजातियाँ पायी जाती है। कोलम्बा लिविया नेगलेक्टा (Columba livia neglecta) और कोलम्बा लिविया इण्टर-मीडिया (Columba livia intermedia)। इण्टरमीडिया प्रजाति के कबूतर अपेक्षाकृत छोटे और ज्यादा गहरे रग के होते हैं, जबकि नेगलेक्टा प्रजाति के कबूतर आकार मे बडे तथा ज्यादा पीले रग के होते हैं।

पहाड के छिद्रो मे निवास करने वाले कबूतर को 'रॉक पीगन' (Rock Pigeon) कहते हैं। बोलचाल की भाषा मे इसे 'खोदा कबूतर' कहते हैं। यह जगली कबूतर है जो फिलस्तीन और इजराइल मे बहुतायत से पाया जाता है। पहाड के खोहो मे ऐसे हजारो कबूतर एक साथ निवास करते देखे जा सकते हैं। भारत के अतिरिक्त पाकिस्तान, अफगानिस्तान, रूस, अमेरिका तथा यूरोपीय देशो मे भी कबूतर काफी सख्या में पाये जाते हैं। कबूतर के शौकीन व्यक्ति लकडी का दरबा बनाकर मनपसद प्रजाति के कबूतर पालते हैं। कबूतर का मास बहुत लजीज और पौष्टिक होता है। पालतू कबूतर की विभिन्न प्रजातियाँ

हैं—गिरहबाज, शीराजी, बगदादी, लक्का, लोटन, मुक्खी आदि। गिरहबाज किस्म का कबूतर गिरह मारता हुआ आकाश मे उड़ता है। इसी प्रकार लोटन जाति का कबूतर हाथ से छोडने पर जमीन पर लोटने लगता है। शीराजी शीराज और बगदादी बगदाद का कबूतर है। कहते हैं लक्का कबूतर का मास लकवा की बीमारी में लाभप्रद होता है। मुक्खी का बदन सफेद और सिर काला होता है। मुक्खी, शीराजी, बगदादी, लक्का आदि किस्मो के कबूतर देखने मे काफी सुदर होते हैं।

कबूतरनामा

प्राचीन काल मे कबूतर पालने का प्रचलन ईरान, ईराक, मिस्र आदि देशो मे था। वैसे भारत में कबूतर पालने का सबसे अधिक शौक मुगल बादशाहो के शासनकाल मे था। एक मुसलमान कवि ने तो कबूतरो की प्रशस्ति मे 'कबूतरनामा' नामक पुस्तक ही लिख दी थी। अभी भी दिल्ली, लखनऊ तथा कई अन्य शहरो मे कबूतर पालने की प्रथा प्रचलित है। प्राचीन काल मे प्रशिक्षित कबूतर संदेशवाहक का काम करते थे। कहते हैं बादशाह अकबर ने बीस हजार पत्रवाहक कबूतर पाल रखे थे। प्राचीन काल मे डाक सेवा आज जसी नही थी। केवल प्रशिक्षित कबूतर ही पत्रो को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुचाने का काम करते थे। जनश्रुति है कि मिस्र की महारानी क्लियोपेट्रा ने कबूतर द्वारा अपना प्रेम पत्र रोम मे मार्क एन्टोनी के पास भेजा था। युद्धकाल में इन पत्रवाहक कबूतरो का महत्व और भी बढ जाता था। ये पत्रवाहक कबूतर गुप्त सदेशो को लेकर गतव्य तक सकुशल पहुँच जाते थे।

कबूतर शाति का प्रतीक है। हमारे देश के प्रथम प्रधानमत्री पडित जवाहरलाल नेहरू को कबूतरों से बहुत प्यार था। आज भी विशिष्ट अवसरो पर सैकडो कबूतर आकाश मे एक साथ छोडे जाते हैं। यह हमे शातिपूर्ण जीवन और सुखद दाम्पत्य व्यतीत करने का संदेश देते हैं।

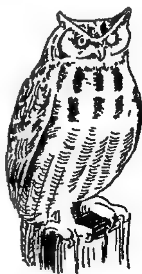
बुद्धिमान पक्षी उल्लू

परिचय

उल्लू का नाम लेते ही अनायास हंसी आने लगती है। कोई व्यक्ति मूर्खता करे, तो उसे उल्लू की उपाधि देना आम बात है। गोया बुद्धि-हीनता और मूर्खता का प्रतीक है उल्लू। लेकिन यह भी सच है कि अनेक प्रकार की किंवदंतियों से जुड़ा यह पक्षी धन-सम्पत्ति और ऐश्वर्य की देवी लक्ष्मी का वाहन माना जाता है।

साहित्य मे उल्लू

भारतीय वाङ्मय मे उल्लू की खूब चर्चा मिलती है। संस्कृत मे उल्लू को 'दिवाभीत' कहते हैं। कालिदास ने अपनी कालजयी कृति 'कुमारसम्भव' मे लिखा है—'लीन दिवाभीत मिवाधकारम्'। अर्थात् हिमालय की गुफाओ मे दिन मे भी अंधकार रहता है, मानो रोशनी से भयभीत होकर अंधेरा भी उल्लू की भांति कदराओ मे छिप गया है। महाकवि रहीम ने भी उल्लू के प्रति न्याय नही किया है—



"शीत हरत तम हरत नित भुवन भरत नहिं चूक
'रहिमन' तेहि रवि को कहा जो घटि लखे उलूक।"

साहित्य मे भी उल्लू जैसे तेज और चतुर पक्षी के प्रति न्याय नहीं हुआ है। वास्तव मे उल्लू निरा मूर्ख और बुद्धिहीन पक्षी नही है। उल्लू का व्यवहार अन्य पक्षियो से काफी भिन्न होता है। उल्लू को किसी पेड़ पर एकदम शात और स्थिर बैठे देखा जा सकता है। अक्सर दो उल्लू एक साथ काफी देर तक बठे रहने के बावजूद आपस मे कोई बात न करते।

दरअसल उल्लू का स्वभाव ही नही, शारीरिक बनावट भी अन्य पक्षियो से भिन्न होती है। अधिकाश पक्षी जहा दिन मे भोजन की तलाश करते है, वहां उल्लू एक निशाचर पक्षी है तथा रात मे वह अपने आहार की तलाश मे निकलता है।

कहते हैं प्राचीन यूनान मे उल्लू को बुद्धिमान पक्षी का दर्जा प्राप्त था। यूरोपीय देशो मे भी उल्लू बौद्धिकता का प्रतीक माना जाता है। भारत मे यह पक्षी लक्ष्मी का वाहन होने पर भी, आम जनता इससे नफरत करती है। घर पर उल्लू का बैठना अशुभ माना जाता है। दरअसल उल्लू की चीख कर्कश और डरावनी होती है। शायद इस कारण से लोग इससे दूर रहना पसद करते है। भारत के भिन्न भिन्न क्षेत्रो मे इसे अलग-अलग नामो से जाना जाता है जसे—गुजरात मे 'घुवड' तो उत्तर भारत में 'घुग्घू' कहते हैं।

वैज्ञानिक विश्लेषण

वैज्ञानिक दृष्टि से उल्लू एक तेज और बुद्धिमान पक्षी है। देखा जाय तो यह निरीह पक्षी घृणा या व्यग का पात्र नही वरन् प्रशसा का पात्र है। पक्षियो में अगर किसी पक्षी को शालीन व्यक्तित्व प्राप्त हुआ है, तो वह है उल्लू। इसके आचरण, हाव भाव और मुद्राओ से निस्सदेह बडप्पन टपकता है। शात भाव से पेड की डाली पर बठा उल्लू स्थितप्रज्ञ मनीषी जैसा लगता है।

पुराने खडहरो और अधेरी गुफाओ या जगलो में रहने वाला उल्लू एक रात्रिचर (Nocturnal) शिकारी पक्षी है। इसका स्वभाव एव शक्ल सूरत अन्य पक्षियो से बिल्कुल भिन्न होती है। जैसे इसकी आँखें

दूसरे पक्षियों की तरह बगल में न होकर मनुष्य की तरह सामने होती हैं। उल्लू की आँखें बड़ी-बड़ी और गोल-मटोल होती है। यह अपनी गर्दन को सहज ही पीछे घुमा सकता है जबकि अन्य पक्षी ऐसा करने में असमर्थ होते हैं। इसके पर बहुत मुलायम होते हैं। यही कारण है जब उल्लू रात में उड़ता है तो तनिक भी आवाज नहीं होती। और जब तक यह अपने शिकार को दबोच न ले, तब तक दूसरे जीव को आभास तक नहीं होता। उल्लू के कान भी अन्य पक्षियों से भिन्न होते हैं। इसके बड़े और खुले कान धीमी आवाज को भी आसानी से सुन लेते हैं। उल्लू का सिर बिल्ली की तरह गोल होता है। पक्षी वैज्ञानिकों ने अत्याधुनिक विकसित तकनीक—'इन्फ्रारेड टलीस्कोपी' (Infrared Telescopy) द्वारा उल्लुओं के स्वभाव और व्यवहार का अध्ययन किया है। वैज्ञानिकों के अनुसार उल्लू एक सतर्क और सजग पक्षी है। यह अपने शिकार को पकड़ने के लिए कई अनोखी विधियाँ प्रयोग में लाता है। अतः यह कहना तर्कसंगत नहीं लगता कि उल्लू एक मूर्ख पक्षी है। वैसे भारत के प्रसिद्ध पक्षी विशेषज्ञ डॉ० सालिम अली इसे सबसे अधिक बुद्धिमान पक्षी नहीं मानते। उनके मतानुसार कौआ सबसे बुद्धिमान पक्षी है।

प्रजातियाँ

समूचे विश्व में उल्लुओं की तकरीबन 140 प्रजातियाँ (Species) पायी जाती हैं। भारत में इसकी 40-45 प्रजातियाँ देखने को मिलती हैं। इनमें तीन-चार प्रजातियों के उल्लू सर्वाधिक संख्या में देखे जाते हैं। उल्लुओं की एक भारतीय प्रजाति (Indian Species) है घुग्घू (Indian Great Horned Owl) इसका जंतुवैज्ञानिक नाम (Zoological name) है ब्यूबो बेंगालेनसिस' (Bubo bengalensis)। इसके शरीर पर भूरे-पीले धब्बे तथा गहरी धारियाँ होती है। यह दिन भर पहाड़ों, चट्टानों, पेड़ों की घनी पत्तियों के बीच स्थिर बैठा रहता है। भारत में बड़ी जाति के उल्लुओं में घुग्घू सबसे प्रसिद्ध है। यह उत्तर तथा मध्य भारत में विशेष रूप से पाया जाता है।

उल्लू के नेत्र अंधकार में देखने में सक्षम होते हैं। उल्लू की चोंच छोटी किन्तु मजबूत और चीर-फाड़ (Piercing and Tearing type) के अनुकूल होती है। उल्लू का प्रिय आहार है चूहा, गिलहरी, छोटे

पक्षी, खरगोश के बच्चे इत्यादि। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि उल्लू अपने शिकार को नोचकर नहीं खाता, वरन् सीधे निगल जाता है। एक व्यवहार शास्त्री ने उल्लुओं के व्यवहार के अध्ययन के दौरान पाया कि एक उल्लू 20 मिनट में 16 चूहों, 3 टिड्डियों तथा एक बड़ी नस्ल के चूहे तथा गिलहरी का भक्षण आसानी से कर गया। उल्लू के पैर रेप्टोरियल (Raptorial type) किस्म के होते हैं। मुड़ हुए पैरों में शक्तिशाली नाखर लगे होते हैं। उल्लू के पाँव पक्षिसाद (Perching type) के अनुकूल होते हैं।

उल्लू की एक अन्य प्रजाति है 'हू-हू' (Forest Eagle Owl)। इसका वैज्ञानिक नाम 'Huhua nepalensis' है। हू-हू पहाड़ों पर मिलने वाला शिकारी उल्लू है जिसे खुले स्थान ज्यादा पसंद हैं। पंजाब, बंगाल तथा दक्षिण भारत में उल्लू की एक अन्य प्रजाति मिलती है। इसे बब्बू (Dusky Horned Owl या Bubo coro mandus) कहते हैं। यह खुले स्थानों जैसे बस्ती के आस पास रहता है। यह दिसम्बर से माघ तक सहवास करता है। मैदानों का परिचित उल्लू है चितला खूसट (Spotted Owl)। यह हिमालय की ऊँची पहाड़ियों से कन्याकुमारी तक पाया जाता है। यह बर्मा और थाइलैण्ड में भी पाया जाता है। अलग अलग प्रजाति के उल्लू अलग अलग महीनों में सहवास करते हैं।

किसानों का मित्र

उल्लू, चूहों तथा गिलहरियों को खाकर किसानों का उपकार करता है। शिकारी प्रवृत्ति के कारण यह चूहे तथा विभिन्न प्रकार के हानिकारक कीटों का प्रचुर मात्रा में भक्षण करता है। इस प्रकार खेतों में लगी फसल की सुरक्षा करने वाला यह पक्षी किसानों का बहुत अच्छा मित्र है। यह पर्यावरण का संतुलन बनाये रखने में भी हमारी मदद करता है। उल्लू की एक प्रजाति है 'करैल' जिसे 'बार्न आउल' (Barn Owl) भी कहते हैं। यह अन्न भंडार की सुरक्षा करता है और वहाँ मौजूद चूहे आदि को उदरस्थ कर लेता है। कई देशों में तो इसे विशेष रूप से अन्न भंडार गृहों की सुरक्षा के लिए पाला जाता है। शायद यही कारण है, उल्लू को भारत में लक्ष्मी का वाहन माना गया है। भारत जैसे कृषि-प्रधान देश में अनाज के रूप में ही लक्ष्मीजी का शुभागमन होता रहा है। उल्लू की श्रवण शक्ति, तीक्ष्ण आँखें तथा

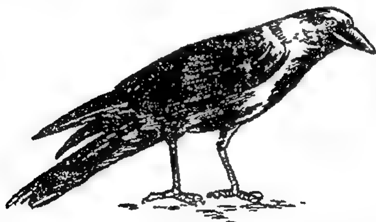
अंधेरी रात मे देखने की क्षमता के कारण ही सभवत लक्ष्मीजी ने इसे अपना वाहन चुना है। उल्लू एक तेज और बुद्धिमान शिकारी पक्षी है। ई० एच० रिचाडस् ने तो हमें उल्लू के समान होने की सलाह दी है—

"A wise old owl sat on an oak
The more he sat the less he spoke
The less he spoke the more he heard,
Why arn t we like that wise old bird ?"

जन-जीवन के साथी कौए

परिचय

कौए की 'कांव-कांव' जैसी कर्ण-कटु आवाज से भला कौन अपरिचित होगा ? यह सदियों से मानव जीवन से जुड़ा रहा है। कौआ या काग भारत में अतिसामान्य रूप में पाया जाने वाला पक्षी है। इसका काला शरीर और काले पंख शायद ही किसी को राम आते हों। पक्षियों में यह सबसे चोर और उचक्का होता है। घर-आंगन से भोजन या पक्षियों के घोंसलों से अंडे और नन्हे बच्चे चुराने में यह निपुण होता है। दुकान हो या खेत खलिहान, मौका मिलते ही यह अनाज या रोटी



का टुकड़ा चुरा लेता है। बच्चों के हाथ से रोटी या मिठाई लेकर उड़ जाना कौए के लिए साधारण सी बात है। कौओं की चोर-प्रवृत्ति जग-जाहिर है। पके फलों में आम इसका प्रिय फल है।

गांव-घरों में ऐसी मान्यता आज भी प्रचलित है कि घर की मुंडेर

पर कौए के कांव-कांव करने से घर मे किसी अतिथि का आगमन होता है। किसी कवि की उक्ति है—

"काक द्वार मे आवथ जाय।
कहथि 'डाक' जे पाहुन लाय॥"

अर्थात् काग द्वार पर आना-जाना शुरू कर दे, तो समझ लीजिए कोई अतिथि आ रहा है। भक्त-शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास ने तो काक भुशुण्डि के मुंह से रामचरित मानस की कथा कहला कर कौए को अमर बना दिया है। दूसरे शब्दो मे काकभुशुण्डि जैसे महाज्ञानी को जन्म देने का श्रेय काग जाति को ही प्राप्त है।

निवास एव प्रजातियां

कौआ ससार के सभी भागो मे पाया जाता है। इसे काग, कौआ, वाचस जसे अनेक नामो से जानते हैं। इसकी अनेक प्रजातियां पायी जाती हैं, मसलन डोम कौआ (Raven Corvus Carax) काला कौआ (Jungle Crow Corvus macrorhynchos) देशी कौआ (Indian House Crow Corvus splendens), पहाडी कौआ (Corvus monedula) इत्यादि।

डोम कौए का कद सामान्य कौए से बडा और रग घुर काला होता है। नर व मादा दोनो का रग एक जैसा होता है। पजाब, राजस्थान तथा पश्चिमोत्तर प्रदेशो मे यह अधिक सख्या मे पाया जाता है। डोम कौआ सवभक्षी पक्षी है। यह सब कुछ खाता है।

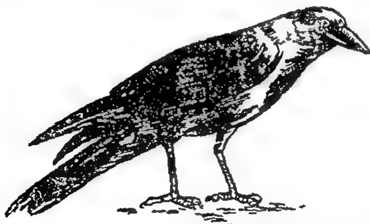
काला कौआ हिमालय की बर्फीली चोटियो को छोडकर सारे देश में पाया जाता है। यह समूह मे रहने वाला पक्षी है। उडते हुए इसके कबूतर की तरह गिरहबाजी करने से कबूतर का भ्रम होने लगता है।

देशी कौआ गांव-घरो मे बहुत अधिक सख्या मे दिखाई पडता है। वसे अब इनकी सख्या दिनोदिन घटती जा रही है। पूर्व मे सूय के निकलते ही इनकी कांव-कांव आरभ हो जाती है। दिन भर ये यत्र-तत्र शैतानी करते फिरते हैं, फिर शाम होते ही झुड मे उडते हुए अपने घोसलो मे रात्रिविश्राम हेतु पहुँच जाते हैं। देशी कौआ जितना चालाक और धूत होता है उतना ही ढीठ भी होता है। अच्छे अच्छे खाद्य पदार्थों के साथ साथ यह सडी-गली और गदी वस्तुओ को भी उदरस्थ कर जाता है।

जन-जीवन के साथी कौए

परिचय

कौए की 'कांव कांव' जैसी कर्ण-कटु आवाज से भला कौन अपरिचित होगा ? यह सदियो से मानव जीवन से जुडा रहा है। कौआ या काग भारत मे अतिसामान्य रूप मे पाया जाने वाला पक्षी है। इसका काला शरीर और काले पख शायद ही किसी को रास आते हो। पक्षिया मे यह सबसे चोर और उचक्का होता है। घर-आंगन से भोजन या पक्षियो के घोसलो से अडे और नन्हे बच्चे चुराने मे यह निपुण होता है। दुकान हो या खेत-खलिहान, मौका मिलते ही यह अनाज या रोटी



का टुकडा चुरा लेता है। बच्चो के हाथ से रोटी या मिठाई लेकर उड जाना कौए के लिए साधारण-सी बात है। कौओ की चोर-प्रवृत्ति जग-जाहिर है। पके फलो मे आम इसका प्रिय फल है।

गांव-घरो मे ऐसी मान्यता आज भी प्रचलित है कि घर की मडेर

पर कौए के काँव-काँव करने से घर मे किसी अतिथि का आगमन होता है। किसी कवि की उक्ति है—

"काक द्वार मे आवय जाय।
कहयि 'डाक' जे पाहन लाय॥"

अर्थात् काग द्वार पर आना-जाना शुरू कर दे, तो समझ लीजिए कोई अतिथि आ रहा है। भक्त-शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास ने तो काक भुशुण्डि के मुँह से रामचरित मानस की कथा कहला कर कौए को अमर बना दिया है। दूसरे शब्दो मे काकभुशुण्डि जैसे महाज्ञानी को जन्म देने का श्रेय काग जाति को ही प्राप्त है।

निवास एव प्रजातियाँ

कौआ ससार के सभी भागो मे पाया जाता है। इसे काग, कौआ, वाचस जैसे अनेक नामो से जानते हैं। इसकी अनेक प्रजातियाँ पायी जाती हैं, मसलन डोम कौआ (Raven Corvus Carax) काला कौआ (Jungle Crow Corvus macrorhynchos) देशी कौआ (Indian House Crow Corvus splendens), पहाडी कौआ (Corvus monedula) इत्यादि।

डोम कौए का कद सामान्य कौए से बडा और रग घुर काला होता है। नर व मादा दोनो का रग एक जैसा होता है। पजाब, राजस्थान तथा पश्चिमोत्तर प्रदेशो मे यह अधिक सख्या मे पाया जाता है। डोम कौआ सवभक्षी पक्षी है। यह सब कुछ खाता है।

काला कौआ हिमालय की बर्फीली चोटियो को छोडकर सारे देश मे पाया जाता है। यह समूह मे रहने वाला पक्षी है। उडते हुए इसके कबूतर की तरह गिरहबाजी करने से कबूतर का भ्रम होने लगता है।

देशी कौआ गाँव-घरो मे बहुत अधिक सख्या मे दिखाई पडता है। वैसे अब इनकी सख्या दिनोदिन घटती जा रही है। पूर्व मे सूर्य के निकलते ही इनकी काँव-काँव आरभ हो जाती है। दिन भर ये यत्र-तत्र शैतानी करते फिरते हैं, फिर शाम होते ही झुड मे उडते हुए अपने घोसलो मे रात्रिविश्राम हेतु पहुँच जाते हैं। देशी कौआ जितना चालाक और धूर्त होता है उतना ही ढीठ भी होता है। अच्छे-अच्छे खाद्य पदार्थों के साथ-साथ यह सडी गली और गदी वस्तुओ को भी उदरस्थ कर जाता है।

पहाडी कौआ, जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट है पहाडी क्षेत्रो मे पाया जाता है। कश्मीर घाटी मे यह बहुतायत मे मिलता है। स्थान परिवतन से विभिन्न कौओ के रग-रूप मे भिन्नता पायी जाती है। अर्थात् देशी कौए और जगली या पहाडी कौए मे अन्तर होता है। सबके रग-रूप, स्वभाव तथा शारीरिक बनावट मे थोडी-बहुत भिन्नता अवश्य होती है। काग और कौए मे भी बहुत अन्तर होता है। काग गाँव-घरो मे यदा-कदा ही दिखायी देते हैं जबकि कौए सवत्र दिखायी पडते हैं। इसी प्रकार कौआ समूह मे रहने वाला पक्षी है, तो काग को अकेला रहना ही पसद है। काग की सख्या कौए से कम होती है।

पक्षी-एकता की मिसाल

पक्षी-एकता का सबसे सुदर उदाहरण पेश करने वाले पक्षी हैं, कौए। दूसरे किसी पक्षी समुदाय मे ऐसी एकता नही दिखायी पडती। एक कौआ अगर किसी कारणवश मर जाए तो सैकडो कौए इकट्ठा होकर काव-कांव करने लगते हैं। गोया मृत्यु के कारणो पर विचार-विमश कर रहे हो। इसी प्रकार कोई कौआ गलत काम करता है, तो कौओ की सभा मे सवसम्मति मे निणय लिया जाता है और दोषी कौए को समुचित दड दिया जाता है। कौआ चालाक और चतुर तो है किन्तु कोयल से ज्यादा नही। क्योकि कौए जब आहार की तलाश मे बाहर निकल जाते हैं, तो कोयल चुपके से कौए के घोसले से उसके अडे गिराकर अपने अडे रखकर उड जाती है। किन्तु कोयल को अगर कौआ देख ले तो फिर कोयल की खैर नही। कौआ चोच मार-मारकर कोयल को घायल कर देता है। ऐसे मे कोयल की चतुराई काम नही आती और उसे अपने प्राणो से हाथ धोना पडता है।

उपयोगी पक्षी

वैसे काग या कौआ पालने की हमारे यहा कोई प्रथा नही है। किन्तु इन पक्षियो की भी उपयोगिता है। फसल को नष्ट करने वाले कीडे-मकोडो को खाकर ये किसानो की सेवा करते हैं। इतना ही नही, पर्यावरण सतुलन बनाये रखने मे भी इन कीटभक्षी पक्षियो की अहम भूमिका होती है। और तो और श्राद्धक्रम मे इन निरीह पक्षियो को ढूंढा जाता है। कहते हैं, इनके खाये गये श्राद्ध के अन्न से पितरो को

सद्‌गति प्राप्त होती है।

किसी कवि ने सही लिखा है—

"जन-जीवन के साथी कौए !
शुक, पिक, हारिल, चातक के सम
दूर नही हमसे रहते तुम
करते कठिन, कठोर परिश्रम
मधुपायी, न विलासी कौए !
जन-जीवन के साथी कौए !"

पपीहे पी-कहाँ ?

परिचय

पपीहा भारत का एक प्रसिद्ध पक्षी है। 'पी कहा, पी-कहा' जैसी इसकी मधुर आवाज अपने आप मे अलग है। अग्रेजी मे इसे ब्रेन फीवर बर्ड' (Brain Fever Bird) भी कहते हैं, क्योकि इसकी आवाज 'ब्रेन फीवर' शब्द से बहुत मिलती-जुलती होती है। भारतीय साहित्य मे इस पक्षी का प्रचुर वर्णन मिलता है। जब यह बोलने लगता है, तो घटो बोलता रहता है और धीरे-धीरे इसकी आवाज तेज और ऊची होती जाती है। कभी-कभी तो इसकी बोली इसान के लिए सरदद बन जाती है। शायद इसी कारण से इसे 'ब्रेन फीवर बर्ड' कहते हैं। रात्रि मे अगर निवास-स्थल के आसपास पपीहा बोलने लगे, तो सहज ही नीद उचट जाती है।

पक्षी विशेषज्ञो के अनुसार पपीहे की रटन वृथा नही होती, वरन् यह उसका प्रणय-सगीत होता है। इसमे कोई सदेह नही कि पपीहे की आवाज बहुत तीखी और तेज होती है। वसत ऋतु मे यह पक्षी खूब बोलता है। वैसे प्रजनन-काल (Breeding Season) के बाद भी यह बोलता रहता है। इसके प्रजनन का समय अप्रैल से जून तक होता है। मैदानो मे मिलने वाले इस पक्षी की शक्ल-सूरत कुछ-कुछ बाज से मिलती-जुलती होती है। वैसे पपीहे और शिकरा के रग-रूप मे भी समानता होती है।

आवास

पपीहा सपूर्ण भारत मे पाया जाता है। दूसरे शब्दो मे यह हिमालय से लेकर दक्षिणी भारत के क्षेत्रो तक आसानी से देखा जा

सकता है। वैसे इसका आवास मुख्यत बगाल से राजस्थान तक है। भारत के अतिरिक्त यह श्रीलका मे भी पाया जाता है। इसका वैज्ञानिक नाम है Hierococcyx varius'। पपीहे मे नर और मादा पक्षी समान रग-रूप के होते है। पपीहा घने जगलो मे या पेडो पर ज्यादा दिखायी पडता है। यह कीटभक्षी (Insectivorous) पक्षी है।

कोयल की तरह पपीहे भी अन्य पक्षियो के घोसलो मे अडे देते हैं। दरअसल यह चरखी जाति के पक्षियो के घोसले मे अपने अडे देते हैं। दोनो के अडे समान आकृति और रग रूप के होने के कारण चरखी पपीहे के अडो को अपने अडे समझकर सेती हैं और इस प्रकार पपीहा अडा सेने के झझट से मुक्त हो जाता है। चरखी बडे शौक से पपीहे के अडो को सेती है, जो बड होकर स्वय उड जाते हैं।

पपीहे का साहित्य मे स्थान

पपीहे की चर्चा से साहित्य भरा पडा है। विरह की अग्नि मे जलती नायिकाओ ने पपीहे को दूत बनाकर अपने प्रियतम तक सदेश भेजने का प्रयास किया है—

"जा रे पपीहा पिउ के देश
कहियो पिउ से मेरा सदेश।"

देखा जाए तो अनगिनत लोक गीतो मे पपीहे की चर्चा हुई है। पपीहे की 'पी-कहाँ' वाली रटन विरह-विदग्धा प्रेमिकाओ के लिए बहुत दुखदायी होती है। गोस्वामी तुलसीदास ने भी साहित्य सृजन मे पपीहे का सहारा लिया है—

"ऊँची जाति पपीहरा पियत न नीचो नीर,
कै जाँचै घनस्याम सो, कै दुख सहै सरीर।"

कहते हैं स्वाती नक्षत्र मे होने वाली वर्षा की बूदो से ही पपीहे की प्यास बुझती है। यही कारण है, स्वाती घन की आशा मे पपीहा आकाश की ओर टकटकी लगाए देखता रहता है। सदियो से पी-कहाँ, पी-कहा' की रट लगाने वाला यह पक्षी अपने आप मे अद्‌भुत है। न मालूम कब इसकी अपने उस प्रियतम से भेंट होगी, जिसे नित्यप्रति यह जोर-जोर से पुकारता है!

बुनकर पक्षी बया

परिचय

अगर आप पक्षियो मे दिलचस्पी रखते हैं, तो बया नामक पक्षी से अवश्य परिचित होगे। निस्संदेह बया के घोसले बुनाई कला का आकर्षक नमूना प्रस्तुत करते हैं। बया अपने घोसले को जुलाहे की तरह ताना-बाना देकर बुनती है। यही कारण है इसे अंग्रेजी मे 'जुलाहा पक्षी' (Weaver Bird Ploceus phillippinus) कहते हैं। तुम्बी के आकार के इसके घोसले खूबसूरत ही नही, मजबूत भी होते हैं। ताड, बबूल आदि के वृक्षो से लटकते हुए इनके घोसले बहुत अच्छे लगते हैं। दजनो घोसले एक वृक्ष से लटकते दिखाई पडते हैं। सचमुच इस पक्षी की नीड-निर्माण कला को देखकर इसान आश्चर्यचकित रह जाता है।

स्वभाव एव रग रूप

देखने मे बया पक्षी गौरैया की तरह होता है। इसकी लबाई तकरीबन 6-7 इच होती है। इसे बया के अतिरिक्त बावी, चिदोरा, वाय आदि नामो से भी जानते हैं। बया मैदान की चिडिया है जो प्राय समूहो मे पायी जाती है। इसका रग पीला-भूरा होता है। प्रजनन काल मे नर की चोच गहरी भूरी हो जाती है। परो के रग मे भी परिवतन हो जाता है।

भारत के अतिरिक्त यह श्रीलका, बर्मा तथा अन्य देशो मे भी पायी जाती है। भारत मे उत्तर पश्चिमी क्षेत्रो से लेकर हिमालय के पूर्वी क्षेत्रो तथा बगाल तक बया के घोसले देखने को मिलते हैं। भारत मे बया की अनेक किस्मे मिलती हैं। यद्यपि इनके रगो मे भिन्नता होती है, किन्तु आदतें लगभग एक जैसी होती हैं। बया स्वभावत शोर मचाने वाली

चिड़िया है। आपस मे लड़ाई-झगड़ा करना इसकी दैनिक हरक्तो मे शामिल है। बया बेर तथा बबूल के पेडो तथा कँटीली झाडियो वाले स्थानो मे विशेष रूप से रहना पसद करती है। यह अनेक प्रकार के बीजो तथा कीडो-मकोडो को उदरस्थ कर फसलो का नुकसान होने से बचाती है। पानी वाले स्थानो मे रहना इसे खूब पसद है।

कुशल कारीगर

बया मैना या गौरैया जैसा छोटा किन्तु एक कुशल कारीगर पक्षी है। अपने घोसले के लिए यह पक्षियो मे मशहूर है। इसकी कारीगरी विस्मय मे डालने वाली होती है। सत कबीरदास की पक्ति—'झीनी-



झीनी बीनी चदरिया' को बया अक्षरश चरितार्थ करती है। मतलब यह कि किसी कुशल जुलाहे की भाँति बया अपने घोसले को बुन बुनकर तैयार करती है। इसके घोसले की सुदरता का अदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि शौकीन लोग अपने बैठकखाने को बया के घोसलो से सजाते हैं। प्रसिद्ध कवि अमीर खुसरो ने बया के घोसले की प्रशस्ति मे लिखा है—

"अचरज बगला एक बनाया
ऊपर नीव तले पर छाया।"

नीड निर्माण

बरसात के आरभ होते ही बया अपने नीड का निर्माण आरभ कर

देती है। एक ही वृक्ष पर अनेक घोसले बनाये जाते हैं। सर्वप्रथम नर घोसला बनाना शुरू करता है। जब नर थोडा-बहुत ढाचा बना लेता है, तो मादा बया आकर घोसले का बारीकी से निरीक्षण करती है। मादा को घोसला पसद आ गया, तो वह नर बया के प्रणय प्रस्ताव को स्वीकार कर लेती है और नीड निर्माण मे जुट जाती है। सरपत, ताड, केला, बाँस आदि के पत्तो को चीरकर महीन रेशे तैयार किए जाते है। उन रेशो से बुन बुनकर मजबूत घोसला बनाया जाता है, जो तेज आँधी तूफान मे भी जमीन पर नही गिरता। कभी-कभी तो बया जुगनुओ को पकडकर घोसले की दीवार से चिपका देती है जिससे रात्रि मे घोसला प्रकाशित रहे। नर-मादा के सयुक्त प्रयास और परिश्रम से जब घोसला तैयार हो जाता है, तो बया पक्षी सहवास करते हैं। इसके बाद मादा बया अडे देती है, जिनकी सख्या दो से चार तक होती है।

पक्षियो मे बया मोर की तरह बहुपत्नीक (Polygamous) होता है। दूसरे शब्दो मे बया मे बहुपत्नीत्व प्रवृत्ति पायी जाती है। इसके विपरीत कही-कही मादा बया मे भी बहुपतित्व प्रवृत्ति देखने को मिलती है। बया मे नरो की सख्या कम और मादाओ की सख्या अधिक होती है जिससे बहुपत्नीत्व प्रवृति स्वाभाविक ही है। प्रजनन काल मे एक नर अनेक मादाओ के साथ सहवास करता है। एक घोसला बनाने के बाद नर बया दूसरे घोसले के निर्माण मे जुट जाता है। इस प्रकार एक नर एक ही ऋतु मे अनेक घोसले बना डालता है। भारत के महान पक्षी विशेषज्ञ डॉ० सलीम अली ने बया पक्षियो के स्वभाव और उनकी आदतो का विशिष्ट अध्ययन किया है। बया पक्षियो के सहवास का समय अप्रैल से नवम्बर तक होता है। वैसे अधिकाश घोसले वर्षाकाल मे ही बनाये जाते हैं।

बया छोटी किन्तु बुद्धिमान पक्षी है। पालकर सिखाने से यह अनेक किस्म के खेल सीख लेती है। जैसे पानी भरना, नाचना, बदूक चलाना इत्यादि। बया के घोसले का प्रवेशद्वार नीचे की तरफ होता है। इसकी बनावट ऐसी होती है कि दूसरे पक्षी इसके घोसले मे आसानी से प्रवेश नही कर सकते। इसमे अनेक प्रकोष्ठ (Chambers) होते हैं। तेज हवा मे भी इसके घोसले मस्ती मे झूलते रहते हैं। बया की कुशल कारीगरी पर भला कौन मुग्ध नही होगा ?

वन-उपवन की आली बुलबुल

परिचय

निस्सदेह पक्षी जगत मे बुलबुल एक ऐसा सौभाग्यशाली पक्षी है, जिसकी प्रशसा मे कवियो और शायरो ने अपनी कलम तोड डाली है। बुलबुल अपनी मीठी आवाज के लिए विख्यात है। मीठी आवाज वाली बुलबुल का मूल निवास फारस है। इसे 'बुलबुल हजारदास्ता' (Nightingale) भी कहते हैं। यह गाने मे निपुण होती है। शायर 'अकबर' के शब्दो मे—

"हजूमे-बुलबुल हुआ चमन मे
किया जो गुल ने जमाल पदा।
नही कमी कद्रदा की 'अकबर'
करे तो कोई कमाल पैदा।"

फारस (वर्तमान ईरान) की हजारदास्ता बुलबुलें भारत के जम्मू-कश्मीर क्षेत्र मे पायी जाती हैं। कहते हैं, नूरजहाँ ने फारस से हजारदास्ता बुलबुलो को मँगवाकर कश्मीर मे मुक्त करवाया था। भारत मे मिलने वाली हजारदास्ता बुलबुलें उ ही की सतानें हैं।

स्वभाव एव रग-रूप

बुलबुल हमारे देश मे लगभग सवत्र ही पायी जाती है। भौगोलिक कारणो से अलग-अलग क्षत्रो मे पायी जाने वाली बुलबुलो मे थोडा-बहुत अन्तर होता है। कुछ पक्षी विशषज्ञो ने बुलबुलो की बीस से अधिक प्रजातियो का वणन किया है। भारत मे बुलबुलो की छह मुख्य उपजातियाँ हैं। मैदानो मे यह सर्वत्र पाया जाता है। बुलबुल यहाँ का बारहमासी पक्षी ह, जो उत्तर प्रदेश, बिहार, बगाल, आसाम तथा

पहाड़ी क्षेत्रों में लगभग चार-पाँच हजार फुट तक की ऊँचाई पर आसानी से दिखाई पड़ता है। दक्षिण भारत में भी इसकी कई प्रजातियाँ पायी जाती हैं।

प्रजातियाँ

बुलबुल की कुछ प्रजातियाँ हैं—

गुलदुम बुलबुल (Red vented Bulbul) कागड़ा बुलबुल (White cheeked Bulbul) सिपाही बुलबुल (Red whis kered Bulbul), पीली बुलबुल (Yellow browed Bulbul) इत्यादि।

बुलबुल की सभी प्रजातियों में गुलदुम बुलबुल सबसे सामान्य है। इसका शरीर भूरा होता है। सिर पर काली चोटी एवं दुम का सिरा सफेद होता है। दुम के पास का रंग चटक लाल होने के कारण इसे दूर



से ही पहचाना जा सकता है। इसकी लम्बाई लगभग 8 इंच होती है। गले के पास का हिस्सा खूब काला होता है। भारत में लगभग सर्वत्र इस जाति की बुलबुलें मिलती हैं।

आकार में बुलबुल गौरया से कुछ बड़ी होती है। यह छोटी किन्तु फुर्तीली और सुंदर चिड़िया है, जिसकी मनमोहक अदाएँ सहज ही हमारा ध्यान आकर्षित कर लेती हैं। बाग-बगीचे तथा वन-उपवनों में

यह बहुतायत मे मिलती है। इसका मुख्य आहार छोटे-छोटे कीडे तथा फल-फूल है। बुलबुल शोर मचाने वाली और झगडालू पक्षी है। जहाँ भी दो-चार बुलबुलें रहेंगी, आपस मे खूब लडेंगी। कभी-कभी तो लडते-लडते इनकी मृत्यु भी हो जाती है। कहते हैं, प्राचीन काल मे बुलबुलो को लडाने की परिपाटी थी जिसके लिए राजा-महाराजा और रईस लोग बडे शौक से बुलबुल पालते थे। अवध के नवाबो को बुलबुल लडाने का खूब शौक था। विजेता बुलबुल की खूब कद्र होती थी और पराजित बुलबुल को उडा दिया जाता था। अब यह प्रथा लगभग समाप्त हो चुकी है।

फूलो से इसे बहुत प्यार है। फुलवारी मे एक फूल से उडकर दूसरे फूल पर बैठना और चहकना ही इसकी दिनचर्या है। भारत की बुलबुलें फारस की बुलबुलो की तरह मीठी आवाज नही निकालती, लेकिन उनका चहकना भी बहुत प्रिय लगता है। पालतू बुलबुलें बहुत शोख और चचल होती हैं। बुलबुलो मे सामाजिक प्रवृत्ति बहुत विकसित होती है। अपनी उम्र की चिडिया के साथ खूब फुदकती और खेलती-कूदती है। बाग और बुलबुल का तो चोली-दामन का साथ है। बुलबुल ही तो बागो की शोभा मे चार-चाँद लगाती हैं। उनके बिना बाग सूना-सूना लगता है।

गुलदुम बुलबुल फरवरी से अगस्त तक घोसला बनाती और अडा देती है। इसका घोसला कटोरानुमा तथा घास-फूस और टहनियो का बना होता है। इसके अडे ललछौंह होते हैं जिन पर रग-बिरगी चित्तियाँ होती हैं।

बुलबुल अति सुदर और गाने वाली चिडिया न सही, लेकिन चचल और शोख अवश्य होती है। वन-उपवन का यह आशिक है, आली है। किसी कवि ने सही कहा है—

"वन उपवन की आली बुलबुल,
चचल, शोख, मतवाली बुलबुल।
टहनी-टहनी उडती फिरती,
सचमुच तू दिलवाली बुलबुल।"

सर्वश्रेष्ठ गायक कोयल

परिचय

निस्सदेह भारत का सर्वश्रेष्ठ गायक पक्षी कोयल है। वसत ऋतु आते ही कोयल का कूकना आरभ हो जाता है। आम्रकुज मे जब कोयल पचम सुर मे गाती है, तो ऐसा प्रतीत होता है मानो कानो मे अमृत वर्षा हो रही हो। किसी सस्कृत के कवि ने ठीक ही लिखा है—

'प्राप्तेषु वसन्तसमये काक काक, पिक पिक'

अर्थात वसत के आगमन से ही कौए और कोयल का भेद स्पष्ट होता है। क्योकि रग रूप मे तो कौए और कोयल एक जैसे हैं, कि तु बेचारे कौए कोयल की तरह नही गा सकते। कोयल जब पेड की डाली पर बैठकर कूकने लगती है, तो देर तक कूकती रहती है। अगर छोटे-छोटे बच्चे कोयल की कूक का जवाब देते हैं, यानी कू-कू करते हैं तो कोयल और दुगने वेग से कूकने लगती है। मानो बच्चो को कूकने की कला सिखा रही हो। सच तो यह ह कि कोयल की जादूभरी मीठी आवाज का हर इसान दीवाना ह। कोयल की मधुर वाणी प्रेरक है अनुकरणीय है—

"कागा काको धन हरै कोयल काको देत
मीठे वचन सुनाय के जग बस मे कर लेत।"

वैसे भारत में गाने वाले और भी पक्षी हैं जसे—पपीहा, श्यामा, दोयल आदि। किन्तु स्वर-साम्राज्ञी कोकिला का जवाब नही है। सचमुच कोयल की मीठी तान के बिना वसत का आगमन बिलकुल बेमानी होता। महान प्रकृति प्रेमी कवि वडसवर्थ ने सच ही कहा है—

'O, Cuckoo ! Shall I call thee Bird
Or, but a Wandering Voice ?

[—हे कोयल, तुम्हे मैं पक्षी कहूँ या कि भ्रमणशील एक ध्वनि मात्र ?]

आवास एव रग-रूप

कोयल (Koel Eudynamis scolopaceus) भारत का एक प्रसिद्ध पक्षी है, जो समस्त भारत वर्ष (उत्तर-पश्चिम सीमान्त क्षेत्रों को छोडकर) मे पाया जाता ह। इसे पहाडो की ऊचाई रास नही आती बल्कि आम्र कुज, बाग-बगीचे और पेडो के झुरमुट ज्यादा पसद है। यह छोटे-छोटे फलो के साथ कीडे मकोडे भी खा लेता है। कोयल ऐसे पक्षियो में ह, जो पेड की ऊँची डालियो पर बैठी रहती है और जमीन



पर कम ही उतरती है। पेड के झुरमुटो में छिपी वही से राग आलापती रहती है। मधुर स्वर में नर कोयल ही गाता है, मादा कोयल नही। नर कोयल 'कुहू-कुहू' की कणप्रिय ध्वनि निकालता है, जबकि मादा कोयल 'किक-किक' करती हुई एक पेड से उडकर दूसरे पेड पर यदा-कदा बठ जाती है। नर कायल का कूकना उसका प्रणय-सगीत हाता है, जो मादा को रिझाकर सहवास के लिए प्ररित करता है। वैसे वसत के पश्चात भी कोयल का कूकना जारी रहता है, किन्तु शीतकाल में इसका मधुर गायन ब द हो जाता है।

नर और मादा कायल म अन्तर होता है। नर का रग गहरा चमकीला काला हाता ह, जबकि मादा का रंग भूरा होता ह। मैदानो में मिलने वाले कोयल पहाडो कोयल से भिन्न होते है।

परभृता कोयल

संस्कृत में कोयल को 'परभृता' कहते हैं क्योंकि इसका पालन-पोषण दूसरे पक्षी द्वारा होता है। दरअसल होता यह है कि प्रजनन के पश्चात् मादा कोयल चालाकी से कौए के घोसले में अपने अंडे रख आती है। इतना ही नहीं, कौए के अंडों को अपनी चोंच से उठाकर अन्यत्र ले जाकर फेंक देती है। कोयल की यह धूर्तता अजीब-सी होती है। कौए की आंखों में धूल झोंकना आसान नहीं है। किंतु कोयल यह सब बखूबी करती है। अगर कौआ अपने घोंसले में कोयल को देख लेता है, तो कोयल को चोंच मार-मारकर घायल कर देता है। कभी-कभी तो कोयल को अपनी जान तक गंवानी पड़ती है। फिर भी पुश्त-दर-पुश्त कोयल कौए को मूर्ख बनाता रहता है और भविष्य में भी जारी रहेगा।

कौआ कोयल के अंडों को अपने अंडे समझकर सेता है, प्यार करता है। अंडे से निकलने वाला शिशु-कोयल भी कम धूर्त नहीं होता। वह कौए के बच्चों को घोंसले से धकेल देता है, जिससे उनकी मृत्यु हो जाती है। गोया चालाकी और धूर्तता जैसे गुण कोयल में जन्म से ही मौजूद रहते हैं और कौआ हाथ मलता रह जाता है। शायद यही कारण है कि कोयल और कौए की दुश्मनी पुरानी है। भविष्य में भी इनका झगड़ा समाप्त नहीं होगा क्योंकि कोयल के संस्कारगत गुण ही ऐसे हैं।

साहित्य में कोयल

भारतीय साहित्य में कोयल की भूरि-भूरि प्रशंसा हुई है। किसी शायर ने कहा है—

"है आमों पर कोयल जहाँ नग्माजन
वही है, वही है हमारा वतन।"

एक कवि ने तो खूब लिखा है—

"रात भर तूने बजाई बैठ उर की बीन,
कोकिले, किसके विरह में तड़पती-लवलीन ?

अरुणिमा विस्तार,
हँस उठी नीलोत्पला तज,
सेज-स्वप्नागार,
जीव माया मे फँसा ज्यो,
प्रणय के किस पाश मे, पर तू रही गतिहीन ?
कोकिले किसके विरह मे तडपती-लवलीन ?"

सचमुच कोयल फारस की बुलबुल की तरह दिल खोलकर गाती है और सुनने वाले के कानो मे अमृत घोल देती है। देखने मे भले ही यह मोर की तरह आकर्षक नही है, लेकिन इसकी मधुर आवाज का समस्त पक्षी जगत मे सानी नही है।

पर्वालशीन पक्षी धनेश

परिचय

धनेश भारतवर्ष का एक महत्वपूर्ण पक्षी है। 'वाघ्रीणस' तथा अंग्रेजी में 'हार्नबिल' (Hornbill कहते हैं। दरअसल धनेश की
शायद इसीलिए इस पक्षी को अंग्रेजी में 'हार्नबिल' कहते में भी इसके महत्व का उल्लेख मिलता है। इसका तेल होता है। गठिया, वातरोग, हड्डियों के दर्द में दायक होता है। धनेश को धनसू, धूसर, धनचिरी आदि जानते हैं।

रंग-रूप और आवास

धनेश भारत में स्थायी रूप से निवास करने वाला पक्षी के कुछ हिस्सों को छोड़कर यह सम्पूर्ण भारतवर्ष हिमालय की 2000 फुट की ऊंचाई तक ये नजर आते हैं। धनेश की तकरीबन सोलह किस्में मिलती हैं। धनेश की इंच होती है। नर-मादा एक जैसे होते हैं। धनेश की है, जिसका निचला हिस्सा सफेद होता है।

धनेश पेड़ों पर रहने वाला पक्षी है। धनेश की मे रहती हैं तो कुछ बागों और बस्तियों में। धनेश की प्रजाति है वनराय या महा
के निचले भागों में पायी जाती है।
काफी बड़ा होता है।
vorous) भी है और
तेज और कर्कश होती है।

विचित्र घोंसले

धनेश का घोसला विचित्र किस्म का होता है। सच तो यह है,कि धनेश घोसला नही बनाते वरन् पुराने और विशाल वृक्ष के कोटरो मे निवास करते हैं। अक्सर धनेश पीपल और सेमल वृक्ष के कोटरो को निवास के लिए चुनते हैं। इस पक्षी के सहवास का समय अप्रैल से जून तक है। धनेश अपने विचित्र घोसले के लिए पक्षी जगत मे मशहूर है। धनेश के सबध मे एक रोचक बात यह है कि मादा धनेश अडा देने के लिए पेड के कोटर मे चली जाती है और तब तक अदर रहती है जब तक कि इसके बच्चे स्वय चलने-फिरने लायक नही हो जाते।

पर्दानशीन मादा

प्रसव-काल आते ही मादा धनेश वृक्ष के कोटर मे चली जाती है और कोटर को धीरे-धीरे एक दीवार से बद कर देती है। केवल एक छिद्र छोड देती है, जिससे वह अपनी चोच बाहर निकाल सके। प्रसव-काल मे मादा नर द्वारा लाये गये भोजन पर ही निर्भर रहती है। नर धनेश बहुत वफादार होता है। वह रोज अपनी चोच मे कीडे-मकोडे, गिरगट, छिपकली आदि ला लाकर मादा पक्षी को बडे प्यार से खिलाता है। नर पक्षी का अपनी मादा के प्रति सच्चा स्नेह और प्रेम स्वय मे एक आदर्श है। मादा पक्षी की बीट लसलसी होती है, जिसके प्रयोग से वह कोटर का मुँह बद करती है। सूख जाने पर यह मिटटी की तरह मजबूत और सख्त हो जाती है। छोटा नागपुर के जगलो मे धनेश पक्षी विशेष रूप से पाये जाते हैं वहाँ कुछ पक्षी विशेषज्ञो ने धनेश की जीवन शैली तथा उसकी आदतो का विशेष रूप से अध्ययन किया है। इस प्रकार प्रसव-काल मे मादा धनेश पर्दानशीन रानियो की तरह नर की निगाहो से ओझल रहती है। नर अपनी चोच मे दबाकर भोजन लाता है। मादा को नर के आने का आभास मिलता है, तो छेद से चोच बाहर निकालकर वह भोजन ग्रहण कर लेती है।

कई दिनो तक वृक्ष-कोटर मे रहने के बावजूद धनेश का घोसला गदा नही रहता। पक्षी प्रेमियो ने समय से पूर्व धनेश के घोसले की दीवार तोडकर इस बात की परीक्षा ली है। होता यह है कि मादा धनेश घोसले की तमाम गदगी को अपनी चोच द्वारा सुराख से बाहर फेक देती है। हफ्तो घोंसले मे बैठे रहने के कारण मादा धनेश दुबली पतली और

कुरूप सी अवश्य हो जाती है। इसी क्रम मे उसके नये पर निकल आते हैं। पक्षी विशेषज्ञो के अनुसार जब मादा धनेश प्रसव की जिम्मेदारियो से मुक्त हो जाती है, तो वृक्ष-कोटर की दीवार को चोच से तोडकर बाहर निकल आती है। वह काफी स्वस्थ, सुदर और साफ-सुथरी दिखती है। बाहर निकलने पर नर धनेश से मिलकर मादा को बहुत प्रसन्नता होती है और वह नर के साथ घूमने-फिरने निकल जाती है। प्रारम्भ मे मादा को उडने मे कुछ परेशानी होती है, क्योंकि उसका अभ्यास छूट गया रहता है।

कहते हैं तकरीबन डेढ-दो महीनों तक मादा पर्दानशीन बनी रहती है। उन दिनो न केवल अडे सेती है, वरन् उसका अपना भी कायाकल्प हो जाता है। नर और मादा धनेश का दाम्पत्य प्रेम प्रशसनीय है। जगलो के कटने से सिलेटी रग के इन बडे पक्षियो की सख्या दिन प्रति दिन घटती जा रही है। इन पक्षियो का सरक्षण आवश्यक है।

सारस की अस जोडियां

परिचय

सारस भारतवर्ष का एक परिचित और प्रसिद्ध पक्षी है। यह हमारे देश की सबसे बडी चिडिया है। अत इसे पहचानना सरल है। इसके अनेक उपनाम हैं जैसे सरहस, भारतीय सारस (Indian Saras Crane Antigon antigon), नीलाग, रक्तमस्तक, मणितारक आदि। सारस की जोडियाँ जगत प्रसिद्ध हैं। कहते हैं, सारस एक बार ही अपना जीवन-साथी चुनता है। अर्थात नर और मादा पक्षी का साथ जीवन भर के लिए होता है। एक सारस के मर जाने पर दूसरा पक्षी भी अन्न-जल त्याग कर मर जाता है। अगर एक पक्षी को गोली मार दी जाये तो उसका जीवनसाथी भी मरने के लिए तैयार हो जाता है। रहीम कवि ने सारस की व्यथा-कथा का बहुत सुदर और सजीव वर्णन किया है—

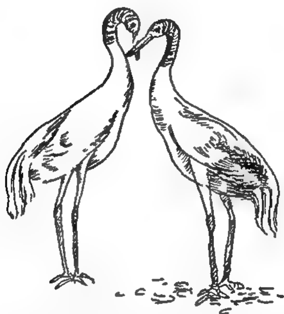
"प्रीतम तुम कचलोहिया, हम गजबेलि
सारस की अस जोडियाँ, फिरौं अकेलि।"

रग-रूप और आवास

सारस एक बडे कद का पक्षी है। अपनी लम्बी टाँगो, सिलेटी परो और लाल सर के कारण यह दूर से ही पहचाना जा सकता है। यह एक निडर पक्षी है, जिसकी आवाज बहुत ककश होती है। इसके उडने की शैली वायुयान जैसी होती है। सारस पहले थोडी दूर तक दौडता है फिर उडान भरता है किन्तु आकाश मे यह ज्यादा ऊँचाई पर नही उडता। सारस प्राय जोडे मे ही मैदानो, खेतो या झील-तालाबो के आस-पास विचरण करता नजर आता है।

सारस हमारे यहाँ का बारहमासी पक्षी है जिसकी आवाज कर्कश

तो होती है, किन्तु धर्मानुरागी शब्द 'सत्तराम' से बहुत मिलती-जुलती है। धार्मिक विचारो वाले व्यक्ति इसे मारते नही हैं। इमे सरलता से पालतू बनाया जा सकता है। पालतू बनाने पर यह अन्य पालतू जानवरो के साथ इधर-उधर घूमता और पहरेदार का काम करता है। किसी अजनबी के आने पर उसे चोच से प्रहार कर भगाने का प्रयास करता है।



सारस एक सवभक्षी (Omnivorous) पक्षी है। यह मछली, घोघा, मेढक तथा ऐसे ही छोटे छोटे जलीय जीवो को तालाब के किनारो पर घूम-घूमकर पकडता और बडे चाव से खाता है। कहते हैं सारस को वर्षा कम या ज्यादा होने का पूर्वानुमान होता है। सारस के घोसले घास फूस और लकडी के बने होते हैं। प्रजनन से पूव नर और मादा का प्रणय-क्रीडा अद्भुत होती है। सारस दम्पत्ति गर्दन हिला-हिलाकर नाचते और प्रेम प्रदर्शित करते हैं। मादा सारस एक बार मे दो या तीन अडे देती है। सारस के अडे गुलाबी रग के होते हैं जिन पर बैंगनी चित्तियाँ होती हैं।

सारस एक सुदर और उपयोगी पक्षी है। पालतू सारस धीरे धीरे

ढीठ वन जाता है और कुत्ते की तरह हरदम पीछे पीछे चलता है। चीन के लोग इसे बहुत प्यार करते हैं क्योंकि वहाँ इसे सुख और समृद्धि का कारण माना जाता है। सारस की उम्र काफी लम्बी होती है। स्वस्थ सारस लगभग सत्तर-अस्सी साल जिन्दा रहता है। सारस की भी अनेक प्रजातियाँ होती हैं।

प्रवासी सारस

हमारे देश मे हर साल हजारा-हजार सारस साइबेरिया से उडकर आते हैं। इन्हे साइबेरियन सारस (Siberian Cranes) कहते हैं, जो जाडे के दिनो मे भारत के भरतपुर पक्षी शरण-स्थल (Bharatpur Bird Sanctuary), दिल्ली के चिडियाघरो तथा अन्य स्थानो मे झुड के झुड दिखाई पडते हैं। झील और झरने वाले स्थान इन्हे विशेष प्रिय हैं। यह अतिथि की तरह हमारे देश मे आते हैं और जाडे के 3 4 महीने व्यतीत कर पुन अपने वतन को लौट जाते हैं। पक्षी वैज्ञानिक इस अनोखी घटना को 'प्रव्रजन' या 'प्रवास' कहते है। पक्षी-प्रवास पक्षियो के जीवन की साहसिक यात्रा होती है। साइबेरिया के सारस प्रति वर्ष हजारो मील की लम्बी दूरी तय कर भारतवर्ष आते हैं और हमारा स्वस्थ मनोरजन करते हैं। किन्तु चिन्ता का विषय यह है कि दिन प्रतिदिन इनकी सख्या घटती जा रही है। इसका मुख्य कारण है अनुकूल परि-स्थितियो का अभाव होना। ये मेहमान पक्षी, जिनका दाम्पत्य-प्रेम आदर्श के साथ साथ अनुकरणीय भी है, प्रति वर्ष निश्चित रूप मे हमारे यहाँ आते रहे इसके लिए सरकार को हरसभव प्रयास करना चाहिए।

पक्षिराज गरुड

परिचय

गरुड या ईगल' (Eagle) भारत का एक प्रसिद्ध शिकारी पक्षी है। भारत के प्राचीन धार्मिक ग्रंथो में गरुड का विस्तृत वर्णन मिलता है। कहते हैं गरुड भगवान विष्णु का प्रिय वाहन है। यह सुपण हिरण्य, मुरियारी तथा पक्षिराज जैसे उपनामो से भी जाना जाता है। यह अपनी भयानकता एव बहादुरी के कारण पक्षियो मे राजा माना जाता है। गरुड प्राय सभी देशो मे पाया जाता है। गरुड की सबसे भयकर जाति है सुनहला उकाब (Golden Eagle Aquila chrysaetus)।

हमारे देश मे अति प्राचीन काल से गरुड की पूजा होती आ रही है। दक्षिण भारत का पक्षी तीथस्थल प्रसिद्ध है। पहाडियो पर बसा यह तीथस्थल नित्य ही हजारो श्रद्धालुओ से भरा रहता है। यहा प्रतिदिन एक निश्चित समय पर एक जोडा गरुड उतरकर आता है और भक्तो द्वारा लाये गये प्रसाद को खाकर उड जाता है। कहते हैं वर्षो से यह क्रम चला आ रहा है।

रग-रूप और आवास

गरुड सुनहले रग का बडा और शिकारी पक्षी है। इनकी टाँगे परो से ढकी होती है। नर और मादा पक्षी के रग रूप मे कोई विशेष अन्तर नही होता। गरुड की अनेक किस्मो मे प्रसिद्ध हैं—श्वेतनेत्र, कलँगीदार, मत्स्य मारक, सर्पवत इत्यादि। सुनहला उकाब (Golden Eagle) एक बहादुर शिकारी पक्षी है। इसकी चोंच और इसके पजे अत्यत तीक्ष्ण होते है। इसका सर चपटा और डरावना होता है। यह अपनी तेज गति, शिकारी प्रवृत्ति और बहादुरी के लिए प्रसिद्ध है।

गरुड एशिया और यूरोप के लगभग सभी देशो मे पाया जाता है। यह घने जगलो की अपेक्षा खुले स्थानो को ज्यादा पसद करता है। अपने शिकार की तलाश मे यह गिद्धो की तरह आकाश मे मडराता रहता है। यह अवसर पहाड की चोटी या ऊँचे पेड की चोटी पर बैठकर अपनी तेज आँखो से शिकार की टोह लेता रहता है। भेड या बकरी के छोटे बच्चो को खुले मैदान मे देखता रहता है और धीरे-धीरे उतरकर चील की तरह झपट्टा मारकर उसे उठा लेता है। थोडी दूर कही एकान्त स्थान मे बैठकर अपनी मादा के साथ मजे मे शिकार का गोश्त खाता है। खाने की इसकी अपनी विशिष्ट शैली होती है। खाने के समय यह अपने शिकार को डैनो से ढँक लेता है। गरुड का मुख्य भोजन है साँप, मेढक, मेमना, छिपकली, चूहे, गिलहरी तथा ऐसे ही अन्य छोटे छोटे जीव-जन्तु। इसके घोसले जानवरो की हड्डियो से भरे होते हैं।



साहसी पक्षी

गरुड एक साहसी पक्षी होता है। मौका मिलने पर यह भेड बकरियो और बदर के बच्चो को भी उठाकर उड जाता है। भारत के दुर्दिन की चर्चा करते हुए बहुत पहले एक एग्लो इण्डियन कवि ने लिखा था—

And Eagle pinion is chained at last
And grovelling in the dust liest thou !"

अर्थात् गरुड के पख अन्त मे जजीरो से बँध गये और तुम भूमि पर हीन अवस्था मे पडे हुए हो ! इन पक्तियो मे कवि डिरोजिओ ने गरुड को शक्तिशाली भारतवर्ष का उपमान बनाकर इसकी बहादुरी की भूरि-भूरि प्रशसा की है।

इस पक्षी का प्रजनन काल नवम्बर से जून तक होता है। यह अपना घोसला किसी बड़े वृक्ष की फुनगी पर बनाता है। मादा एक बार मे एक से तीन अडे देती है। नर पक्षी शिकार किये गये जतु को लाता है और मादा के साथ मिलकर खाता है। हमारे यहाँ गरुड हिमालय की ऊँचाइयो पर ही देखने को मिलता है। नीचे स्थानो मे इस पक्षी को देखना लगभग दुर्लभ ही होता है। ठडे देशो का यह प्रसिद्ध पक्षी है। भगवान विष्णु का वाहन होकर भी गरुड वैष्णव नही है, वरन् भयकर मासाहारी पक्षी है।

शाह सुलेमान हुदहुद

परिचय

संसार के प्रसिद्ध पक्षियों मे हुदहुद का भी स्थान है। यह देखने में दूल्हा जैसा सुदर लगता है। नर और मादा हुदहुद के सर पर मौजूद कलँगी इसकी शोभा मे चार चांद लगा देती है। हुदहुद के शरीर की प्राकृतिक पोशाक भी काफी भडकीली होती है। वैसे सिर पर लगी कलँगी इसके शरीर का सबसे सुदर भाग होता है।

प्राचीन काल की पुस्तको मे भी हुदहुद का वणन मिलता है। प्राचीन मिस्र और क्रीट के भित्ति-चित्रो मे भी हुदहुद का सुदर और प्रशसनीय चित्रण है। हुदहुद से सबधित अनेक पौराणिक कथाओ का उल्लेख मिलता है। मुसलमान देश इसे सुलेमान का प्रिय पक्षी मानते हैं। कहते हैं, बादशाह सुलेमान एक बार किसी आवश्यक कायवश आकाश माग से कही जा रहे थे। तेज धूप से सुलेमान परेशान थे। ऐसे समय मे हुदहुद नामक पक्षियो के समूह ने सुलेमान के सर पर साया कर दिया और पक्षियो के पखो की छाया मे सुलेमान ने अपनी यात्रा पूरी की। बादशाह सुलेमान ने खुश होकर हुदहुदो के सिर पर सुदर कलँगी होने का वरदान दिया। कहते हैं, तभी से हुदहुदो के सर पर सुदर कलगी सुशोभित है। यही कारण है इन पक्षियो को 'शाह सुलेमान' या 'मुग सुलेमान' भी कहते हैं। दुबया, सुतार आदि इसके उपनाम हैं। हुदहुद की आवाज 'हुद हुद' शब्द से मिलती-जुलती होती है। शायद इसीलिए इसका नाम हुदहुद पड गया। पैगम्बर सुलेमान द्वारा सम्मानित यह पक्षी यहूदियो की नजर मे बहुत पवित्र समझा जाता है। यूनान, रोम आदि देशो के प्राचीन साहित्य मे इस पक्षी की खूब चर्चा मिलती है।

रग-रूप और आवास

खूबसूरत रगो वाला यह पक्षी यूरोप, एशिया और अफ्रीका मे पाया जाता है। इसकी अनेक प्रजातियाँ हैं, किन्तु भारत मे केवल तीन किस्म के हुदहुद पाये जाते हैं। इनके रग रूप में थोडा-बहुत अन्तर होता है। भारतीय हुदहुद विलायती हुदहुद से भिन्न होता है। भारतीय हुदहुद के शरीर पर सफेद धारियाँ होती हैं। इसकी आँखें छोटी और चोच लम्बी होती है।



हुदहुद (Hoopoe Upupa epops) घने जगलो की अपेक्षा खुले मैदानो मे रहना ज्यादा पसद करता है। खडहरो या खाली इमारतो अथवा दूब भरे मैदानो मे यह ज्यादा दिखायी पडता है। दूब मे अधिक समय तक रहने के कारण ही इसे 'दुबया' नाम मिला है। इसकी चोच नाखून काटने वाली नहरनी जैसी होती है अत बोलचाल की भाषा मे इसे 'हजामिन' चिडिया भी कहते हैं। इसकी लम्बी चोच जमीन मे छिपे कीडे-मकोडो को ढूढने के काम आती है।

खूबसूरत कलँगी

सामान्यत हुदहुद अपने सर की कलँगी समेटे रहता है। किन्तु जब कोई आवाज होती है, तो यह सचेत हो जाता है और खूबसूरत कलँगी के परो को फैला देता है। हुदहुद का प्रजनन काल फरवरी से जुलाई तक है। इसके घोसले घास फूस, पत्तियो के बने और साधारण किस्म के

होते हैं। अडा देने के समय मादा हुदहुद के शरीर से दुर्गन्ध निकलती है। इसके अडे हल्के नीले रग के होते हैं। अडा देने और सेने के क्रम मे मादा घोसले तक ही सीमित रहती है और नर पक्षी मादा के भोजन की व्यवस्था करता है। इसके घोसले से दुग घ आती है क्योंकि यह इसकी सफाई पर तनिक भी ध्यान नही देता है।

कहते हैं, मादा हुदहुद अपने अडो पर से तब तक नही हटती जब तक उनसे बच्चे बाहर नही निकल आते। देखने मे हुदहुद भले ही खूबसूरत है लेकिन शरीर या घोसले की सफाई से कोई मतलब नही रहता। एक कहावत है—'हुदहुद जैसा गदा'। अर्थात् हुदहुद अपनी सुदरता ही नही, ग दगी के लिए भी मशहूर है। एक लोकगीत मे हुदहुद का बहुत सुदर वणन मिलता है—

"हुदहुद का ब्याह रचा है
साहब बन दूल्हा बैठा है।"

घरेलू पक्षी गौरैया

परिचय

गौरया भारतवर्ष का एक चिर-परिचित पक्षी है। गाँव-घरों के बच्चे-बूढ़े सभी इस पक्षी से परिचित हैं। प्राय नित्य ही सुबह, शाम या दोपहर मे यह आवास के निकट मदाना मे या घास फूस की झोपडियो पर फुदकता हुआ नजर आता है। यह छोटी परंतु बहुत चचल चिड़िया है। ये घने जगलो मे रहना पसद नहीं करती। इसके विपरीत मानव आवास इसे बहुत पसद है, क्योकि वहां उसे प्रचुर मात्रा मे खाद्य-सामग्री मिलती है। शायद ही कोई ऐसा गांव हो, जहाँ गौरैये फुदकते नजर न आएँ। ये अपनी मन-मोहक अदाओ से सदैव ही हमे प्रसन्न करना चाहते हैं। इनका चीं-चीं-चू-चूँ करते हुए फुदकना बहुत अच्छा लगता है। पक्षी-समुदाय मे गौरैये ऐसे पक्षी हैं, जिन्हें मानव-समूह बहुत प्रिय है। गर्मी हो या सर्दी दोनो मौसम इसे समान रूप से प्रिय हैं। घरों और दरवाजो के ऊपर खाली जगह मे ये पक्षी बेफिक्र होकर अपना घोसला बनाते हैं।

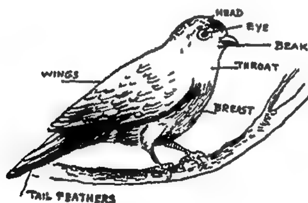
रग रूप और आवास

नर गौरैया सिलेटी रंग का होता है। गौरैया छह-सात इच लम्बा पक्षी है जो सदैव प्रसन्न मुद्रा मे चहकता रहता है। मादा भूरे या मटमैले रग की होती है। गौरैया खूब लडने-झगडने वाली चिड़िया है। जब देखो, चूँ-चूँ करती हुई लडती रहती है। गौरैया ससार के अधिकाश देशो मे पायी जाती है। इसकी अनेक प्रजातियाँ हैं। गौरैया को गृह कुलिंग तथा चटक जैसे उपनामो से भी जानते हैं। गौरैया घर-घर दिखती है, शायद इसीलिए इसे अग्रेजो मे 'हाउस स्पैरो' (House

Sparrow) भी कहते हैं। इसका जन्तु वैज्ञानिक नाम 'पैसर डोमेस्टिकस (Passer domesticus) है। भारत के अतिरिक्त यह उत्तरी अफ्रीका, आस्ट्रेलिया तथा एशिया के अधिकाश भागो मे आम तौर से पाया जाने वाला पक्षी है।

पहाडी गौरैया

गौरैया की एक प्रजाति पहाडी गौरैया (Cinnamon Sparrow) पहाडो पर पायी जाती है। इसकी पीठ पर काली धारियां होती है। यह हिमालय से लेकर चीन, जापान तथा फारमोसा तक पायी जाती है। हिमालय पर यह पहाडी गौरैया 4000 से 8000 फुट की ऊचाई पर पायी जाती है। यह जगल की प्यारी चिडिया है जो जगली फल और अनाज के दाने चुन-चुनकर खाती है। पहाडी गौरैया जाडे के दिनो मे तराई के स्थानो मे उतर आती है।



गौरैया पूरे वर्ष अडे देती है। एक बार मे पाँच-छह अडे दिये जाते हैं। मुख्य रूप से इसके प्रजनन का समय अप्रैल से जून तक है। इसके घोसले मानव आवास के निकट रोशनदान, छतो, दीवार की खोहो आदि मे विशष रूप से देखने को मिलते हैं। घोसले मे कोई खास कारीगरी नही होती है। अन्य पक्षियो की तरह इसे भी धूल मे स्नान करना खूब प्रिय है। इनके मासूम बच्चो को शिकारी पक्षियो से सदैव खतरा बना रहता है।

गौरैया की एक उपजाति है 'तूती'। यह गौरैया जैसी छोटी किन्तु प्रसिद्ध है। उर्दू और फारसी साहित्य में तूती नामक पक्षी का प्रचुर वर्णन मिलता है। एक मशहूर कहावत है—'नक्कार खाने में तूती की आवाज'।

घर-आंगन का परिचित पक्षी होते हुए भी गौरैया का साहित्य में कोई विशेष स्थान नहीं है। कहते हैं रोम और यूनान में इसको पालने की भी प्रथा थी। किन्तु अपने देश में तो बिना पाले भी यह दिन भर घर-आंगन में मौजूद रहता है। सच तो यह है कि हमारे जीवन में गौरैया अच्छी तरह घुल मिल गये हैं।

मत्स्य-प्रेमी बगुला भगत

परिचय

बगुला हमारे देश का जाना-पहचाना पक्षी है। आप किसी नदी या तालाब के पास चुपचाप खडे हो जाएं, तो बगुले का चमत्कार अवश्य देख सकते हैं। बगुला एक टाँग पर चुपचाप खडा रहता है। उसकी यह स्थिति ध्यानमग्न तपस्वियो जैसी होती है। बगुला अपनी नजर जल मे तैरती मछलियो पर टिकाए रहता है। फिर अनुकूल अवसर मिलने पर तुरन्त अपनी चोच से मछली पकडकर निगल जाता है। बगुले की यह चालाकी किसी भी जलाशय, नदी या जल भरे गड्ढे के समीप देखी जा सकती है।

रंग-रूप और आवास

बगुले के परो की सफेदी प्रसिद्ध है। इसके पर दूध जैसे सफेद होते हैं। इसकी अनेक प्रजातियाँ पायी जाती हैं। जैसे—नरी बगुला (Purple Heron Ardea purpurea) करछिया बगुला (Little Egret Egretta garzetta), मगल बगुला (Large Egret Eqretta alba), चमर बगुली (Paddy Bird Ardeola grayi) गाय बगुला (Cattle Egret Bubulcus ibis) इत्यादि।

'मगल बगुला' हमारे यहाँ का सबसे बडा सफेद बगुला है। इसके सर पर कलँगी का अभाव होता है। इसके विपरीत 'नरी बगुला' के सर पर कलँगी मौजूद रहती है। अर्थ यह है कि बगुले की विभिन्न प्रजातियो (Species) मे थोडी-बहुत भिन्नता अवश्य होती है। मगल बगुला मैदानी इलाको मे बहुतायत से मिलता है। यह नदी, झील या जलस्रोतो के किनारे चुपचाप खामोश खडा रहता है और मछली या मेढक पर

नजर पडते ही उसे तुरन्त निगल जाता है। मछली इसका ही नहीं, सभी किस्म के बगुलो का सबसे प्रिय आहार है। वैसे ये जल के अन्य कीडे-मकोडे, मेढक, घोघा आदि का भी भक्षण करते हैं।

बगुला ससार के सभी देशो मे पाया जाता है। भारत मे इसकी छह-सात प्रजातियाँ अधिक सख्या मे देखने को मिलती हैं। मगल बगुला की तरह गाय बगुला भी हमारे यहाँ का प्रसिद्ध बगुला है। यह जलाशयो के साथ-साथ खेतो, मैदानो और चारागाहो मे भी पाया जाता है। ये चारागाहो से छोटे-छोटे कीडे तथा अन्य जन्तुओ को खाकर अपना



पेट भरते हैं। प्राय सभी किस्म के बगुलो की टाँगें लम्बी, चोंच नुकीली और गदन लम्बी होती है। चमर बगुलो तो हमारे यहाँ का प्रसिद्ध बारहमासी पक्षी है जो हर मौसम मे नदी और तालाबो के आस-पास दिखायी पडता है। मगल बगुला सफेद बगुलो मे सबसे बडा तथा गाय बगुला सबसे छोटा होता है।

घोसला

बगुला समूह मे रहने वाला पक्षी है। एक बडे वृक्ष पर पचास-साठ बगुले एक साथ रात्रि विश्राम करते हैं। गाँवो मे एक कहावत प्रचलित है—'जिन पेडो पर बगुला बैठा वो पेड गये'। अर्थात् जिस वृक्ष पर

बगुले ने अपना आवास बना लिया, उसका सूखना निश्चित ही समझिये। इसका कारण यह है कि एक साथ अनेक पक्षियो के विश्राम करने से वृक्ष की डालियाँ सूखने लगती हैं।

मगल बगुला का प्रजनन काल जुलाई से अगस्त तक है। किसी बडे वृक्ष पर सूखी टहनियो मे ये अपना भद्दा-सा घोसला बनाते हैं। प्राय सभी पक्षी प्रजाति के बगुले अपना घोसला पेडो पर ही बनाते हैं। घोसले अत्यत साधारण ढग के होते हैं। मादा एक समय मे तीन-चार या पाँच-छह अडे देती है।

वर्षाकाल मे जब आसमान मेघाच्छन्न रहता है, श्वेत पखधारी बगुलो का आकाश मे झुड बनाकर उडना बहुत अच्छा लगता है। दिन मे भोले-भाले और शातिप्रिय दिखने वाले बगुले रात मे खूब लडते-झगडते हैं। सभवत इनका सघर्ष बैठने या विश्राम करने की जगह को लेकर होता है। वे एक-दूसरे पर चोच से प्रहार करते तथा ककश ध्वनि उत्पन्न करते देखे जाते हैं। साहित्य मे भी यत्र-तत्र बगुलो के स्वभाव का वर्णन मिलता है।

बको ध्यानम्

भारतीय मनीषियो ने विद्यार्थियो के हित मे बहुत ही महत्वपूर्ण बात कही है—'काग चेष्टा बको ध्यानम्' अर्थात् छात्रो को विद्या अर्जन हेतु कौए की तरह प्रयत्नशील तथा बगुले जैसा एकाग्रचित्त होकर सबक याद करना चाहिए।

सुदर्शन पक्षी नीलकठ

परिचय

नीलकठ भारतवष का प्रसिद्ध और परिचित पक्षी है। घरो के आस-पास, टेलीग्राफ के खम्भो पर इसे सहज ही देखा जा सकता है। गाँवो मे नीलकठ का दशन बहुत शुभ माना जाता है। किवदन्ती है कि समुद्र मथन से निकले विष को भगवान शकर ने अपने गले मे रख लिया था। अत उन्हे 'नीलकठ' कहते हैं। *किन्तु बिना विषपान किये ही यदि किसी पक्षी का नाम नीलकठ पड जाये, तो यह उस पक्षी का सौभाग्य ही कहा जायेगा। इन धार्मिक आस्थाओ के कारण यह पक्षी पूज्य बन गया है।* किसी कवि ने सही लिखा है—

"नीलकठ का दरसन होय,
मनवाछित फल पावय सोय।"

नीलकठ के दर्शन से मनवाछित फल मिले या न मिले, किन्तु इसके दर्शन से मन अवश्य आनदित होता है। क्योकि नीलकठ के पखो का आकषक रग सहज ही हमारा मन मोह लेता है। वैसे यह बहुरगी पक्षी है, लेकिन इसके पखो मे नीले रग की प्रधानता होती है।

रग-रूप और आवास

पक्षी-जगत मे नीलकठ एक मध्यम कद (लम्बाई 13-14 इच) की खूबसूरत चिडिया है। नर-मादा एक जैसे होते हैं। सर का रग निलछौंह हरा तथा डैने का रग सुदर नीला और हरा होता है। नीलकठ (Blue Jay Coriasis bengalensis) सारे भारतवष मे पाया जाता है। इसे दिवि, चाष, सब्जक, कटनास जैसे उपनामो से भी हम जानते हैं। यह कबूतर से थोडे छोट आकार का पक्षी है। इसकी चोच मोटी और काली

होती है।

पूरे विश्व मे इसकी अनेक प्रजातियाँ पायी जाती है। नीलकठ एक मैदानी पक्षी है, जो हिमालय पर 40000 फुट की ऊँचाई से ऊपर नही पाया जाता है।

नीलकठ का मुख्य आहार है—झीगुर, टिड्डे, बीटल, मकडा, कीट-पतग इत्यादि। कभी-कभी यह मेढक, चूहे और छिपकलियो को भी खा लेता है। नीलकठ को खुले स्थान बहुत प्रिय हैं। किसी पेड या बिजली के खम्भे पर यह मूर्तिवत बैठा रहता है और कीडे-मकोडे को देखकर विद्युत-गति से नीचे उतरकर अपनी चोच मे दबाकर उदरस्थ कर लेता है।

उपयोगी पक्षी

आर्थिक दृष्टिकोण से नीलकठ एक उपयोगी पक्षी है, क्योकि अनेक प्रकार के हानिकारक कीटो को खाकर यह किसानो को लाभ पहुँचाता है। यही नही प्राकृतिक सतुलन मे भी इन कीटभक्षी (Insectivorous) पक्षियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अगर कीटभक्षी पक्षी न हो, तो किसानो का बहुत नुकसान हो तथा फसलो का अधिकाश भाग हानिकारक कीटो द्वारा नष्ट कर दिया जाये।

भारत के अतिरिक्त श्रीलका, बर्मा, पाकिस्तान, नेपाल आदि देशो मे भी नीलकठ देखने को मिलता है। अपने सुदर और आकषक पखो के कारण नीलकठ शिकारियो की बन्दूक का निशाना बनता रहा है जिससे इसकी सख्या दिन प्रतिदिन कम होती जा रही है। कही-कही इसके सुदर पख उपहारस्वरूप भी प्रदान किये जाते है। अग्रेज अपने मित्रो को नीलकठ के सुदर पख उपहार मे प्रदान करते हैं। नीलकठ देखने मे जितना भी सुदर हो, इसका स्वभाव झगडालू होता है। ये आपस मे लडते झगडते और चोच से प्रहार करते देखे जा सकते हैं।

सौन्दर्य प्रदर्शन

नर नीलकठ अपनी मादा को रिझाने के लिए तरह-तरह के करिश्मे दिखाता है। कभी तो यह उडकर आकाश मे चला जाता है और कभी पखो को समेटकर निर्जीव सा गिरने लगता है और जमीन पर पहुँचने के पूर्व ही फुर से उड जाता है। अपने खूबसूरत पखो के प्रदर्शन से यह

सहज ही अपनी मादा को रिझा लेता है। फिर दोनो मिलकर घोसला बनाते हैं। नीलकठ अपना घोसला पेडो पर या दीवार के छिद्र मे बनाता है। इनके प्रजनन का समय मार्च से जुलाई तक है। इनके अडे गोल और चमकदार होते हैं।

विजयादशमी के दिन नीलकठ का दर्शन बहुत शुभ माना जाता है। शिवजी का प्रतीक माने जाने वाले इस पक्षी को सर्वत्र पूज्य समझते हैं। किसानो का यह मित्र हमारे लिए एक उपयोगी पक्षी है।

पक्षियो के वैज्ञानिक नाम

पक्षी	जंतु वैज्ञानिक नाम
कबूतर (Domestic Pigeon)	Columba livia
कोकिल (Common Hawk-Cuckoo)	Hierococeyx varius
काला तीतर (Black Partridge)	Francolinus francolinus
कठफोडवा (Wood Pecker)	Picus tigrinum
कौडिल्ली (Common Kingfisher)	Alcedo atthis
खजन (White Wagtail)	Matacilla alba
गेहवाला (Ruff and Reeve)	Philomachus pugnax
गरुड (Golden Eagle)	Aquila chrysaetus
गौरैया (House Sparrow)	Passer domesticus
गुलाबी तूती (Common Rose Finch)	Carpodacus erythrinus
घरेलू कौवा (Indian House Crow)	Corvus splendens
चातक (Pied Crested Cuckoo)	Clamator jacobinus
चकोर (Chukor)	Alectoris graca
जटायु (Lammergeier)	Gypaetus barbatus
जलमुर्गी (Moor Hen)	Gallinula chloropus
जगली कौवा (Jungle Crow)	Corvus macrorhynchos
तेलिया मुनिया (Spotted Munia)	Urolonacha punctulata
तोता (Parrot)	Psittacula krameri
दामा (Indian Robin)	Saxicoloides fulicata
दरजिन फुदकी (Tailor Bird)	Orthotomus sutorius
देशी मैना (Common Mynah)	Acridotheres tristis
धनेश (Grey Hornbill)	Tockus birostris

पक्षी	जतु वैज्ञानिक नाम
नीलकंठ (Blue Jay)	Coracias bengalensis
पीली बुलबुल (Yellow browed Bulbul)	Iole icteria
पीलक (Golden Oriole)	Oriolus oriolus
पहाडी मैना (Indian Grackle)	Gracula religiosa
पपीहा (Common Hawk-cuckoo)	Hierococcyx varius
पहाडी गिद्ध (Himalayan Griffon)	Gyps himalayensis
पडुक (Dove)	Streptopelia senegalensis
बटेर (Common Grey Quail)	Coturnix coturnix
बया (Weaver Bird)	Ploceus philippinus
बतासी (Indian Swift)	Micropus affinis
महोख (Crow pheasant)	Centropus sinensis
मोर (Pea fowl)	Pavo gristatus
टिटिहरी (Red Wattled Lapwing)	Lobivanellus indicus
राम गगरा (Indian Grey Tit)	Parus major
शिकरा (Shikra)	Astur badius
शाहबाज (Crested Hawk Eagle)	Spizaetus cirrhatus
श्यामा (Shama)	Kittacincla malabarica
शकरखोरा (Purple Sunbird)	Cinnyris asiaticus
सतबहनी चरखी (Jungle Babbler)	Turdoides somervillei
सिपाही बुलबुल (Red Whiskered Bulbul)	Otocompsa jacosa
सारस (Indian Crane)	Antigon antigon
सोहन चिडिया (Great Indian Bustard)	Choriotis nigriceps
सीखपर (Pintail)	Dafila acuta
हारिल (Common Green Pigen)	Crocopus phoenicopterus

□ □